This book appears to be an important and interesting one.

JAWAHARLAL NEHRU
29-8-1959

I congratulate Sri Kamal on the discovery of this marvellous document, "Sri Ramasamvada". Its conception of life and moral value is one, if I may, say so. I have always valued. I suggest its early publication.

Dr. M.R. JAYAKAR
5-12-1948

Had such a book been with the Hindus two thousand years before, India would never have been slave.

G.V. KETKAR
12-9-1949

One of the strangest books appearing lately on the literary horizon of contemporary India, is SHRI RAMA SAMVADA. This book is complete thesis on Hindu politics, economy & jurisprudence. This remarkable book is verily a masterpiece of coherent thinking, facile expression and originality of ideological convictions. A mind that could conceive all these ideas even 15 years back, must have been a rare genius in the present generation of political thinkers. Fore-seeing the present day problems of this country, the linguistic feuds, the rising tide of provincialism and juvenile aberrations-even 15 years back must have required an ideational consciousness of a very high order.

Prof. O.P. KAHOL
The Tribune - 04-12-1959

सुरुचि प्रकाशन
केशव कुंज झण्डेवाला, नई दिल्ली–110055
फोन : 011–23514672
ईमेल : suruchiprakashan@gmail.com
वेब साइट : www.suruchiprakashan.com

मूल्य : ₹ 110

ISBN : 978-93-81500-43-9

महर्षि वाल्मीकि कृत श्रीरामसंवाद

महर्षि वाल्मीकि कृत

श्रीरामसंवाद

SHRIRAM'S DISCOURSES

WRITTEN BY MAHARSHI VALMIKI

ओ३म्

श्रीराम संवाद

SRI RAMA SAMVADA

(Discourses of Shri Rama)

अनुवादक एवं सम्पादक

डॉ. देवव्रत आचार्य, D.N.Y.S.

प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र

विद्याभास्कर, एम.ए., बी.एड.

विद्यावाचस्पति, अमेरिकन मैडल ऑफ ऑनर,

सदस्य गोसेवा आयोग (हरियाणा)

एवं भारत ज्योति अवार्ड से सम्मानित

सुरुचि प्रकाशन

केशव कुञ्ज, झण्डेवाला

नई दिल्ली–110055

महर्षि वाल्मीकि कृत श्रीरामसंवाद
SHRIRAM'S DISCOURSES
WRITTEN BY MAHARSHI VALMIKI

प्रकाशक:
सुरुचि प्रकाशन
केशव कुंज, झण्डेवाला,
नई दिल्ली - 110055

दूरभाष - 011-23514672
E-mail : suruchiprakashan@gmail.com
Website: www.suruchiprakashan.com

प्रथम संस्करण : जनवरी, 2014

मूल्य : ₹110

मुद्रक : गोयल एन्टरप्राइजेज, दिल्ली-32
ISBN : 978-93-81500-43-9

विषयसूची (Contents)

दो शब्द

इस प्राचीन पुस्तक के रचयिता रामायण के सुप्रसिद्ध लेखक ऋषि वाल्मीकि को माना गया है क्योंकि प्रत्येक अध्याय की समाप्ति "वाल्मीकि द्वारा रचित" इस वाक्य से होती है।

ब्राह्मीलिपि में लिखी गई इस पुस्तक को देवनागरी लिपि में परिवर्तित कर अंग्रेजी अनुवाद सहित श्री देवेन्द्र कमल जी ने प्रकाशित कराया। उनके अथक परिश्रम से एक अद्भुत ग्रन्थ विलुप्त होने से बच गया। सम्प्रति यह ग्रन्थरत्न अब हिन्दी अनुवाद सहित तीनों भाषाओं में (संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी) आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है।

इस ग्रन्थ का मैं जैसे–जैसे अध्ययन करता गया वैसे–वैसे ब्रह्माण्ड–विज्ञान, प्राणिविज्ञान, भ्रूण–विज्ञान, शारीरिक शास्त्र, समाजशास्त्र और तत्त्वज्ञान सामने आते गये और हमें ऐसा लगा कि लेखक ने इस छोटे से ग्रन्थ में "गागर में सागर" भर दिया है। यह ग्रन्थ लाखों आर्यों का पथप्रदर्शन करेगा और कुरीतियों को दूर कर एक संगठित व सुन्दर समाज का निर्माण कर सकेगा। इस ग्रन्थ में सृष्टि की उत्पत्ति, सूर्य, चन्द्र, ग्रह जीवों का विकास, मानव के शरीर, मन व आत्मा आदि के बारे में बड़े ही वैज्ञानिक तरीके से जानकारी दी गई है। जलचर, नभचर व थलचरों के माध्यम से व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक जीवन के बारे में जानकारी देते हुए सामाजिक जीवन को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया है।

इस पुस्तक के कुछ मौलिक सिद्धान्त हैं यथा 'यह अच्छे भगवान् का अच्छा संसार है', 'सर्वमान्य शासित राज्य मानवजाति का उच्चतम आध्यात्मिक विकास है', एक शक्तिशाली–अनुशासित और सुसज्जित सेना ही शान्ति की गारन्टी हो सकती है। यह पुस्तक दुराग्रहयुक्त देशभक्ति और किसी भी प्रकार के क्षेत्रवाद के बिल्कुल विरुद्ध है। इसका कहना है कि हिंसक तलवार अच्छे नेतृत्व और अच्छे शासन का प्रतिनिधि है। यह बताता है कि जिस समय नेता राजनैतिक समुदाय के हितों के विरुद्ध हो जाए तो उसे पदच्युत कर दिया जाना चाहिए।

अनेक रोचक व ज्ञानवर्द्धक जानकारियों से युक्त यह ग्रन्थरत्न सबके द्वारा पठनीय व संग्रहणीय है।

डा. देवव्रत आचार्य

।। प्रथमोऽध्यायः ।।

प्रथम अध्याय

Chapter 1

मुख्यप्रश्न

आधारभूत प्रश्न

Fundamental Question

प्रथमाहे नु पंचमे मासे वर्षे चतुर्थके।
राज्याभिषेकाद्रामस्य चेक्ष्वामस्य महीपतेः।। १।।

आहूय राजसभायां वरिष्ठान् सज्जनान् प्रभुः।
उवाच श्रूयतां सर्वैरिदं वाक्यं समाहितैः।। २।।

अपने शासन के चौथे वर्ष के पांचवें महीने के प्रथम दिन इक्ष्वाकु के शक्तिशाली वंशज श्रीरामचन्द्र ने राज्य–सभागार में प्रतिष्ठित लोगों की सभा बुलाई और इच्छा व्यक्त की कि उनके संबोधन को ध्यानपूर्वक सुना जाए जिससे सभी का कल्याण हो।

On the first day of the fifth month of the fourth year of his reign, Sri Ramachandra, the mighty decendent of Ikshvaku called an Assembly of the distinguished people of the state Hall and desired them to listen with attention to his address which will benefit all.

श्रीराम उवाचः–

दारंघरण–सम्बन्धे संशया ये ह्युपस्थिताः।
तन्निराकर्तुमनेन समाहूताः भवद्विधाः।। ३।।

पुरोहितः सुमन्तश्च मन्त्रिणो रणदुर्मदाः
वेदविदः त्रैविद्याश्च वृद्धाः ह्यत्र समागताः।। ४।।

श्रीराम ने कहा–

हमारे दारंघ अभियान के बारे में कुछ लोगों के अंदर जो संशय उत्पन्न हुआ है, उसे दूर करने के लिए मैंने इस विशाल सभा में राजपुरोहित, सुमन्त (मुख्यमन्त्री), मन्त्रियों, सेनापतियों, वेद के विद्वानों, त्रयी विद्या के पंडितों और वरिष्ठों को बुलाया है।

Shri Ram said :-

To clarify the doubts raised in certain quarters about our Darangha campaign, we have called the High priest of the Realm, the Sumanta (chief minister), Mantris (Ministers) war Lords, scholars of the vedic Lore, savants of the three sciences and the elders to this August Assembly.

हिमाचलस्य पादेऽत्र मम राज्यस्य पूर्वके।
राज्यमेकं महानर्थं सद्धर्मस्याजनि ध्रुवम्।।५।।

अस्माकं तु प्रजाः सर्वाः देवकल्पा महीतले।
विपत्तिजनकं तासामेतद्राज्यं सुदारुणम्।।६।।

हिमालय की तलहटी में हमारे साम्राज्य के पूर्व में यह छोटा सा राज्य हमारे पवित्र धर्म और ईश्वर के प्रतिनिधि रूप हमारी जनता के लिए एक बड़ा खतरा बनता जा रहा था।

At the foot of the Himalayas, this small principality in the east of our Empire, was developing into a great danger to our sacred religion and our people who were the representatives of Gods on earth.

दारंघेषु ध्रुवाख्येयो दंडितो पापकृन्महान्।
देवमानवसंरोधी भुव्याचरति पामरः।।७।।

हमने दारंघ के राजा धुर्वाण को ईश्वर और मनुष्य के विरुद्ध पापकर्म करने के लिए दंडित किया।

We punished King Dhurvana of Darangha for sins he committed both against God and Man.

वेदनिन्दाप्रवृत्तोऽसावरातिः वेदमार्गिणाम्।
पवित्रेक्ष्वाकु–राष्ट्रस्य सदाऽसीद्धानिकारकः।।८।।

वह निकृष्ट व्यक्ति वेदों, वेदों के अनुयायियों और इक्ष्वाकु के पवित्र साम्राज्य के विरुद्ध घृणा और दुष्प्रचार का अभियान चला रहा था।

That wretched being had been carrying on a foul campaign of hatred and calumny against the Vedas, the followers of the Vedas and the Holy Empire of Ikshvaku.

वेदमार्ग–विरुद्धं तु धर्ममेकं प्रवर्तितम्।
निपीडिताः जनाः सर्वे तन्निर्देश–विरोधिनः।।६।।

उसने वेदों की शिक्षाओं के विरुद्ध एक नया धर्म आरम्भ किया और जो

उसको नहीं मानते थे उनकी वह निन्दा करता था।

He enunciated a new religion against the tenents of the Vedas and condemned all those who followed not the new path enunciated by him.

नवीनैर्मतवादैस्तु क्लीबत्वं जायते यथा।
दुर्मतिः खलु तस्यैषा चरित्रे हानिकारिका।।१०।।

उसका हमारी जनता को नपुंसक बनाने का एक घृणित उद्देश्य था, उसके नए सिद्धान्त की प्रकृति अनैतिक थी।

His was an ignoble mission to emasculate our people with the new theories which were immoral in character.

धिगस्मै ध्रुवराजाय येनैतत् प्रथितं भुवि।
श्रुतिप्रबोधितं ब्रह्म मदायैः भाषितैः समम्।।११।।

उस धुर्वाण को धिक्कार है जिसने अपने द्वारा उपदिष्ट ईश्वर का स्तर वेदों द्वारा प्रशंसित ईश्वर के समान बताया।

Let curse fall on the head of this Dhurvana who announced that God preached by him held the same status as the Lord whom the Vedas praise.

आत्मनीनाः नराः सर्वे ध्रुव्णा राज्ञा नु चित्रिताः।
निर्वाणरूपिकाऽन्या वा श्रेष्ठसिद्धिपरा यदि।।१२।।

वासनायाः निहन्ता यो मानवः स हि स्वर्गभाक्।
किन्त्वत्र जायते प्रश्नो भावाभावविचारणे।।

वासनायाः क्षयेच्छाऽपि किमेषा नहि वासना।
वासनायाः क्षयः क्वापि वासनया न शक्यते।।१३।।

धुर्वाण ने मनुष्य को मात्र स्वार्थ का पुतला बताया। यदि उसका अपना कल्याण, चाहे वह निर्वाण (मुक्ति) के रूप में हो या किसी अन्य उच्चतम उद्देश्य के लिए हो, तो मनुष्य एक स्वार्थी जीव हो जाएगा। धुर्वाण ने बताया कि यदि स्वर्ग का अधिकार केवल अपनी इच्छाओं को समाप्त कर प्राप्त किया जा सकता है तो यह एक ऐसा दुष्चक्र होगा, जिससे आप कभी निकल नहीं सकते।

Dhurvana painted man as a mere embodiment of selfness. If his own good, whether in the form of nirvana (salvation) or anything else be the highest aim, is man, then, anything else but a selfish creature? Dhurvana upheld that the right to heaven can be acquired only by killing the desires. But think for a while

if the desire of killing desires is not a desire. It is a vicious circle of which you can never escape.

वासनामयलोकोऽयं कथ्यते सर्वशास्त्रकैः।
समाजार्थं महत्कर्म शौर्यञ्च वासनोद्भवम्।। १४।।

सभी शास्त्र कहते हैं कि इच्छाएं ही मनुष्य का निर्माण करती हैं। सामुदायिक विकास के लिए उत्तम और उच्चतम साहसिक कार्य ही अभीष्ट मनुष्य के लक्षण हैं।

All the scriptures uphold that desires constitute men. Desire to do the noblest and highest acts of valour for the community is the sigh of a desirable man.

अहिंसा या ध्रुवं प्रोक्ता लोकसंप्लव–कारिणी।
हेतुवादैः समायुक्ता ह्यतीवानर्थदायिनी।। १५।।

धुर्वाण ने अहिंसा के एक नवीन सिद्धांत की सृष्टि की, जो कि अत्यधिक अनैतिक, खतरनाक, नौजवानों को भ्रष्ट करने वाला और हमारी जाति का मनोबल गिराने वाला था।

Dhurvana created a new fangled notion of Ahimsa (non violence) which was highly immoral and dangerous corrupting the youth and demoralising our race.

वेदात् विरोधिनी या तु विधातृविधिनाशिनी।
अहिंसा सा यदा ग्राह्या सर्वधर्मस्तदा हतः।। १६।।

अहिंसा वैदिक सिद्धान्त और ईश्वरीय नियम के विपरीत है। अंहिसा के विचार को स्वीकार करना ईश्वर और उसकी पवित्र शिक्षाओं की निन्दा करना है।

Ahimsa is opposed to the theme of the Vedas and the law of God. To accept the idea of ahimsa is to condemn God and his sacred teachings.

सर्वदा खलु सर्वत्र सर्वे जानन्ति पण्डिताः।
नरास्तिष्ठन्ति संसारे संघर्षे पशुभिः सह।। १७।।

विद्वान् यह अच्छी तरह जानते हैं कि कई युगों तक जंगली जानवरों से संघर्ष मनुष्य की उत्तरजीविता का कारण बना।

The scholars know it well that struggle against the beasts for ages caused the survival of man.

यद्यहिंसा भवेन्मार्गे दुष्टचौराश्च तस्कराः।
भुवि प्रादुर्भविष्यन्ति त्वशान्तिर्महती भवेत्।। १८।।

अंहिसा को जीवन का मुख्य सिद्धान्त बना देने पर जंगली जातियां, डकैत और चोर इस दुनिया में समृद्ध होंगे।

The wild tribes, dacoits and thieves will thrive in the world, in case ahimsa was made the principal law of life.

जगत् मायामयं सर्वं समाजः स्यादवास्तवः।
ध्रुव्णो मतमिदं सर्वं सत्यं स्वयं हि केवलम्।। १६।।

सबसे बढ़कर धुर्वाण यह उपदेश करता था कि दुनिया एक भ्रम है और समाज अवास्तविक है, जबकि मात्र वास्तविकता व्यक्ति का निजी व्यक्तित्व है।

Above all, Dhurvana preached that the world was a mere illusion and the society was unreal, while the only real thing was the individual self.

स्वकर्मफलभाग् जीवो न कदापि समाजभाक्।
कर्मणा वृद्धिमायाति कर्मणैव परिक्षयम्।। २०।।

धुर्वाण ने जोर दिया कि एक व्यक्ति अपने स्वयं के कार्यों का परिणाम है और उसके अपने कार्य ही उसे बनाएंगे या बिगाड़ेंगे।

Dhurvana asserted that an individual was the product of his own acts, and nothing but his own acts would make or mar him.

ईदृशी धारणा येषां यौथबुद्धिः कथं भवेत्।
धर्मव्याजेन स्वार्थत्वं श्रेष्ठशत्रुर्धरातले।। २१।।

इस प्रकार का जीवन–दर्शन मनुष्य में सामाजिक भावनाओं के विकास के विरुद्ध है। एक मनुष्य जो कि अध्यात्म की आड़ में स्वार्थपरता का उपदेश करता है, वह वस्तुतः मानव का शत्रु है।

Such a philosophy of life would be inimical to the development of social sentiments in man. A man who preaches selfishness under the guise of spiritualism is really an enemy of man.

मायामयः समाजश्चेदस्मद्राज्यं भवेत्तथा।
मायामयो हि सम्राट् तु भविष्यति न संशयः।। २२।।

यदि समाज एक भ्रम है, तो हमारा साम्राज्य भी एक भ्रम होगा और वस्तुतः सम्राट् भी एक भ्रम ही होगा।

If society were an illusion, our Empire must be an illusion and so indeed would be the Emperor.

राजद्रोही–भाषणं तु राष्ट्र–द्रोहकरं भृशम्।
समाज–क्षयकृत् ज्ञेयं न क्षन्तव्यं कदाचन।। २३।।

तस्मात्तस्मै दण्डदानं युक्तियुक्तं ह्यमन्यत।।२४।।

सम्राट् के विरद्ध उपदेश करना राज्य और समाज के विरुद्ध एक विद्रोह है। दुष्ट को कभी क्षमा नहीं किया जाना चाहिए। उनको दण्डित करने की अनुमति विधि और विवेक दोनों देते हैं।

To preach against the Emperor is a sedition against the state and the society, the culprit can never be pardoned. To punish him is permitted by both law and reason.

दग्धास्माभिः पुरी तस्य दारंघ नामिका हि या।
व्यभिचारस्य नु दोषेण नास्तिक्येन विदूषिता।।२५।।

इसलिए हमने धुर्वाण की राजधानी दारंघ को जला दिया, क्योंकि इसकी दीवारें नास्तिकता और अनैतिकता से संक्रमित थीं।

So we burnt the city of Darangha, the capital of Dhurvana, as its walls were contaminated with the poison of atheism and immorality.

वेदद्रोह–करो धर्मो न स्थास्यति धरातले।
वेदबाह्यो हि यो धर्मश्चेश्वरस्य विरोधकः।।२६।।

हम कभी भी ऐसे धर्म को सहन नहीं करेंगे जो वेदों को गौरवान्वित न करता हो। कोई भी वेद–विरुद्ध बात ईश्वर की इच्छा के विपरीत है।

We shall never tolerate any religion that shall not glorify the Vedas, anything opposed to the Vedas is against the will of God.

अयोध्येशगवीः श्रुत्वा महतीः शुभदायिनीः।
सुमन्तः कथयामास परमानन्दपूरितः।।२७।।
अहोभाग्यमहोभाग्यं जम्बू–द्वीप–निवासिनाम्।
रामचन्द्रो नृपो येषां रक्षकः प्रतिपालकः।।२८।।

अयोध्या के राजा के उत्तम शब्दों को सुनकर सुमन्त ने कहा जम्बू द्वीप के लोग धन्य हैं जो श्रीरामचन्द्र उनके स्वामी और रक्षक हैं।

Hearing the noble words of the Lords of Ayodhia, the Sumanta spoke, "Blessed are the people of Jambu Dwipa that Sri Ramachandra is their Lord and protector".

बाहुवीर्येण राम! त्वं राक्षसान् हतवानसि।
आरम्य हिमवद्भागात् सद्वीपं राज्यमागतम्।।२६।।

हे राम! अपनी शक्तिशाली भुजाओं से आपने जंगली राक्षसों को हिमालय से लेकर महासागर के द्वीपों तक पराभूत कर दिया है।

With thy strong arm, O Rama, thou hast suppressed the wild Rakshasas from the Himalayas to the islands in the ocean.

विन्ध्यस्य दक्षिणे भागे इतः पूर्वं सदा नृप
वेदप्रचारकाः सर्वे दुर्वृत्तैस्तु निपीडिताः।।३०।।
इन्द्रवंशसमुद्भूतैर्गन्तुं तत्रं न शक्यते।
तत्र भूमिषु यत्रासंस्तारकामारिचादयः।
सुबाहुः खरदूषणौ बालिराजश्च रावणः।।३१।।

ऐसा समय था, जब वेदप्रचारक विन्ध्य के दक्षिण के सीमान्त प्रदेशों में दुष्टों द्वारा पीड़ित किए जाते थे, और आर्य (हिन्दु) जाति के किसी भी व्यक्ति का उस प्रदेश में प्रवेश करना कठिन था, जहाँ तारक, मारीच, सुबाहु, खर, दूषण, बाली और रावण शासन करते थे।

There was a time when the missionaries of the holy faith of the Vedas were persecuted in all the lands south of the Vindhyas, and it was impossible for anybody of the indu race to enter into the lands where Tarka, Maricha, Subahu, Khara, Dukhana, Bali and Ravana ruled.

परमात्मप्रसादेन शत्रवस्तु विनाशिताः।
वेदज्योतिःविकीर्णं स्यादधुना सर्वभूमिषु।।३२।।

परमात्मा की कृपा से हमारे सारे शत्रु विनष्ट हो गए और समस्त संसार में वेदों का प्रकाश फैल गया।

Glory be to God that all our enemies have been suppressed. Light of the Vedas has spread all over the world.

त्वं सम्राडसि सम्राजां नृपाणां नृपतिर्वर
दीयते भवतो वाक्यं सत्यमेतन्न संशयः।।३३।।
वेदवाक्यस्य रक्षार्थं धर्मस्य चापि पूर्तये।
योत्स्यामहे वयं सर्वे यावज्जीवं धरातले।।३४।।

हे राजाओं के राजा, और सम्राटों के सम्राट्! हम आपको वचन देते हैं कि हम आजीवन वेदों की रक्षा और अपने धर्म के प्रचार के लिए संघर्षरत रहेंगे।

King of the all kings, and Emperor of all emperors, we give a solemn pledge to you that we shall fight so longs as we live for the glory of the Vedas and the propagation of our religion.

अपराजया नः सेना रामचन्द्रेण चालिता।
प्रतिभूर्वेदविस्तारशान्तिरक्षा महाव्रता।।३५।।

श्रीरामचन्द्र के नेतृत्व में हमारी अपराजेय सेना शान्ति और वेदों के प्रचार की प्रतिनिधि है।

Our invincible army under the leadership of Shri Ramchandra is the guarantee for peace and the propagation of the Veda.

नमस्ते रामचन्द्राय वेदधर्मविदे दृढम्।
तुभ्यं याचामहे श्रोतुं वेदधर्मं सुनिर्मलम्।।३६।।

हम वैदिक धर्म के महान ज्ञाता श्रीरामचन्द्र को नमन करते हैं उनसे प्रार्थना करते हैं कि वेदों के सच्चे धर्म को हमसे कहें।

We bow unto Sri Ramachandra, the great apostle of the Dharma of the Veda and we beseach of him to narrate to us the true religion of the Veda.

उच्यतां कृपया सौम्य! रहस्यं जगतोऽखिलम्।
मानवचरितं कृत्स्नं कुतः स इह आगतः।।३७।।

हे प्रभु! कृपा करके हमें बताएं कि यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड क्या है, मनुष्य क्या है और वह कैसे इस पृथ्वी पर आया?

O Lord! I pray tell us what this entire universe is, what man is and how he has appeared on the earth.

न्यायोऽन्यायविवेकस्तु कुतः प्राप्तो भवेद्वद।
कोऽन्यायः कश्च न्यायोऽस्ति किमगर्हितगर्हितम्।।३८।।

मनुष्य ने न्याय और अन्याय का विवेक कैसे प्राप्त किया? क्या उचित है और क्या अनुचित है, तथा क्या नैतिक है, और क्या अनैतिक है?

How has man developed the notions of right and wrong? What is the right and what is wrong? How is one to judge what is moral and what is immoral?

समाजयोजनं किंवा राष्ट्रस्य क्षितिपस्य च।
कस्मात् सेनाबलं राजन् ! पुष्णामोऽतियत्नतः।।३९।।

समाज की क्या आवश्यकता है? मनुष्य को राज्य और राजा क्यों चाहिए? हमें सेना क्यों चाहिए?

What is the need of society? Why should men have a state and a King? Why should we have armies?

को विधाता क आत्मा च कथय श्रुतिकल्पितम्।।४०।।

ईश्वर क्या है? आत्मा क्या है? कृपया बताएं कि वेद इस रहस्य को कैसे उद्घाटित करते हैं?

What is God? What is soul? Please tell us how do the Vedas interpret the mystery.

इति श्रीवाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे मुख्यप्रश्नो नाम प्रथमोऽध्यायः।।

इस प्रकार वाल्मीकिकृत श्रीरामसंवाद का 'आधारभूत प्रश्न' नामक प्रथम अध्याय समाप्त हुआ।

Thus closes the first chapter entitled "Fundamental Question" of Shri Rama's Discourses written by Valmiki.

|| द्वितीयोऽध्यायः ||

द्वितीय अध्याय

Chapter 2

विश्वः

विश्व

The Universe

देवतात्मा नराधीशः सुमन्तं प्राह मन्त्रिणम् || १ ||
मन्त्रिणा पूतराजस्य यदिदं श्रोतुमीप्सितम् |
तवानुरोधरक्षार्थं कथयामि तु साग्रहम् || २ ||

एतत्सभां समाश्रित्य सर्वलोकेषु पूजिताम् |
धर्मव्याख्यानमाचक्षे वैदिकं सर्वभूमिषु || ३ ||

महाराज श्रीरामचन्द्र ने सुमन्त से कहा–हम अपने पवित्र साम्राज्य के मुख्य मन्त्री की इच्छा का सम्मान करते हैं। यह हमारे लिए विशेष गौरव का विषय है कि हम प्रतिष्ठित सभा के माध्यम से विश्व को वैदिक धर्म की जानकारी दें।

His sacred Majesty thus addressed the Sumanta: We honour the wish of the chief minister of our holy Empire. Let it be our proud privilege to interpret the religion of the Veda through this August Assembly to the world.

इदमखिलविश्वं हि दृश्यमदृश्यमेवच |
सीमाहीनमनाद्यन्तं वर्धमानं प्रतिक्षणम् || ४ ||

देशे काले च सर्वत्राप्यनन्ते ह्यसीमे द्विज |
देशसमयपार्थक्यं न किञ्चिदेक एव तौ || ५ ||

इस सम्पूर्ण दृश्य और अदृश्य विश्व की कोई सीमाएं नहीं हैं। कोई यह नहीं कह सकता कि इसका आरम्भ कहाँ है और कहाँ इसका अन्त है, क्योंकि देश और काल की अनन्तता में यह प्रतिक्षण विस्तृत होता जा रहा है, और देश–काल में कोई अन्तर भी नहीं किया जा सकता क्योंकि ये दोनों एक ही हैं।

All this universe, visible and invisible, has no bounds. You cannot say where it begins and where it ends, as it is expanding every moment in the infinity of space and time which you cannot

differentiate and are one.

विश्वप्रपंचज्ञानाय देशकालप्रकल्पनम् |
विजानीयादिदं सत्यं विश्वं देशकालान्वितम् || ६ ||

यह ज्ञातव्य है कि देश और काल दो भिन्न और स्वतन्त्र विभाजन नहीं हैं। वे दोनों एक हैं। विश्व देश और काल रूप ही है।

Let it be understood that space and time are not two separate and independent categories. They are one. The universe is space time.

वाष्पाकारमिदं सर्वं पूर्वमासीत् चराचरम् |
यत्किंचित् दृश्यते विश्वे सर्वं वाष्पसमुद्भवम् || ७ ||

एक ऐसा समय था जब सम्पूर्ण चेतन और अचेतन विश्व गैसों के विशाल बादल रूप में था। विश्व में दिखाई पड़ने वाली प्रत्येक वस्तु गैस के रूप में थी।

There was a time when the entire universe conscious and unconscious, consisted in the form of a huge cloud of gases. Every thing that we see was in the form of gas.

उष्णतरं हि सूर्याच्च बहुगुणं बभूव तत् |
घूर्णमानं स्वतेजसा वियदेतन्निरन्तरम् || ८ ||

यह बादल सूर्य से कई गुना गर्म था और यह अन्तरिक्ष में अपनी गर्मी की शक्ति से निरन्तर घूमता रहा।

This cloud was many times hotter than our sun and it revolved and revolved in space by the very force of its heat.

शतशः सहस्रशो वापि भिन्नं तद्बहुधाऽभवत् |
असंख्यास्तारकापुंजा ह्यनेनैव प्रकल्पिताः || ९ ||

अपने इस परिभ्रमण के दौरान यह अनेक खण्डों में बंट गया और असंख्य चमकीले तारों के रूप में परिवर्तित हो गया।

During the course of its revolution, it bifurcated and trifurcated and so on, and thus came into being luminous stars—millions in number.

शैत्यं प्राप्तं द्रवीभूतं यथा यो बहुवर्णभाक् |
नक्षत्राणाममीषां तु वर्णाः स्युर्विधिस्तथा || १० ||

जिस प्रकार पिघला हुआ इस्पात ठंडा होता हुआ क्रमशः श्वेत उष्णता से लाल उष्णता की स्थिति में आता है, उसी प्रकार इन तारों के विभिन्न रंग हो गये।

As a melted steel in cooling passes successively through the stages of white heat to dull red heat, these stars have different colours.

यत्स्यादुष्णतमं विश्वे दृश्यते नीलवर्णकम्।
श्वेतं किंचित्तथाऽश्वेतं किंचित् रक्तं तथा भवेत्।।११।।

उनमें कुछ जो सर्वाधिक गर्म हैं, वे नीलवर्ण के हैं, उनमें से कुछ सफेद, कुछ पीले और कुछ लाल हैं।

Some of them which are the hottest are blue in colour, some of them are white, some are yellow and some are red.

तेषामुष्णतमं यत्तु भूमेर्लक्षगुणं हि तत्।
अनुष्णतमकं यत्तु सहस्रगुणकं हि तत्।।१२।।

उनमें से जो कुछ गर्म है, वह हमारी पृथ्वी से एक लाख गुणा गर्म है जबकि उनमें से सबसे ठंडा एक हजार गुना ठंडा है।

The hottest among them is about one lac times hotter than our earth, while the coldest among them Is about one thousand times.

बहुगुणंनुसूर्याद्धि तेषामायतनं महत्।
हीनान्याभान्ति यस्मात्तु क्रोशकोटिर्विदूरतः।।१३।।

तारे हमारे सूर्य से कई गुना बड़े और चमकदार हैं लेकिन सूर्य जैसे चमकीले नहीं दिखाई देते हैं, क्योंकि वे हमसे करोड़ों कोस दूर हैं।

The stars are many times larger and brighter than our sun but do not appear so bright as sun because they are crores of X kosa from us.

(X =3/2 miles)

कोटिभिर्वत्सरैः रश्मिरेषां स्पृशति भूतलम्।
दूरतः सुमहत्तेषां तत्रानुक्तं हि शोभनम्।।१४।।

दूरस्त तारों से प्रकाश को हम तक पहुँचने में करोड़ों वर्ष लग जाते हैं। तारों से हमारी दूरी बहुत अधिक है और उनके बारे में न कहना ही श्रेयस्कर है।

It takes light crores of years from the distant stars to reach us. The distances from the stars to us are staggering and less said of them the better.

आकर्ण्य विश्वसंवादं तारापुंजसमन्वितम्।
विस्मिताः सभ्यकाः सर्वे सुमन्तो हीदमब्रवीत्।।१५।।

तारों की दुनिया की कहानी सुनकर सारी सभा स्तब्ध रह गई और सुमन्त ने इस प्रकार कहा।

Hearing the story of the starry universe, the whole assembly was surprised and thus spake the Sumanta.

बुद्धिर्निवर्ततेऽस्माकं यज्ज्ञानं विवृतम्।
कृतज्ञास्तु वयं स्याम यत्त्वयैतत् प्रकाशितम्।
उत्सुकाः स्मो वयं श्रोतुमितोऽप्यधिकविस्तृतम्।।१६।।

पृथ्वीमंगलसौम्यादिस्तथा बृहस्पतिर्गुरुः।
कथं कथय भो राजन् कीदृशी प्रकृतिर्भवेत्।।१७।।

महाराज ने अद्भुत ज्ञान उद्घाटित किया है। आपने जो कुछ व्यक्त किया है उसके लिए हम आभारी हैं किन्तु हम पृथ्वी, मंगल, चन्द्रमा, बृहस्पति इत्यादि के बारे में अधिक जानना चाहते हैं। वे अस्तित्व में कैसे आए और वे कैसे व्यवहार करते हैं?

Intellect staggers at the knowledge Your majesty unfolded before us. Grateful are we for all that you have revealed unto us. However we will like to know something more about the Earth, Mars, Moon, Jupiter etc. How do they come into being and how do they behave?

तत्सर्वं वर्ण्यतां देव! कोऽन्यस्तत् वक्तुमर्हति।
अयोध्याधिपतिः प्राह शृणोत्वेतत् समाहिताः।।१८।।

अन्यद् ब्रह्माण्डतुल्यं नु ह्यस्माकं भुवनं ध्रुवम्।
सम्भूत् प्राचीनकालेषु नीहारमेघनिर्मितम्।।१९।।

तब अयोध्या नरेश बोले– कृपया ध्यानपूर्वक सुनें। हमारा ब्रह्मांड अन्य ब्रह्मांडों की तरह बहुत पहले गैसों के उड़ते हुए बादलों के रूप में था।

The Lord of Ayodhia, then, spoke : please listen attentively. Our universe unto like other universes was at distant past like a flying cloud of gases.

सीमाहीने नभो लोके घूर्ण्यमानं शतं समाः।
बहिराकृतिरप्यस्य क्रमशः शीततां गताः।।२०।।

परिभ्रमण करते हुए इसके बाहरी भागों ने अनन्त आकाश में अपनी उष्णता खो दी।

In the course of its revolutions, its outer portions lost their heat in the unfathomable ocean of space and got cold.

अंशो यः शीतलीभूतो ग्रहादिस्तेन निर्मितः।
पृथक्भूतः परिछिन्नः सीमाहीने नभस्ततेः।। २१।।

सूर्य एव हि केन्द्रस्थो विपुलो वाष्पमण्डलः।
अत्र विश्वे स्वयं ज्योतिः पृथिव्यास्तत् समन्तिकम्।। २२।।

इस प्रकार परिभ्रमण करते हुए इसके शीतल भागों ने अलग होकर ग्रहों का निर्माण किया, जबकि गैसों के केन्द्रीय वाष्पमंडल ने सूर्य का निर्माण किया, जो कि हमारे ब्रह्माण्ड में एक मात्र स्वप्रकाशित पिंड है और पृथ्वी से निकटतम तारा है।

Thus in the very progress of revolutions, the colder parts got segregated and formed planets, while the central cloud of gases formed the Sun, which in our universe, is the only self–luminous body, being the star nearest to the earth.

तेजोदीप्त्योर्हि मूलं वै सूर्योऽयं ब्रह्मलीलया।
संदीपयन् ग्रहान् सर्वान्, जीवानां प्राणदः प्रभुः।। २३।।

सर्वशक्तिमान की कृपा से सूर्य प्रकाश और ऊष्णता का स्रोत है, जिससे पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व संभव हुआ है। सभी ग्रह सूर्य से प्रकाश प्राप्त करते हैं।

Through the grace of the Almighty, the sun is the sourse of light and heat which makes the existence of life possible on earth. All the planets borrow light from the sun.

प्रतीकोऽयमतः साक्षात् ब्रह्मणो, मन्दिरद्युतिः।
प्रतिकृतिर्हि सूर्यस्य राजते भक्तकामदा।। २४।।

जानो कि सूर्य ईश्वर का दृश्य प्रतीक है, और इसीलिए हमारे मंदिरों के प्रवेश–स्थल पर सूर्य की प्रतिमा देदीप्यमान होती है।

Know, then, the sun is the visible symbol of God and that is why the image of the sun is resplendant on the entrance of our temples.

उपग्रहस्तु चन्द्रोऽस्ति ह्यन्ये सन्ति ग्रहादयः।
बृहस्पतिः शनिः शुक्रः पृथ्वीमंगलबुधास्तथा।। २५।।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रह हैं–पृथ्वी, बुध, मंगल, शुक्र, बृहस्पति और शनि। चन्द्रमा ग्रह नहीं अपितु पृथ्वी का एक उपग्रह है।

The most important planets are Earth, Mercury, Mars, Venus, Jupiter and Saturn. Moon is not a planet but a satellite of Earth.

उपग्रहाः स्युः सर्वेषां ग्रहाणां पृथिव्यादीनाम्।
एकोऽधिको हि कस्यास्ति, न कश्चित् बुधशुक्रयोः।। २६।।

बुध और शुक्र को छोड़कर सभी ग्रहों के एक या अधिक उपग्रह हैं।

Leaving aside Mercury and Venus, all the Planets have satellites, one or more than one.

शनैश्चरो गुरुश्चापि भूम्याः बहुगुणौ स्मृतौ।
देव–गुरौ वसेयुर्वै त्रयोदशशतं धराः।। २७।।

बृहस्पति और शनि पृथ्वी से बहुत बड़े ग्रह हैं। बृहस्पति में अकेले ही 1300 पृथ्वियाँ समा सकती हैं।

Jupiter and Saturn are planets much larger than Earth, Jupiter alone can contain 1300 Earths.

बृहस्पतिसहस्रं तु सूर्यो धारयितुं क्षमः।
लक्षं त्रयोदशगुणं पृथिव्याः स न संशयः।। २८।।

सूर्य में एक हजार बृहस्पति समा सकते हैं या यह पृथ्वी से तेरह लाख गुना बड़ा है।

The sun can contain one thousand Jupiter's or that it is thirteen hundred thousand times bigger than earth.

त्रिपंचाशत् शतक्रोशाः धरिण्या व्यसकः स्मृतः।
चतुर्दशाधिकशतश्चत्वारिंशत् विधुस्तथा।। २९।।

पृथ्वी का व्यास 5300 कोस से थोड़ा ही कम है, जबकि अन्तरिक्ष में हमारे सर्वाधिक निकट स्थित चन्द्रमा का व्यास 1440 कोस है।

The diameter of the earth is slightly less than 5300 kosa while the diameter of moon, our nearest neighbor in the universe, is only 1440 kosa.

क्रोशद्वयसहस्रं वै बुधस्य व्यसकः स्मृत।
कुब्जव्यासोऽष्टविंशतिक्रोशानां वै शतानि तु।। ३०।।

बुध का व्यास 2,000 कोस है, जबकि मंगल का 2,800 कोस है।

Mercury has a diameter of 2,000 kosa while Mars has a diameter of 2,800 kosa.

शुक्रव्यासस्तु किंचित् क्षोदीयानवनेर्भवेत्।। ३१।।

शुक्र पृथ्वी से थोड़ा ही छोटा है।

Venus is slightly smaller than Earth.

सूर्यव्यासमहत्वं यत् क्रौशैस्तज्जव्यतां बुधैः।
षट्सप्ततिसहस्रैः स्यादधिकं लक्षपंचकम्।। ३२।।

जानना चाहो कि सूर्य कितना बड़ा है? तो तुम्हें यह जानना होगा कि सूर्य का व्यास 5,76,000 कोस है।

To judge how big is the sun. You must know that the diameter of the sun is 5,76,000 kosa.

लक्षैर्विंशतिभिर्युक्तः क्रोशानां कोटयस्तु षट्।
रविर्भुवो भवेदूराद्विमांशुरवनेस्तथा।
अष्टसप्ततिसहस्रं स्यात् क्रौशैकैकलक्षकम्।। ३३।।

सूर्य पृथ्वी से 6,20,00,000 कोस दूर है, जबकि चन्द्रमा मात्र 1,78,000 कोस ही दूर है।

The sun is 6,20,00,000 kosa away from Earth while Moon is only at a distance of 1,78,000 kosa

वशिष्ठ ऋषिरुवाच :–

ब्रूहि रघुपतेऽस्मभ्यं पृच्छभ्द्याः कृपया स्वयम्।
पारम्पर्येण जायेत कथं नक्तं कथं दिवा।। ३४।।

मुनि वशिष्ठ ने कहा :–

हे रघुकुलभूषण! कृपया बताइए कि किस प्रकार दिन और रात बनते हैं?

Sage Vasishta said :-

O ' Jewel of Ragu's dynasty, pray, tell us how days and nights are formed?

श्रीराम उवाच :–

केन्द्रे स्थितो रविः श्रेष्ठे भ्रामयन् ग्रहकान् सदा।
सूर्यं या परितो भ्रान्तिरवने सा तु वत्सरम्।। ३५।।

स्वाक्षे चावर्तनं दिवा नक्तं चेति सदा स्मृतम्।
धरणी वर्तुलाकारा स्वे भ्रमत्यक्षके सदा।। ३६।।

श्रीराम ने कहा:–

सूर्य सम्पूर्ण जगत का केन्द्र है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर काटते हैं। पृथ्वी जिस समयावधि में सूर्य की परिक्रमा करती है, उसे "वर्ष" कहा जाता है। दिन और रात के लिए पृथ्वी निरन्तर अपनी धुरी पर घूमती है।

Shri Rama said :-

The sun is the centre of our universe and all the planets

rotate round the sun. The time the Earth takes in its rotation round the sun is called "year". In the course of day and night the orange like Earth rotates round its own axis.

अर्धमस्य प्रदीप्यते चार्धन्तु तिमिरावृतम्।
दिवसाद्रजनेर्भेदो ह्येतेनैव सुसिद्धति।। ३७।।

सदैव अपनी धुरी पर चक्कर काटते हुए एक समय में पृथ्वी का आधा भाग ही प्रकाशित होता है, जबकि आधे भाग में अंधेरा रहता है। पृथ्वी के प्रकाशित भाग में दिन होता है जबकि अन्धकारमय भाग में रात होती है।

Being always in rotation round its exis, Earth has only one half of it illuminated at a time while the other half will be dark. There is day in the illuminated portion of the earth while in the dark half there will be night.

अनार्यकुलसंभूताः राक्षसा वानरादयः।
कल्पयन्ति समां पृथ्वीं परितस्तां रवेर्गतिम्।। ३८।।

असभ्य जातियों जैसे राक्षसों और वानरों ने यह कल्पित किया है कि पृथ्वी चपटी है और सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है।

Uncivilised Races like Raksasas and Vanaras imaginated the Earth to be flat and that the sun rotated round the Earth.

कुसंस्कारो महांश्चैषां पृथ्वी तिष्ठति स्थिरा।
वृषश्रृंगेऽथवा कूर्मपृष्ठे खल्वविवर्तिनी।। ३६।।

ऐसी जातियों द्वारा समर्पित एक अन्य मूर्खतापूर्ण सिद्धांत है कि पृथ्वी बैल के सींगों पर या एक विशालकाय कछुए की पीठ पर टिकी हुई है।

There is another absurd notion entertained by such races and it is that the earth is supported on the horns of an ox or in the back of a huge Tortoise.

कल्पनाप्रोक्तमाख्यानं प्राकृताद्दूरमन्तरम्।
तादृशो संस्कारो ह्येषां यादृक् प्राक् कथितो मया।। ४०।।

ऐसी धारणा असभ्य पूर्वाग्रह का परिणाम है, किन्तु यह सत्य और प्रकृति से दूर है।

Such a belief is the outcome of barbaric prejudices, but is farther from truth and nature.

रज्जुबद्धं यदा लोष्ठ्खण्डं वेगैर्विघूर्ण्यते।
रज्जोराकर्षणादेतत् न दूरं भृश्यते क्वचित्।। ४१।।

यदि रस्सी के एक सिरे पर एक पत्थर को बाँधकर घुमाया जाता है, तो यह रस्सी का खिंचाव है, जो पत्थर को दूर जाने से रोकता है।

If a stone is whirled round on the end of a string. It is the pull of the string that prevents the stone from flying away.

अदृश्यात्तु रवेः कर्षात् ग्रहः सूर्यान्न भ्रश्येत्।। ४२।।

इसी प्रकार से यह सूर्य का अदृश्य खिंचाव ही है जो ग्रहों को दूर जाने से रोकता है।

Thus it Is the invisible pull of the sun that prevents the planets from flying away.

वह्निस्पर्शाद् यथांगुलिः स्तत्क्षणादपकृष्यते।
वशिष्ठःतद्वदुत्थाय प्रणम्योवाच स्वप्रभुम्।। ४३।।

ठीक वैसे ही जैसे कि आग के छू जाने पर हम अपनी अगुंली को तुरंत खींच लेते हैं। इसेक बाद ऋषि वशिष्ठ ने खड़े होकर और अपने स्वामी को प्रणाम करके कहा।

Just as we withdraw our finger as soon as it touches the flame, the sage Vasishta rose on his feet, bowed the Lord and said;

स्वयं सिद्धमिदं विश्वं न सृष्टं ब्रह्मणा यदि।
त्वद्वाक्यादवगन्तव्यं संशयं छेत्तुमर्हसि।। ४४।।

क्या यह संसार बिना ब्रह्मा के हाथों स्वयं ही बन गया है? यदि हाँ तो आपका यह वक्तव्य सन्देह उत्पन्न करता है, इसलिए कृपया इसे स्पष्ट कीजिए।

Is this world a mere automata formed without the hand of Brahama? As your words lead us to doubt, kingly clarify it.

श्री भगवानुवाचः–

नैतत् विश्वं स्वयं सिद्धं, सर्वकार्येषु दृश्यते।
भगवतो हस्तस्पर्शः सत्यमेव न संशयः।। ४५।।

श्रीभगवान् ने कहा–

यह विश्व स्वयं बना हुआ नहीं है। इसके सभी कार्यों में स्पष्ट रूप से ईश्वर का हाथ है।

The blessed Lord said:

The universe is not an automatic affair. The hand of God is verily visible in all its affairs.

नक्तन्दिनस्य नियमो ग्रहाणां परितो रवेः।
भ्रमणं यद्भवत्येतत् यदृच्छा लब्धकं न हि।। ४६।।

दिन और रात की नियमितता, वह क्रम जिसमें ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं, यह सब केवल संयोग का परिणाम नहीं हो सकता है।

The regularity of the day and night and the order in which the planets move round the sun cannot be the result of mere chance.

सूर्याभिमुखिनो ग्रहाः वर्तन्तेऽस्थिरवृत्तयः।
उद्देश्यमवधानात् भवेदत्र परिस्फुटम्।। ४७।।

सभी ग्रह वस्तुतः एक ही दिशा और एक ही प्रकार के वृत्त में सूर्य की परिक्रमा करते हैं।

All the planets verily move round the sun in the same direction and in the same plane.

विस्मयो वो महानत्र जायते नात्र संशयः।
रेखाया अंकनं कृत्वा बहिर्विन्दुं प्रकम्पय।। ४८।।
तां रेखां परितो भ्रान्तिर्बिन्दोश्चैतादृशी भवेत्।
प्रान्तयोर्व्यवधानं तत् विन्दोश्च स्थास्यति समम्।। ४९।।

ग्रहीय गतियों के पीछे जो उद्देश्य और क्रम है उन्हें जानकर आप आश्चर्यचकित हो जाएंगे। कृपया एक रेखा खींचिए और उस रेखा से बाहर एक बिन्दु लीजिए। बाहरी बिन्दु इस प्रकार घूमे कि इस रेखा के अन्त और बिन्दु के बीच की दूरियों का योग सदैव समान रहे।

You will be wonderstruck to notice the purpose and order behind the planetary movements. Please draw a line and take another point outside this line. Let the outside point be revolving in such a manner that the sum of distances between the ends of this line and the outside point remains through out the same.

एतादृशा यथा ग्रहाः भ्रमन्ति सूर्यसन्निधौ।
किमेषा यदृच्छा स्याद्वा विमोरिच्छा भवेन्न किम्।। ५०।।

यही वह मार्ग है, जिसे प्रत्येक ग्रह अपने चक्कर में ग्रहण करता है। यदि यह ईश्वर की इच्छा न हो तो यह केवल संयोग से नहीं होगा।

This is the Earth which each planet observes in its rotations. If it be not the will of God, it cannot be a mere chance.

सर्वकालेषु विहितोऽस्ति विधात्रा नियमो ह्ययम्।
न तस्योल्लंघनं शक्यं केनचित् क्वचिदेवहि।। ५१।।

यह सर्वशक्तिमान ही है, जिसने एक बार सबके लिए नियम बना दिया है। ईश्वर की आज्ञा का कभी भी उल्लघंन नहीं हो सकता।

It is the Almighty who has dictated the law once for all. The command of God shall never be breached.

रवेश्चतुर्दिक्षु परिभ्रमेत्तु वर्षाणि त्रिशत्तु शनैश्चरस्य।
बृहस्पतेस्तु वर्षाणि द्वादश शुक्रस्य वै द्वे शतके दिनानि।।५२।।

तथा चतुर्विंशतिरेव देव ! चाशीतिरष्ठौ हि बुधस्य कालः।
सर्वत्र पूर्णा नियमानुवर्तिता कुतो नु दृश्या हि यथेच्छचाहिता।।५३।।

शनि सूर्य की परिक्रमा करने में 30 वर्ष लेता है, जबकि बृहस्पति इसे 12 वर्ष में ही पूरा कर लेता है। शुक्र सूर्य के चारों ओर घूमने में 294 दिन लेता है। कहीं भी संयोग का प्रश्न नहीं है।

Saturn must take 30 years to complete its revolution round the sun while Jupiter can complete it only in 12 years. Venus takes 294 days to revolve round the sun, while Mercury take 224 days. There is complete regularity everywhere. There is no question of chance anywhere.

अमावस्यातिथौ चन्द्रो ह्यन्तरा भूसूर्ययोरन्तरा।
अवस्थितो यदा स्यात्तु ग्रहणं तद्रवेर्भवेत्।।५४।।

जब अमावस्या के दिन चन्द्रमा पृथ्वी और सूर्य के बीच आ जाता है, तब सूर्यग्रहण होता है।

Whenever on new moon day, the moon will fall in the between the earth and sun, there will be solar Eclipse.

पूर्णिमायां यदा पृथ्वीरन्तरा शशिसूर्ययोः।
तदा भवति चन्द्रस्य ग्रहणं ध्रुवमेव हि।।५५।।

जब कभी पूर्णिमा के दिन सूर्य और चन्द्रमा के बीच पृथ्वी आ जाती है, तब चन्द्रग्रहण होता है।

Whenever on fullmoon day the earth will fall in between the sun and moon, there will be lunar eclipse.

इति श्रीवाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे
।। विश्वो नाम द्वितीयोऽध्यायः।।

इस प्रकार वाल्मीकिकृत 'श्रीरामसंवाद' का 'विश्व' नामक द्वितीय अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends the second chapter entitled "The Universe" of "the Discourses of Shri Rama" written by Valmiki.

।। तृतीयोऽध्यायः।।

तृतीय अध्याय

Chapter 3

जीवनरहस्यः

जीवन का उद्भव

The Origin of Life

सुमन्त उवाच–

यदत्र भवता ह्युक्तं कृपया सरसं वचः।
ज्ञानमयं महाराज ! कृतार्था स्मस्ततो वयम्।।१।।

सुमन्त ने कहा–

यह सभा ज्ञानमय वचनों के लिए महाराज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

This Assembly acknowledges its gratitude to your sacred Majesty for the words of wisdom you have uttered.

सुश्रुता भवतो वाणी प्रपंच विषया प्रभो।
सूर्य्यः को वा, ग्रहा के वा, का भवेद् वा वसुन्धरा।।२।।

हे प्रभु! हमने आपके वार्तालाप से यह जाना कि यह विश्व क्या है, सूर्य और ग्रह क्या हैं और पृथ्वी क्या है?

O Lord! we have heard your discourse on what this universe is and what the sun and planets are and what the earth is.

अधुना ज्ञातुमिच्छामः केन नराश्च जन्तवः।
गुल्मानि तखश्चैव जायेरन् भूमिमण्डले।।३।।

हम यह जानना चाहेंगे कि किस प्रकार मनुष्य और जानवर अस्तित्व में आए और कैसे पौधे और पेड़ उत्पन्न हुए?

We would like to know how the men and animals have come into being and how the plants and trees have grown.

कृपया वद भूपाल! नरः प्राणिनः उद्भिदः।
पृथिव्यां ते यदा भान्ति चान्यग्रहेशु किन्तथा।।४।।

कृपया यह भी बताइए कि जिस प्रकार हमसब मनुष्य जानवर और वनस्पति को पृथ्वी पर देखते हैं, वैसे ही क्या ये और ग्रहों पर भी हैं?

Kindly also tell us if men, animals and vegetation, as we see on the earth, are to be found on the other planets as well.

श्रीराम उवाच–

अतीव दुर्गमो ज्ञेयः पृथिव्यां जीवसम्भवः।
तस्माच्छृणुत मद्वाक्यमृषयः सुसमाहिताः।।५।।

श्रीराम ने कहा–

समस्त विषयों में 'पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति' सर्वाधिक जटिल है। इसलिए हे ऋषियों! तुम इसे ध्यानपूर्वक सुनो।

Sri Rama spoke:

Of all the subjects, one concerning the origin of life on earth is the most complicated one, therefore, O sages ! lend me your full attention.

तुंगे हिमवतः शृंगे गौरीशंकरनामके।
न किंश्विद्दृश्यते तत्र केवलं तुहिनं बिना।। ६।।

उद्भिमदः प्रणिनां नैव दृश्यन्ते तत्रशृंगके।
शैत्याधिक्यादसम्भवं जीवनं तत्र किंचन।। ७।।

हिमालय की उच्चतम श्रेणी, जिसे 'गौरीशंकर' कहा जाता है, पर तुम्हें केवल बर्फ ही दिखाई पड़ेगी, न तो वहाँ वनस्पति दिखाई देगी और न ही जानवर दिखाई पड़ेंगे, क्योंकि जीवन को असंभव करने वाली अत्यधिक शीतलता वहाँ है।

On the highest peak of the Himalayas, called the Gauri Sankara, you shall notice nothing but ice. Neither vegetation nor animals are to be seen, because it is too cold to maintain life.

उष्णतायाः प्रयोजनमस्ति जीवस्य रक्षणे।
अतिरिक्ते हि शैत्योष्णे जीवहानि ध्रुवं भवेत्।। ८।।

जीवन के अस्तित्व के लिए एक निश्चित तापमान आवश्यक है। जीवन को बनाए रखने के लिए अत्याधिक गर्मी और अत्यधिक शीतलता ठीक नहीं है।

A certain degree of heat is essential for the existence of life. Neither too hot nor too cold can suit for the maintenance of life.

अतिरेकात्तु शैत्यस्य धरणीमंगलौ बिना।
न केषुचिद् ग्रहेष्वेव जीवनस्य हि सम्भवः।। ६।।

श्रद्धेयं खलु मद्वाक्यं न जीवः शशिनि क्वचित्।
तथा बुधे तथान्येषु कथितो हेतुः प्राक् मया।। १०।।

मंगल और पृथ्वी को छोड़कर समस्त ग्रह जीवन के लिए अत्यधिक ठण्डे हैं। मेरा विश्वास करो चन्द्रमा बुध और अन्य ग्रहों पर जीवन नहीं है। मैं पहले इसका कारण बता चुका हूँ।

All the planets save Mars and earth, are too cold to maintain life. Believe me, there is no life on the moon, Mercury and other planets. I have already revealed the reason thereof.

ग्रहेषु धरणी योग्या नूनं स्यात् प्राणिधारणे।
स्वहस्तनिर्मिता धात्रा वक्तुं युक्तं भवेद्ध्रुवम्।। ११।।

सभी ग्रहों में पृथ्वी जीवन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। तुम कह सकते हो कि ईश्वर ने अपने ही हाथों पृथ्वी को बनाया है।

Of all the planets, the Earth is the most suitable one for life. God made the earth with His own hands, you can say.

आयुरुक्तं भुवः शास्त्रेष्वर्बुदद्वयवर्षकम्।। १२।।

शास्त्र 200 करोड़ वर्ष पृथ्वी की आयु निर्धारित करते हैं।

The scriptures lay down two hundred crores (means 10 millions) of years as the age of earth.

शनैर्जीवविकासो हि मन्थरादपि मन्थरः।
विवर्तितोऽप्यसंख्येषु स्तरेषु योनिजन्मसु।। १३।।

जीवन की उत्पत्ति धीमी, बहुत धीमी प्रक्रिया है। यह अनेक स्तरों से होकर गुजरती है।

The growth of life is a slow, very slow process. It has passed through several vecissitudes.

जीवस्य स्फुरणञ्चादौ समुद्र–सलिलान्तरम्।
मृत्तिकायां न शुष्के हि तथैव मन्यते जनैः।। १४।।

जीवन की प्रथम उत्पत्ति महासागर के जल में हुई सूखे प्रदेश में नहीं, जैसा कि मनुष्य मानते हैं।

Life had its first origin in the waters of ocean and not on the dry land as a man in the street may suppose.

जलजो हि निराकारो जीवो यज्ञे स्वभावतः।
अर्बुदाद्वत्सरेभ्यः प्राक् एतस्मिन् भूमिमण्डले।। १५।।

100 करोड़ वर्ष से भी पहले प्रथम निराकार जलीय जीवन अस्तित्व में आए।

The first unshaped beings of water must have come into existence more than 100 crores of years ago.

मत्स्यादेर्जन्मकालन्तु चत्वारिंशत्कोटिसमाः।
भाट्त्रिंशत्कोटिवर्षेभ्यः जाता गुल्मतृणादयः।। १६।।

मछली का अस्तित्व 40 करोड़ वर्ष से पहले का नहीं है, जबकि धरातल पर वनस्पतियां 36 करोड़ वर्ष से पहले की नहीं हैं।

The existence of fish is not more than 40 crores of years old,while small plants on land came into existence not more than 36 crores of years ago.

प्राचीनाः न वृक्षास्त्रिंशत्कोटिवत्सरकात् क्वचित्।। १७।।

पेड़ 30 करोड़ वर्ष से पुराने नहीं हो सकते।

The trees cannot be older than 30 crores of years.

भेकानां जन्मकालस्तु कोटयः पंचविंशति।
तत ऊर्ध्वं सरीसृपा कोटयः वर्षैर्न संशयः।। १८।।

मेढक 25 करोड़ वर्ष पहले अस्तित्व में आए और सरीसृप लगभग 5 करोड़ वर्ष पूर्व।

Frogs came into life 25 crores of years ago and reptiles about 5 crores of years later.

द्वादशकोटिवर्षेभ्यः न खगा प्राचीना क्वचित्।
स्तन्यपानां तथा चायुः षट्कोटिवर्षकल्पकम्।। १६।।

पक्षी 12 करोड़ वर्ष से पुराने नहीं हो सकते। गर्भ उत्पन्न होने वाले स्तनधारी अधिक से अधिक छः करोड़ वर्ष पुराने हो सकते हैं।

Birds cannot be older than 12 crores of years. The placental mammals can at best be 6 crores of years old.

अर्वाचीनो नरस्तेषामितरप्राणिनां खलु।। २०।।

प्रथमा नरसृष्टिर्हि पंचविंशतिलक्षकैः।
प्रागभवद्धि धराधामे सूरिभिरिति कल्प्यते।। २१।।

मनुष्य वनस्पतियों और प्राणियों की तुलना में बहुत अर्वाचीन है। विद्वानों ने यह गणना की है कि मनुष्यों का प्रथम समूह 25 लाख वर्ष से पहले अस्तित्व में नहीं आया।

Man is too modern as compared with plants and animals. The scholars calculate that the first group of men did not come into being more than 25 lacs of years ago.

जिज्ञासुचक्षुरासनात् ह्युत्याय वशिष्ठः स्वकात्।
नत्वा रामं नृपश्रेष्ठमिदं वाक्यमुवाच ह।। २२।।

प्रश्नसूचक दृष्टि के साथ ऋषि वशिष्ठ अपने आसन से उठे, प्रभु को नमन किया और कहा।

With a questioning look, sage Vasistha rose in his seat, bowed the Lord and spoke.

हे प्रभो! सृष्टिव्याख्यानात्तव जडजंगमप्राणिनाम्।
अजीवाज्जीवनिष्पत्तिरिति वादः प्रतिष्ठितः।। २३।।

महाराज ! सृष्टि के बारे में आपका विचार इस सिद्धान्त को बताता है कि समस्त सजीव जगत् निर्जीव पदार्थ से उत्पन्न हुआ है।

Sir, your exposition of the creation leads to the theory that all animals existence has come out of the lifeless matter.

वेदविरुद्धमेवैतदसतो जननं सतः।
कृपया संशयच्छेदं कुरुष्व मतिमन् प्रभो।। २४।।

यह उस वैदिक सिद्धांत के विपरीत है कि निर्जीव सजीव का कारण नहीं हो सकता। कृपया हमारे संशय को दूर कीजिए।

This contradicts the vedic principle that non- existence cannot be the cause of existence. Kindly reconcile and remove our doubts.

श्रीराम उवाच–

साधु साधु मुनिश्रेष्ठ! प्रश्नोऽयमतिसंगतः।
यत्नेन चिन्तनीयस्तु सुधीभिर्मुनिपुंगव!।। २५।।

श्रीराम ने कहा–

हे मुनिश्रेष्ठ! यह एक बुद्धिमता का प्रश्न है और विद्वानों के लिए सतर्क चिंतन के योग्य है।

O sage ! this is a wise question and really deserves a careful consideration of the scholars.

असतो न सतो जन्म नीतिरेषा सनातनी।
धातुर्नियममेतत्तु न कश्चिद्धातुमर्हति।। २६।।

अभाव में भाव की उत्पत्ति नहीं होती है, यह विश्व का मौलिक नियम है और कोई भी इस वैदिक नियम को नहीं तोड़ सकता।

Out of nothing comes nothing is the fundamental law of the universe and nobody can breach this divine law.

विश्वस्याधारभूतं यत् किञ्चिज्जड़संज्ञितम्।
न तत् चेतनं ज्ञेयं सर्वत्र तत्र जीवनम्।। २७।।

जिसे आप पदार्थ कहते हैं अर्थात् जो विश्व का आधार है, वह चेतन नहीं है, किन्तु निर्जीव भी नहीं है।

What you call matter, the substratum of the universe is of course not conscious, but is also not inanimate.

यथा वृक्षा हि बीजेषु सततमव्यक्ताः स्थिताः।
परमाणुषुतथा जीवप्रकाशोऽस्तितथाविधः।। २८।।

जैसे कि एक वृक्ष बीज में अविकसित अवस्था में है। जीवन परमाणु में अविकसित रूप में है।

Just as a tree is in the seed in an undeveloped form, life is there In the atoms in an undeveloped form.

आधार एव विश्वस्य परमाणुरिति स्मृतः।
पादपानां यथा बीजाः कल्पयन्त्यवधानतः।। २६।।

परमाणु सम्पूर्ण विश्व का सुरक्षा–कोष है, जैसे कि बीज वृक्ष का सुरक्षा–कोष है।

Atom is the repository of all the universe as the seed is the repository of tree.

सर्वशक्तिः बलं तेजो ध्रियते परमाणुना।
यदस्ति विश्वब्रह्माण्डे स्थावरजंगमात्मके।। ३०।।

परमाणु अपने अन्दर समस्त शक्ति और ऊर्जा रखता है, जो विश्व में प्रकट होती है।

Atom contains in it all the strength and energy that is manifest in the world.

विभाजकमणूनां हि कौशलं ज्ञायते यदा।
तत्तेजोमोचनायैव यदन्तर्निहितं भवेत्।। ३१।।

एकेनैव विघातेन विश्वं ध्वंस्तं तदा भवेत्।। ३२।।

यदि तुम वह विधि जानते हो कि कैसे एक परमाणु को तोड़ा जाता है और इसकी शक्तिशाली ऊर्जा को उन्मुक्त किया जाता है, तो तुम एक ही बार में सम्पूर्ण विश्व को विनष्ट कर सकते हो।

If you know the manner how to break an atom and release its potential energy, you can destroy the entire universe at one storke.

जगतीतलकेऽप्यस्मिन् शतधा परमाणवः।
योगात् पुनः पुनस्तेषां ब्रह्माण्डं परिकल्पितम्।। ३३।।

सैकड़ों प्रकार के परमाणु हैं और उनके एकत्रीकरण और संयोग से ही विश्व में प्रत्येक वस्तु का निर्माण होता है।

There are about one hundred kinds of atoms and it is their multiplication and combination that make everything in the world.

आदौ विकासः प्राणिनामुद्भिद्रूपेण भूतले।
तत्रानिलधातुसलिलैस्तु ह्येतेषां परिपोषणम्।। ३४।।

जीवन का प्रथम विकास वनस्पति के रूप में हुआ, जो कि अपने अस्तित्व के लिए हवा, पानी और खनिजों पर निर्भर होता है।

The first manifestation of life is in the form of vegetation which depends for its existence on air, water and minerals.

जंगमसृष्टिरतः पश्चादन्नमेषां लतादयः।
अन्त्याःसृष्टिर्नरास्तेपामाधाराश्चोद्भिदश्चराः।। ३५।।

इसके बाद प्राणिजगत आता है, जो वनस्पति को भोजन के रूप में उपभोग करता है। अन्त में मनुष्य विकसित होता है, जिसको अपनी उत्तरजीविता के लिए प्राणियों और वनस्पतियों को प्रयोग करने का दैवीय अधिकार है।

Next comes animals life which uses vegetation as its food. Ultimately there evolves man who has the divine right to use the animals and vegetation for his survival.

पारम्पर्य्येण वर्त्तेत विधात्रा निर्मितो विधिः।। ३६।।
जीवस्याचेतनात् सृष्टिरुद्भिदो जन्म प्राणिनः।

मानवः प्राणिनो जातो ह्येष न्यायः सनातनः।। ३७।।

इस प्रकार विश्व में दैविक विधान से निरन्तरता का कार्य करने का नियम है। तथाकथित निर्जीव पदार्थ से वनस्पति जीवन और वनस्पति से प्राणिजगत् और प्राणिजगत् से मनुष्य–यह प्राचीन नियम है।

Thus there is a law of continuity working in the universe, created by the Divinity. From the so-called inanimate matter to vegetable life and from vegetation to animals and from animals to man-this is the ancient law.

प्रकृतौ शून्यता नास्ति न नरः चरमोह्ययम्।
नरात् परं भवेदत्र तेजोमयप्राणिसंस्थितिः।। ३८।।

प्रकृति में शून्यता नहीं है और मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ नहीं है। मनुष्य से भी ऊपर तेजस्वी प्राणियों (देवों) की स्थिति है।

Natural abhors vacuum. Man is not the last word of creation after man there are Devas, the shining ones in the heaven.

सृष्टेरादौ तथान्ते च परमात्मा हि केवलम्।
एकमेवाद्वितीयं वै वेदे यत् स्तूयते सदा।। ३९।।

सृष्टि के आरम्भ और अन्त में केवल परमात्मा ही होता है। वह एक ही है और वह अद्वितीय है, जिसकी वेद में सदा स्तुति की जाती है।

The beginning and the culmination of the universe is God, the one, the mightiest and the highest whom the Vedas adore.

राक्षसादिभिर्यः प्रोक्तोऽसौ न पूजां समर्हति।
निष्फला सा मृषा पूजा नैषा साफल्यदायिनी।। ४०।।

वह ईश्वर जिसे राक्षस तथा अन्य जातियां बताती है वह असत्य है और पूजने योग्य नहीं है। उनकी असत्य पूजा निष्फल होती है और सफलता प्रदान करने वाली नहीं होती है।

The God that raksasas and other races speak of is a false one and is not to be worshipped.

श्रुतिरेव परं शास्त्रं सत्यमार्गप्रदर्शकम्।
एतदेवानुसर्तव्यमात्मकल्याणकामिभिः।। ४१।।

वेद ही श्रेष्ठ शास्त्र है, जो सत्यमार्ग का प्रदर्शक है। आत्मकल्याण चाहने वालों को इसी का अनुसरण करना चाहिए।

The Vedas are the only true scriptures and they alone can lead us to the light of God.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे
जीवनरहस्योनाम तृतीयोऽध्यायः

इस प्रकार वाल्मीकिकृत 'श्रीरामसंवाद' में 'जीवन रहस्य' नामक तृतीय अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends the third chapter, entitled "The Origin of Life" of the discourse of Shri Rama, written by Valmiki.

*****

चतुर्थोऽध्यायः
चतुर्थ अध्याय
Chapter 4

नरदेहः
मानव शरीर
Human Body

जाम्बवान् उवाच–

ईशेच्छया निमेषन्नु किन्न जातमिदं जगत्।
किं प्रमाणमतोऽन्यत्तत् कथय कृपया प्रभो।। १।।

जामवन्त ने कहा–

यदि सम्पूर्ण मानव शरीर की क्रिया ईश्वर की आज्ञा से पलक झपकते ही नहीं हुई तो इसके अन्य प्रमाण क्या है?

Jamavanta said:-

If all the creation has not aprung up within the twinkling of an eye at the command of God, what evidence is therefor it ?

श्रीभगवानानुवाच–

पुष्ट्यर्थं प्राणिनां दीर्घसमयस्य प्रयोजनम्।
चैतत् विवर्त्तवादस्य प्रमाणं सुमहत् खलु।। २।।

भगवान् ने कहा–

किसी चीज को अपने परिपक्व अवस्था में आने से पहले लम्बा समय ही विकास का सीधा प्रमाण है।

The Lord spoke :

The long periods of growth before anything matures in it self is a direct evidence of evolution.

दृष्ट्वा तु भ्रूणसंपुष्टिस्त्वयैतदवगम्यते।
तस्य वंशकथा ह्यत्र संक्षेपेण वितन्यते।। ३।।

द्वितीय यदि तुम भ्रूण के विकास को देखोगे तो पाओगे कि यह अपने पूर्वजों की वंश कथा को संक्षेप से विस्तृत करता है।

Secondly, if you watch the developments of embrys, you will see that it recapitulates its ancestral history.

तुल्यरूपामिप्रायेण सृज्यन्ते मेरूदण्डिनः।
अवयवानि हि सर्वाणि तथाङ्गप्रत्यंगानि च।।४।।

तृतीय सभी रीढ़धारी एक ही तरीके से निर्मित हैं उनके बारे में सभी विवरण एक जैसे हैं, तथा उनके अंग भी समान ही हैं।

Thirdly, all the vertebrates are built upon the same plan, similar in details and general in structure.

युगशतस्य हि संघर्षान्नरदेहस्य पत्तनम्।
एतत् सदावगन्तव्यमन्यथा बुद्धिविभ्रमः।।५।।

यह हमेशा याद रखना चाहिए कि मनुष्य का विकास युगों के संघर्ष का परिणाम है।

Bear in mind that the development of man is the outcome of the struggle for ages.

अतिरिक्तं विरोधि यत् प्रकृतिस्तद् विनाशयेत्।
जीवितुं प्रेरणा देवी या सैतत् परिरक्षति।।६।।

प्रकृति उन सभी चीजों को विनष्ट कर देती है जो इसके विरोध में खड़े होते हैं परन्तु उनमें जीवित एवं बने रहने की एकतीव्र इच्छा भी होती है जो उन्हें बचाती रहती है।

Nature is out to destroy everything that comes in its wake, but there is the divine urge to live and survive that checks its onslaughts.

अन्नहीने ह्याविच्छिन्ने युद्धे योग्यतमाश्च ये।
तिष्ठन्ति केवलं ते तु सर्वे नश्यन्ति चेतरे।।७।।

केवल योग्यतम ही इस सतत् एवं कभी न समाप्त होने वाले संघर्ष में जीवित रह सकते हैं जबकि दूसरों का विनाश हो जाता है।

In this continuous and never--ending struggle those who are fit can alone survive while others are destroyed.

अस्मिन् जीवनसंग्रामेऽसंख्याः जीवजातयः।
अयोग्यत्वात्तु विध्वंस्ता निःशेषविलयं गताः।।८।।

इस निरन्तर संघर्ष में असंख्य जानवरों की जातियां पूर्ण रूप से विलुप्त हो गयीं क्योकि वे संघर्ष को जारी रखने में असमर्थ थीं।

In this perpetual fight, innumerable animal species have become totally extinct, as they were not fit enough to keep on the struggle.

क्षीणा ये प्राणिनस्तेतु तैष्वैशीः महती कृपा।
महद्भयोऽप्यधिकतरा जनने शक्तिरर्पिता।।९।।

कमजोर जातियों के प्रति उदारता दिखाते हुए परमात्मा ने कमजोर जातियों को शक्तिशाली जातियों की अपेक्षा अधिक जननशक्ति प्रदान की है।

In his generosity towards the weaker species, God vouch safed larger reproductive capacity than to the stronger ones.

सिंही सूते तु पुत्रैकमथवा शावकद्वयम्।
मशको जनयति नूनं सन्तानं शतलक्षशः।।१०।।

शेरनी अधिक से अधिक एक या दो बच्चों को जन्म देती है जबकि मच्छरी लाखों को जन्म देती है।

A she lion gives birth, at best to one or two off-springs while mosquitoes reproduce in millions.

प्राणिमध्ये नु कृत्स्नं हि नराणां जीवनं भवेत्।
प्रतिस्तरे महाक्लेशैः सर्वदैतद् विवेष्टितम्।।११।।

आदमी का जीवन सबसे ज्यादा कठिन होता है। हर स्तर पर इसका जीवन कठिनाइयों से भरा होता है।

Life of man is the toughest of all. At each stage, he is beset with so many difficulties.

मुनिर्वशिष्ठः प्रपच्छ रामं तु पुण्यदं नरश्रेष्टकम्।
कथमस्यामवस्थायां धरण्यां वर्तते नरः।।१२।।

मुनि वशिष्ठ ने प्रश्न किया– महाराज! यदि हमारा वातावरण अस्तित्व के प्रतिकूल हो जाए तो व्यक्ति किस तरह से जीवित रह सकता है।

Sage vasistha interrogated- Your sacred Majesty, how could man manage to survive if our surrounding were inimical to our existence.

श्रीभगवानुवाचः–

नैतत् कल्पयितुं युक्तं परिवेषो य एष नः।
नितरां निर्म्मिमो ध्वसंस्तत्परः प्रतिकूलकः।।१३।।

भगवान् ने उत्तर दिया–

यह कहना उचित नहीं कि हमारा वातावरण पूर्ण रूप से प्रतिकूल होता है एवं हमारे लिए अनुकूल न होकर हानिकारक होता है।

The Lord answered:-

It is wrong to assume that our environment is absolutely cruel and does nothing but harm.

सर्वतो मानवैर्लभ्यमुत्तापो भोजनं जलम्।
आत्मरक्षा विधानाय शस्त्रं तक्षेन्नरः।।१४।।

अपने वातावरण से हम अपना भोजन, जल, प्रकाश एवं उष्णता प्राप्त करते हैं और जानवरों से अपनी रक्षा के लिए हथियारों का निर्माण करते हैं।

From our surroundings we get our food, drink, light and heat, and carve out weapons to subdue the beasts.

कृपामयेन धात्रा हि नरार्थं परिनिर्म्मितम्।।१५।।

जो कुछ इस दुनिया में विद्यमान् है वह परमात्मा द्वारा मनुष्य की भलाई के लिए दिया गया उपहार है।

Whenever is these is in the world is a gift from the All – bountious God for the benefit of man.

दैवीचेच्छा नरेष्वेव सर्वत्र दृश्यते भृशम्।
जीवन–वासना तेषां प्रेरयत्यात्मरक्षणे।।१६।।

सबसे ऊपर मनुष्य को जीने के लिए परमात्मा द्वारा दैवी इच्छा प्रदान की गयी है। आत्मरक्षा के लिए जीवन की इच्छा सभी आवश्यक हथियारों का परित्याग कर देती है।

Above all, man is gifted with the divine Will to live. The Will to live foregoes out all necessary weapons to assure the survival of man.

एकाकी न नरो जातो नैका नारी कदाप्यभूत्।
युक्त आसीत्तयोर्वासो धरण्यामादितः सदा।।१७।।

संघबद्ध–भावस्तेषां शशाक परिरक्षणे।
संग्रामं पशुभिः कृत्वा विरोधिशक्तिभिस्तथा।।१८।।

जब पुरुष अस्तित्व में आया तो न तो वह अकेला पुरुष था और न ही स्त्री थी बल्कि पुरुष और स्त्री इकट्ठे रहते थे और समूह में घूमते रहते थे। यह उनका सामूहिक जीवन था जिसने उन्हें जानवरों से और दूसरी विरोधी शक्तियों से लड़ने के योग्य बनाया।

When man first came into existence, it was not a single man or woman that was born. Men and women lived and moved in groups. It was their group life that enabled them to fight beasts and other untoward forces.

गोष्ठीभावो मनुष्याणां अनादिरिति कथ्यते।
विविक्तदेशसेवित्वं पेचकस्य नरस्य न।।१६।।

मनुष्य के अन्दर समूह में रहने की भावना अनन्त काल से ही है। मनुष्य एकाकी जीवन की खोज नहीं करता बल्कि यह स्वभाव उल्लू का होता है।

The instinct of gregariousness is there in man from eternity. It is not for man to seek solitude. That is the habit of an owl.

वास एकत्र–चिन्ता च परस्परोपकारिणौ।
नराणां साधना श्रेष्ठा स्वीकृता सूरिभिः सदा।।२०।।

मनुष्य का सही उद्देश्य सबके परोपकार के लिए एक साथ रहना तथा विचार करना है।

Live together and think together for the benefit of each and all is the true motto of human life.

रामयुक्त्या न सन्तुष्टो वशिष्ठो मुनिपुंगवः।
प्रणम्य रामचन्द्रायैतत् वाक्यमुवाच ह।।२१।।

मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठ इस तर्क से सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने राम को प्रणाम करके कहा–

Sage vasistha was not satisfied with the argument. He bowed unto the lord and addressed:

सप्रश्रयमिदं राजनुच्यते कृपया शृणु।
स्वार्थपरा नरा सर्वे स्वार्थकृताः न संशयः।।२२।।

महाराज! मैं यह हर प्रकार से स्वीकार करता हूँ कि मनुष्य स्वार्थी है और सबकुछ अपने लाभ के लिए करता है, जैसा कि हम उसे देखते हैं।

Your sacred Majesty, with all respect at my command, I admit that man as we see him, is a selfish creature and does everything for his own benefit.

प्रमाणं स्वार्थबुद्धेर्हि निर्वाणलाभ–कामना।
आत्मार्थमेव निर्वाणो न परार्थकदाचन।।२३।।

निर्वाण का विचार ही यह संकेत करता है कि मनुष्य एक स्वार्थी प्राणी है क्योंकि वह स्वयं के लिए निर्वाण चाहता है।

The very idea of Nirvana indicates that man is a selfish creature, because he wants salvation for his own self.

निर्वाणस्य भवेल्लाभः केवलमात्मकर्मणा।
चरभाहे तु नात्मीयां भ्रातरो बन्धवो न च।।२४।।

केवल अपने कर्मों से ही निर्वाण प्राप्त होगा। अंतिम दिनों में बचाव के लिए मनुष्य के अपने कर्म ही साथ देंगे न कि उसके भाई, सम्बन्धी और मित्र।

With their own acts, thou wilt attain salvation. Not thy brothers, relations and friends shall come to thy rescue on the day of reckoning but their own acts.

अस्मादृशां बहूनां तु स्थिरैषाधारणाभवेत्।
आत्मविद्या बुधैः प्रोक्ता कैश्चिदेपा महात्मभिः।। २५।।

अधिकांश लोगों के द्वारा इस तरह के विचारों को स्वीकार किया जाता है कई सन्तों और विद्वानों के द्वारा इस तरह के उपदेशों को 'आत्म विद्या' कहा जाता है।

Such are the notions entertained by most of our people. By several sages and scholars, such teachings are called, " Atmavidya."

एषा बुद्धिस्तु हीनेति निन्दिता भवता प्रभो।
प्राकृतायां नराणां तु स्वार्थबुद्धौ प्रतिष्ठिता।। २६।।

हे प्रभु! आप ऐसे विचारों की आलोचना कर सकते हैं परन्तु आप इस बात से इन्कार नहीं करेंगे कि मैं स्वार्थपन की मौलिक भावनाओं पर आधारित हूँ।

O Lord, you may condemn such notions, but you shall not deny that they are based upon the fundamental instinct of selfishness.

किमहं मन्येऽस्माकं कर्माणि यानि कानिचित्।
प्रतिष्ठानानि सर्वाणि स्वार्थमूलानि सर्वतः।। २७।।

इसलिए मैं यह मानता हूँ कि हमारी सभी संस्थाएं और कार्य स्वार्थमूलक हैं।

May I therefore suggest that all our institutions and actions are based upon the idea to benefit our own self.

श्रीराम उवाचः—

एतद्यत् कथितं वाक्यं त्वयैतन्नोपपद्यते।
तव मानुष्यप्रज्ञायारेतद्धानिकरं ध्रुवम्।। २८।।

श्रीराम ने कहा—

हे ऋषि! आपने ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जो आपकी बुद्धि और प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं है।

Shri Rama said :-

O sage ! you have talked a language which does not befit your intelligence and dignity.

नरजीवनसम्पर्के तव प्रज्ञास्ति हीदृशी।
अनुदारा जघन्या च न मया चिन्तिता कदा।। २९।।

मैं आशा नहीं कर सकता था कि आप ऐसे अनुदार एवं प्रतिष्ठारहित विचार मानव—जीवन के बारे में रखते हैं।

I could never expect that you held so uncharitable and undignified view of human life.

भवतो बोधनार्थं तु व्याख्यास्यामि सुविस्तरम्।
नरजीवनवृत्तान्तं श्रूयतां मुनिपुंगव।। ३०।।

हे मुनिश्रेष्ठ! मनुष्य के बारे में सत्य को समझने के लिए मैं विस्तार से व्याख्या करूँगा।

O sage ! to make you understand the truth about man. I must explain at some length which man is placed.

यदिन्द्रियैः परिग्राह्यं शरीरं मानवस्य तत्।
अस्थिमयः कंकालोऽयं पेशीभिः परिवेष्ठितः।। ३१।।

अपनी बाह्य इद्रियों से मनुष्य जो कुछ ग्रहण करता है वह उसका शरीर है। यह शरीर हड्डियों का एक ढांचा तथा मांसपेशियों की एक प्रणाली से युक्त है।

With your outer senses what you perceive of man is his body; our body is a skeleton of bones and a system of muscles.

अस्थीनि नरदेहेषु षड्धिकं शतद्वयम्।
सन्ति द्वाविंशतिस्तेषां मनुष्यशिरसि ध्रुवम्।। ३२।।

संख्यकानि षडविंशतिः विद्यते मेरुदण्डके।
कण्ठे चैकं नु पंजरे चतुर्विंशतिः संख्यकम्।। ३३।।

हृदयेऽस्थिमवेदेकं संयुक्तानि हि येन वै।
सर्वाणि पंजरास्थीनि भवेयुर्नात्र संशयः।। ३४।।

गठितौ बाहुहस्तौ च चतुःषष्ठिभिरस्थिभिः।
द्विषष्ठि तत्र वर्त्तन्तेऽस्थीनि पादमूलके।। ३५।।

त्रीण्यास्थीनि हि वर्तन्ते प्रतिकर्णं न संशयः।
इच्छाधीनाः स्वयंकृताः पेश्यस्तु द्विविधाः स्मृताः।। ३६।।

मनुष्य के शरीर में 206 हड्डियां पायी जाती हैं, जिसमें से 22 खोपड़ी तथा 26 रीढ़ में पायी जाती हैं। गले में एक हड्डी तथा 24 पसलियों में पायी जाती हैं। वास्तव में छाती की एक हड्डी से ही पसलियां जुड़ी रहती हैं। हमारे बाजू

और हाथ 64 हड्ड़ियों से बने हुए हैं जबकि टांगो और पैरों में 62 हड्डियां हैं। प्रत्येक कान में तीन हड्डियां हैं।

Man has two hundred and six bones, out of which 22 form the skull and 26 bones our back-bone. There is one bone in the throat, while 24 bones make the ribs. There is verily one chest bone to which the ribs are attached. Our arms and hands are formed by 64 bones, while legs and feet have 62 bones. Each ear has, doubtless, three bones.

इच्छाधीना तु पेशी या सेच्छया कर्मतत्पंरा।
अनपेक्षा स्वयंकृता स्वयं क्रियारता सदा।। ३७।।
हस्ते यदि च या पेश्यः कर्त्तरिच्छानुचालिताः।
इच्छाधीना तथा चेयं स्वकृतोदरनेत्रयोः।। ३८।।

मांसपेशियां दो तरह की हैं–ऐच्छिक और अनैच्छिक। हमारे हाथों और पैरों में ऐच्छिक मांसपेशियां हैं जो हमारे आदेशों पर कार्य करती हैं जबकि अनैच्छिक मांसपेशियां जो कि हमारे आंखों में तथा पेट में हैं तथा बिना हमारे ज्ञान के चलती हैं।

Muscles are of two kinds, voluntary and involuntary. Voluntary muscles such as those in hands and feet work at our bidding while involuntary muscles such as in eyes and stomach go on working without knowledge.

सर्वाण्यस्थीनि पेश्यश्च देहमारं वहन्ति तु।
ऋजुस्थितिः शरीरस्य सम्भवत्यतएव हि।। ३६।।

मांसपेशियाँ और हड्डियाँ हमारे शरीर के वजन को ढोती हैं और इसके सीधे आकार के लिए उत्तरदायी होती हैं।

The muscles and bones carry the weight of the body and are responsible for our erect posture.

चर्वितं कर्त्तितं दन्तैर्यत्खाद्यं भुज्यते नरैः।
लालयास्य भवेदत्र मिश्रितं जायते हितत्।। ४०।।

जो भोजन हम खाते हैं उसे दांतो के द्वारा काटा और चबाया जाता है और जहां अम्लरस के द्वारा उस पर कार्य किया जाता है।

The food that we take is cut and chewed by the teeth and is acted upon by saliva in the mouth.

कण्ठनाल्या विशन्त्येव खाद्यानि जठरान्तरे।
अम्लरसैस्तु चैतानि पच्यन्ते ह्यतिसत्वरम्।। ४१।।

आधार नली के माध्यम से गले के नीचे भोजन पेट में जाता है जहां अम्लरस के द्वारा इस पर कार्य किया जाता है।

Down the throat through the food pipe it goes into the stomach where it is acted upon by the sour juice.

पक्वाशये विशन्त्येव पच्यमानाशयात् पुनः।
यकृतः रसयुक्तोऽभूत् प्रवेशद्वारे हि तत्।। ४२।।

पेट से भोजन आंतों में जाता है जहाँ पर आंतों के मुख पर यह पित्त के साथ मिल जाता है।

From the stomach it enter into intestines where at the mouth of intestines, it is mixed with bile.

अन्नरसैः पक्वाशये निष्पन्नं पचनं यदा।
सुपबचः सारभागो हि देहपुष्टिं प्रकुर्वते।। ४३।।

आंतों में, आंतड़ियों से सम्बन्धित रस भोजन पर कार्यवाही करता है और इस तरह से भोजन का मुख्य भाग पचकर शरीर द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है।

From the stomach it enters into intestines where at the food and thus the vital parts of foods are digested and absorbed in the body.

मलरूपेण संत्यक्तं खाद्यं रसैर्न पच्यते।। ४४।।

वह भोजन जिस पर रस काम नहीं करता, शरीर के द्वारा मल के रूप में बाहर निकाल दिया जाता है।

Food on which no juice acts is thrown away as a refuse by the body.

चलद्रसेन सर्वत्र यथा वृक्षस्य पोषणम्।
रक्तसंचालनात्तथा नरदेहस्य पोषणम्।। ४५।।

मनुष्य के शरीर का पोषण रक्त के संचार द्वारा उसी तरह से होता है जिस तरह से जूस द्वारा पौधे की वृद्धि का पोषण किया जाता है जो कि इसके सभी भागों में संचालित होता रहता है।

As a plant is maintained in its growth by the sap which circulates to all its parts, man is maintained by the circulation of blood.

हृद्यंत्रः शोणिताधारः द्वावंशावस्य विद्येते।
दक्षिणवामसंज्जनया तस्य निर्वचनं भवेत्।। ४६।।

रक्त का रक्षक हृदय होता है। इसके दो भाग होते हैं जिसे हम दायां और बायां प्रकोष्ठ कह सकते हैं।

Heart is the custodian of blood. It has two parts which we may call right chamber and left chamber.

शोणितं सर्वनाडीषु दक्षिणांशात् प्रचाल्यते।
स्नायुभिरति–सूक्ष्माभिर्देहातिगाभिरेव च।।४७।।

विशन्ति वामके रक्तान्यशुद्धानि च देहतः।
सर्वांशाभ्यो हि चैतानि प्रणालीभ्यः पयो यथा।।४८।।

हृदय के दायां प्रकोष्ठ शुद्ध रक्त को छोटी रक्त वाहिनियों के माध्यम से शरीर के सभी भागों में पहुंचाता है जबकि बायां प्रकोष्ठ अशुद्ध रक्त को शरीर के सभी भागों से वापस हृदय तक पहुँचाता है।

The right chamber of heart pumps out pure blood to all the parts of the body through minute vessels, while the left chamber receives the impure blood back from all the parts.

वामभागात् हृदस्तु हि विशन्ति श्वासनालीषु।
शुद्धानि सन्ति रक्तानि पुनरायान्ति तत्र हि।।४९।।

हृदय के बायें भाग से रक्त फेफड़ों में जाकर शुद्ध होता है और हृदय के दायें भाग में वापस आ जाता है।

From the left chamber of the heart, blood goes into the lungs where it is purified and comes back into the right chamber of the heart.

गतिरेवंविधा नूनं चलति शरीरे सदा।
विशुद्धरक्तप्राप्तिस्तु संभवेदीदृगेव हि।।५०।।

The circle thus moves on and the body goes on getting continuously the pure supply of blood.

अनिलं पवित्रं श्वासयन्त्रादेवोपलभ्यते।
शोणितशुद्धिरस्माकमेतस्माद्देहके भवेत्।।५१।।

इस प्रकार से शरीर में गति होती रहती है और शरीर को निरन्तर रक्त मिलता रहता है।

It is through lungs that we get the supply of pure air for the purificaion of blood.

मुखेन नासिकाभ्यां च श्वासं गृह्णन्ति जन्तवः।
श्वासयन्त्रे हि तन्नाल्या चैतस्य गमनं भवेत्।।५२।।

कति शतानि चाधारास्तिष्ठन्ति श्वासयन्त्रयोः।
बहिस्थं पवनं ते च गृह्णन्ति शरीरे सदा।।५३।।

नाक और मुँह के माध्यम से हम वायु को अंदर लेते हैं तथा सांस नली के द्वारा यह फेफड़ों में जाती है जिसका निर्माण छोटी–छोटी वायु की थैलियों से होता है।

We take In the air through nose and mouth and through wind pipe it goes into lungs which consists of several hundreds of small air bags.

विशुद्धवायुना रक्तं शुद्धं भवति सत्वरम्।
प्रश्वासेन बहिर्यान्ति चाविशुद्धा समीरणा।।५४।।

शुद्ध वायु रक्त को शुद्ध कर देती है और इसके बाद अशुद्ध वायु हमारी वाहक श्वास के द्वारा शरीर से बाहर चली जाती है।

The pure air purifies the blood and then the impure air goes out, of the body through our outer breath.

विषानि यानि देहे तु बहिर्गच्छन्ति तानि वै।
मूत्रं भूत्वा तन्नाल्या स्वेदो भूत्वा तु चर्म्मणा।।५५।।

शरीर का विष पसीने के माध्यम से त्वचा द्वारा और मूत्र के रूप में गुर्दों के द्वारा बाहर फेंक दिया जाता है।

The poisons in the body are thrown out by the kidneys in the form of urine and by the skin through sweat.

सर्वदेहेषु मस्तिष्कं श्रेष्ठमित्यवधार्य्यते।
क्रियासर्वास्तु चैतेन शरीरे परिचालिताः।।५६।।

शरीर के सभी भागों में से मस्तिष्क सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। यह शरीर के सभी कार्यों को नियंत्रित करता है।

Of all the parts of the body, brain is the most important. It controls everything that is done in the body.

मस्तिष्कस्य त्रयो ह्यांशाः सम्मुखपृष्ठपार्श्वकाः।
चाल्यन्ते सम्मुखांशेन, ज्ञानेन्द्रियाणि तस्य तु।।५७।।

पार्श्वेण हस्तपादं तु पृष्ठेन पचनक्रिया।
रक्तसंचालनं श्चैव श्वासप्रश्वास एव हि।।५८।।

मस्तिष्क के तीन भाग होते हैं। अग्र मस्तिष्क, पृष्ठ मस्तिष्क, पार्श्व मस्तिष्क। अग्र मस्तिष्क हमारे इन्द्रियों के अंगों को नियंत्रित करता है, पार्श्व मस्तिष्क हमारे हाथ और पैरों की गतिविधियों को नियंत्रित करता है जबकि

पृष्ठ मस्तिष्क पाचन, श्वसन और रक्त के संचार को नियंत्रित करता है।

Brain has three parts. Front brain, side brain and back brain. The front brain controls our sense organs. The side brain controls the movements of our hands and legs, while the back brain controls the circulation of blood, respiration and digestion.

ज्ञानेन्द्रियाणि पंचवै यैर्ज्ञानमवचीयते।
चक्षुः कर्णजिह्वात्वचो नासिका चेति पंचकम्।। ५६।।

आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा में पाँच ज्ञानेन्द्रियां हैं जो ज्ञान के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करती हैं।

Eye, ear, nose, tongue and skin are the five sense organs which act as gateways of knowledge.

प्रेक्षते चक्षुषा जीवः कर्णेन शृणुयात्तथा।
नासया गन्धविज्ञानं स्वादस्य जिह्वया तथा।। ६०।।

आँखों से देखना, कानों से सुनना तथा नाक से सूँघने का कार्य किया जाता है। जिह्वा के माध्यम से स्वाद का अन्दाजा लगाया जाता है जबकि त्वचा के माध्यम यह पता लगाया जाता है कि कोई चीज कितनी गर्म अथवा ठंडी है।

Through eyes we see and through ears we hear. Through nose we smell. Through tongue we ascertain the taste, while skin tells us how hot or cold a thing is.

एतैर्ज्ञानेन्द्रियैर्योगाल्लभ्यते ज्ञान–संततिः।
यत्किंचिद्ज्ञायते विश्वे ज्ञानेन्द्रियाणि कारणम्।। ६१।।

इन्ही ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से विश्व के ज्ञान को हम एकत्र करते हैं। जो कुछ हम जानते हैं उसे हमने इन्हीं ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त किया है।

It is through these sense organs that we collect all the knowledge of the world. What we know, we have received through these sense organs.

विषयावलम्बनाद् ज्ञानमेतैः शिरसि नीयते।
ज्ञानवाहि नाड़ीयोगान्नान्यथा ज्ञानसम्भवः।। ६२।।

ज्ञानेन्द्रियां वस्तुओं के सम्पर्क में आती हैं और सन्देश नाड़ी तंत्र से मस्तिष्क की ओर जाता है। मस्तिष्क से ही वस्तु का ज्ञान होता है।

The sense organs come into contact with the objects and the message is carried through nerves to the brain, it is in the brain that the objects is perceived.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे
नरदेहो नाम चतुर्थोऽध्यायः।

इस तरह से वाल्मीकिकृत लिखित श्रीरामसंवाद में 'मानव शरीर' नामक चतुर्थ अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends the fourth chapter entitled "Human Body" of the discourses of Shri Rama written by Valmiki.

*****

|| पंचमोऽध्यायः ||

अध्याय पंचम

Chapter 5

मानवात्मा

मनुष्य की आत्मा

The Human Soul

वशिष्ठ ऋषिरुवाच–

जातो मनसि सन्देहो भवद्वाक्यात् परन्तप।
न कोऽप्यात्मास्ति देहेऽस्मिन् मस्तिष्कमस्ति केवलम्।।१।।

वशिष्ठ ऋषि ने कहा–

महाराज! आपके शब्दों से यह सन्देह उत्पन्न होता है कि क्या मनुष्य में आत्मा नहीं है, केवल मस्तिष्क ही होता है?

Sage Vasishtha said:-

Your Majesty, your words lead us to doubt if there is no soul but brain.

श्रीराम उवाच–

मस्तिष्कं जडं विज्ञेयं ज्ञानस्य यन्त्रमेव हि।
तथानुभव–कार्य्यस्य कर्मणस्तु तथैव च।।२।।

श्रीराम ने उत्तर दिया–

मस्तिष्क एक जड़ वस्तु है। जो ज्ञान, अनुभव और कार्य करने की प्रक्रिया में केवल यंत्र है।

Shri Rama spoke:

Brain is a material object. It is amere instrument in the process of knowing, feeling and acting.

सर्वस्याभ्यन्तरे ह्यात्मा व्यापारे दैहिके सदा।।३।।

वस्तुतः स हि कर्तात्र यो जीवत्येजति त्विह।।४।।

सभी भौतिक प्रक्रियाओं के पीछे एक आत्मा होती है जो सक्रिय कार्यकर्त्ता है। वह सदैव बनी रहती है, गति करती है एवं कार्य करती है।

Behind all the physical processes, there is a soul, the active agent, that lives, moves and acts.

आत्मा वै मननं सर्वं ज्ञानानुभूतिकर्मकम्।
आत्मनोऽवयवं सर्वं ज्ञातव्यं सुसमाहितै।।५।।

आपकी मानसिक प्रक्रिया आपकी आत्मा है। आपका ज्ञान, अनुभूति और कर्म आत्मा के ढांचे का निर्माण करते हैं।

Your mental processes are your soul. All your knowing, feeling and acting constitute the structure of soul.

मनसः प्रक्रियाः सर्वा न तुल्या बाह्यवस्तुभिः।
ह्येकविधा हि प्रक्रिया न तासु भिन्नता क्वचित्।।६।।

मानसिक प्रक्रिया बाह्य संसार की वस्तुओं की तरह नहीं है। वास्तव में वे एक प्रक्रिया का निर्माण करते हैं।

Mental processes are not like objects in the outside world. Verily they constitute one process.

आदित्याद्रश्मयो यद्वत् विच्छुरन्ति दिशि दिशि।
मानसिक्यः क्रियास्तद्वज्जायन्ते ह्यात्मनः सदा।।७।।

रश्मयोऽर्काद्यथाऽभिन्नास्तथैव मनसः क्रियाः।
आत्माऽभिन्ना भवन्त्येता जानीहि मुनिपुंगव!।।८।।

जिस तरह से सूर्य से किरणें निकलती हैं उसी तरह से मानसिक प्रक्रियायें आत्मा से निकलती हैं, जिस तरह से किरणें सूर्य से भिन्न नहीं होती उसी तरह से मानसिक प्रक्रियायें आत्मा से अलग नहीं होती हैं। हे ऋषि! विश्वास कीजिए कि आपकी मानसिक प्रक्रियायें ही आपकी आत्मा है।

As rays emanate from the sun, the mental processes emanate from soul, as rays not different from the sun, the mental processes are not different form soul. O sage, believe it that your mental processes are your soul.

देहेन्द्रियाणि भिन्नानि दृष्टिश्रवणयोर्यथा।
मानसिकक्रियार्थं तु भिन्नं नास्ति परस्परम्।।९।।

यह मानना गलत है कि आत्मा विभिन्न मानसिक क्रियाओं का सम्पादन स्वतन्त्र अंगों से करता है जिस तरह से शरीर में देखने और सुनने के लिए भिन्न–भिन्न अंग हैं।

It is wrong to suppose that a soul has some different independent parts for the performance of different mental

processes just as a body has different organs of sight and hearing.

आत्मा पूर्णः सदा ज्ञेयो ह्यखण्डोऽंशविवर्जितः।। १०।।
द्रुतं वहन्नदीस्रोतास्तुल्यमंशं विनाऽस्त्मम्।। ११।।

आत्मा अखण्ड है। इसके अंग नहीं हैं। यह तीव्र और निर्वाण गति से प्रवाहित होने वाली जल की धारा है।

Soul is one united whole, if has no parts, it is like a swift, unbreaking, flowing stream of water.

किंत्वया ह्यः कृतं कर्म चोर्द्ध्वर्षद्वयात्तथा।
अनुभवोस्तव जायेत ह्यच्छिन्नधारेव स्मृतिः।। १२।।

थोड़ी देर के लिए याद करने की कोशिश करो तो पाओगे किसी विशेष अवसर पर कल या दो वर्ष पहले जो कुछ तुमने किया था वह तुम्हारी स्मृति में अविछिन्न धारा के समान विद्यमान है।

Try to recapitulate for the while what you did yesterday or two years ago, on a particular occasion and you will feel that your remembrance is a part of one connected whole.

चित्तस्यैक्यं यदा नष्टं प्रकृतेर्व्यक्तयस्तदा।
भूतेनाक्रान्तमेव तं वदन्ति प्राकृताः जनाः।। १३।।

यदि व्यक्ति की मानसिक एकता में कहीं दरार है तो वह सामान्य व्यक्ति नहीं रहेगा। ऐसे लोग भूत द्वारा नियन्त्रित माने जायेंगे।

If there is a break in the mental unity of a person, he shall no longer be a normal man. Of such a person, people generally say that he is possessed by a ghost.

स्मृतिरेखे हि द्वे नूनं ततो वाण्यधिकाः मुने।
तादृशस्य जनस्य स्युर्द्वैधीभावस्तथात्मनः।। १४।।
द्विधाभूतो यदा चात्मा तदुन्मादस्य लक्षणम्।
एकोऽखण्डो भवेदात्मा स्वस्थस्य मानवस्य हि।। १५।।

यदि व्यक्ति में दो स्मृति रेखाएं चलती हैं, तो उसकी आत्मा विभक्त अभिकरण है विभक्त आत्मा पागलपन का लक्षण है। सामान्य सजीव व्यक्ति की आत्मा अविभक्त होती है।

If in a man , there run two memory lines, his soul is a divided agency. Divided soul is the symptom of madness. The soul of a normal living human being is one undivided whole.

प्रकृतिश्च क्रिया चैवात्मनः कार्य्यं भवेत् सदा।
विज्ञानमनुभूतिश्च कार्य्यस्य हि सहायके।। १६।।

स्वभाव और क्रिया आत्मा के कार्य हैं, ज्ञान और अनुभूति कार्य में सहायक हैं।

The nature and function of soul is action, knowledge and emotions are handmaids to action.

क्रियाशीलो नरः सर्वो जाग्रद्वा निद्रितोऽपि वा।
मुहूर्त्तं जीवनं तस्य न भवेत् कार्यमन्तरा।। १७।।

मनुष्य सोते–जागते सर्वदा क्रियाशील रहता है। उसके जीवन में ऐसा कोई क्षण नहीं होता, जब वह कार्य नहीं करता है।

Man is always acting whether awake or asleep. There is no moment of his life when he does not act.

सहजस्ता प्रवृत्तिस्तु दत्ता भगवता हि या।
कर्मणि चोदना तस्मांत् सम्भवेत्तु निरन्तरम्।। १८।।

परमात्मा ने मनुष्य को कुछ विशिष्ट स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ प्रदान की है जो उसे हमेशा कार्य करने के लिए प्रेरित करती रहती हैं।

God has gifted man with certain inborn urges which impel him always to act.

खाद्यप्रेप्सा मनुष्याणां प्रथमा वृत्तिरुत्तमा।
क्षुत्पिपासे नराणां हि प्रवृत्तिबलवत्तमे।। १६।।

इन सभी प्रवृत्तियों में से एक मौलिक प्रवृत्ति भोजन प्राप्त करने की है। भूख और प्यास मानव जीवन की सबसे शक्तिशाली प्रवृत्तियां हैं।

The most fundamental of all these urges is the urge of food seeking. Hunger and thirst are the most powerful tendencies of human life.

प्रजनन–प्रवृत्तिस्तु तथैव प्रबला भवेत्।
सर्वं त्यक्तुं शिशोरर्थे माता शक्या तथा भवेत्।। २०।।

प्रजनन–प्रवृत्ति भी मनुष्य में इतनी ही सशक्त है। तत्पश्चात् मातृ–पितृ–प्रवृत्ति है जिसके अन्तर्गत माता अपने बच्चे के लिए आत्म त्याग का कोई भी कार्य कर सकती है।

Equally strong is the instinct of reproduction. Then there is the parental instinct which makes the mother do any act of self sacrifice for her baby.

विपत्प्राप्तौ प्रवृत्तिस्तु नरस्य स्यात् पलायने।
विरक्तिर्यत्र तस्य स्यान्न तत्र वर्तते नरः।। २१।।

जब मनुष्य को विपत्ति की अनुभूति होती है तो उसमें उससे भागने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। जहाँ से व्यक्ति को विरक्ति होती है, वहाँ वह नहीं टिकता है।

Whenever man senses danger, he instinctively flees from it. When he feels disgust, he shrinks from it.

समर्पण–विकासाभ्यां वृत्तिभ्यां चालितो नरः।। २२।।

मनुष्य आत्म–समर्पण और विकास की प्रवृत्तियों से संचालित होता है।
Man is moved also by self-display and self-submission.

ख्यापनायात्मनः श्रेष्ठं तुल्येषु चावरेषु हि।
सुस्पष्टवासना तस्य श्रेष्ठेष्वपि क्वचित् क्वचित्।। २३।।

अपने से बराबर और कनिष्ठ व्यक्तियों के ऊपर अपनी इच्छाओं को थोपने की इच्छा व्यक्ति में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है और कहीं–कहीं उसकी यह इच्छा वरिष्ठों के ऊपर भी दिखाई देती है।

There is a clear desire in man for asserting his self over his inferiors and equals and not unoften displays himself before his superiors.

श्रेयसः सविधे तद्वद् धर्मोपदेशकस्य च।
विनीतास्य प्रवृत्तिः स्यात् स्वत एव गरीयसी।। २४।।

मनुष्य अपने से बड़ों और धर्मोपदेशकों के समक्ष आत्म–समर्पण की भावना से संचालित होता है।

So also is man moved by the instinct of self-submission when he faces his superiors and religious preceptors?

एकीभूय निवासेऽस्य वृत्तिरन्या भवेत् स्वजा।
संघबद्धोऽस्य वासः स्यान्न विविक्तं कदाचन।। २५।।

समूह में रहने की एक जन्म–जात प्रवृत्ति होती है जिससे हम समूह में स्वाभाविक रूप से रहते हैं न कि एकाकीपन में।

There is the inborn urge of gregariousness that we instinctively live in groups and not in solitude.

सह जाता हि वासना द्रव्यसंग्रहकारिणी।
बुद्धिहीनः शिशुश्चापि संगृहणात्येव पुत्तली।। २६।।

हमारे अन्दर धन–संग्रह करने की एक जन्मजात प्रवृत्ति होती है। यहाँ तक

कि एक बच्चा जो कुछ भी अपने स्वार्थ के बारे में नहीं जानता, वह भी खिलौनों और गुड़ियों के रूप में धन इकट्ठा करता है।

We have an inborn desire of acquisition. Even a child who knows nothing about his interests collects his wealth of toys and dolls.

सैकतं शिशुगेहं स्यान्नीडं पक्षिगृहं भवेत्।
निर्म्माणे सहजा वृत्तिर्हेतुरस्य भवेत् पुनः।। २७।।

आपने बच्चों को रेत का घर और पक्षियों को घोसलें बनाते हुए देखा होगा, यह निर्माण करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण होता है।

You must have seen the children making houses of sand and the birds making their nests. It is due to our inborn instinct of construction.

दशप्रवृत्तयो मौलाः प्रेरयन्तीह कर्मसु।
ताभिर्हीनो नरो यः स्यान्नरः स न हि कथ्यते।। २८।।

इस तरह से दस मूलभूत इच्छाएं होती हैं जो मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं। इन इच्छाओं के बिना मनुष्य मनुष्य नहीं होगा।

Thus there are ten fundamental desires that move men to action. without these desires, man would be no man.

घृणापात्रं विजानीयादेतद्वृत्तिविवर्ज्जितम्।
अयोग्यं नर–संज्ञायाः पण्डितैर्विनिगद्यते।। २९।।

अगर ये इच्छाएं किसी मनुष्य में नहीं होगी तो ऐसे व्यक्ति से हम नफरत करेंगे और उसे मनुष्य कहलाने के काबिल नहीं समझेंगे।

If these desires are missing in any person, we hate such a being and consider him unworthy of being called a man.

एतासां वासनानां तु बाधा स्यात् प्रेरणे यदि।
नरस्तदा भवेत् क्रुद्धो विधात्रा विहितं हितत्।। ३०।।

और इसके विपरीत यदि हमारी इच्छाओं के पूर्ण होने में बाधा उत्पन्न की जाती है तो परमात्मा ने हमें क्रोध के साथ प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति भी प्रदान की है।

On the other hand, the almighty has furnished us with the tendency to react with anger if we are not allowed to have our own way in the fulfillment of these desires.

क्रोधश्चेच्छा–विघाते यो वृत्तिरेकादशी तु सा।
स्पष्टा क्रिया भवेत्तस्याः स्वाभाविकी नरस्य वा।। ३१।।

क्रोध के साथ प्रतिक्रिया को व्यक्त करने की प्रवृत्ति को आप ग्यारहवीं वृत्ति कह सकते हैं। यह एक स्वाभाविक वृत्ति होती है और इसका प्रयोग बिल्कुल स्पष्ट है।

You may call the tendency to react with anger as the eleventh instinct. It is an inborn urge and its use is very clear to us.

यदि शत्रुर्बहून् विघ्नान् जनयेदीप्सितस्य नः।
मध्यस्थाश्च वयं स्यामः उन्नतिस्तु कथं भवेत्।। ३२।।

क्रोधस्यभि समावृत्तिः सम्पदां हेतुरिष्यते।
फलमस्य भवेत् सर्वं प्रासादा राजमार्गकाः।
उपनद्यश्च खनिजानि स्वर्णादीनि तथैव हि।। ३३।।

यदि हम अपने शत्रुओं को अपने वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न करने देते हैं तो हम सभ्य नहीं होते। मनुष्य की प्रगति उसके क्रोध करने के प्रवृत्ति के कारण हुई है। क्रोध करने की इच्छा ने ही हमें महल, सड़कें, नहरें और सोना–चांदी की खानें प्रदान की है।

Had we allowed our enemies to retard us in the achievements of our desired goal, we would have had no civilisation. Man's progress has been caused by the instinct of pugnacity. Pugnacity has given us these palaces, roads, canals and mines of gold and silver.

अस्माद् हीनो नरः कुर्य्यात् शत्रुभ्यश्चात्मविक्रयम्।
समाजमंगलं किंचिन्नभवेद्धै कदाचन।। ३४।।

क्रोध करने की प्रवृत्ति से रहित मनुष्य अपने शत्रुओं के समक्ष आत्म–समर्पण कर देता है और इससे अपने समुदाय की कोई भलाई नहीं होती।

Without the instinct of pugnacity we would have submitted meekly to our enemies and would have done nothing for the welfare of our community.

एकादशभिरेताभि वृत्तिभिरात्मनः स्थितिः।। 35।।

ये ग्यारह वृत्तियां आत्मा के मूल ढांचें का निर्माण करती हैं।

These eleven instincts constitute the fundamental framework of our soul.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे
।। मानवात्मा नाम पंचमोऽध्यायः।।

इस तरह से वाल्मीकिकृत लिखा गया श्रीरामसंवाद का 'मानव आत्मा' नामक पंचम अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends of the fifth chapter entitled "Human Soul" of Shri Rama's discourse written by Valmiki.

*****

।। षष्ठोऽध्यायः ।।

षष्ठ अध्याय

Chapter 6

समाजात्मा

समाज की आत्मा

Communal Soul

वशिष्ठ उवाच—

अस्मान् शाधि प्रभो! कथमेकादशप्रवृत्तयः।
विधानं कर्त्तुमर्हन्ति चरिताचारयोश्च नः।।१।।

वशिष्ठ ने कहा—

हे भगवन्! हमारा मार्गदर्शन करें कि ये ग्यारह प्रवृत्तियाँ हमारे चरित्र और आचरण को कैसे निर्देशित करती हैं?

Sage Vasishta said:

O Lord ! instruct us how these eleven instincts form our character and determine our behavior.

श्रीराम उवाच—

यथा मृत्पिण्ड एकोऽपि बह्वाकारान् व्रजेन्मुने!।
घटादिपुत्तलं चैव चेष्टकं नरबुद्धितः।।२।।

तथास्माकं चरित्राणि निर्म्माति प्रकृतिः सदा।
बाह्येन परिवेषेण विमर्दो जायते यदा।।३।।

श्रीराम ने उत्तर दिया—

हे मुनिश्रेष्ठ! जैसे मिट्टी के ढेले से अनेक आकार के ईंट, घड़े और खिलौने आदि बनाए जा सकते हैं उसी प्रकार व्यक्ति की बुद्धि से भी अनेक प्रकार की प्रवृत्तियाँ आचरण में आती हैं।

प्रकृति हमेशा हमारे जीवन—चरित्र का निर्माण करती है। बाह्य वातावरण के द्वारा हम अच्छे प्रकार से प्रभावित होते हैं।

Shri Rama spoke-

As earth acted upon by human intelligence takes several forms such as bricks, pots and toys, so is our instinctive nature

by interaction with the environment moulded into particular type of character.

जन्मास्माकं कुले यस्मिन् यत् समाजे च वर्धिताः।
परिवेशः स विज्ञेयो नागन्तुको भवेत् क्वचित्।।४।।

जिस कुल में हमारा जन्म हुआ है और जिस समाज में हम वृद्धि को प्राप्त हो रहे हैं, उस वातावरण को भली—भांति समझना चाहिए। कोई उस वातावरण से अनजान न बना रहे।

Our environment is the community in which we are born or the society which rears us up.

सर्वेषां सम्प्रदायानां बालाः गृह्णन्ति कल्पितान्।
विधानं दर्शनं धर्मं भाषाऽऽचागदींस्तथा।।५।।

बालक सभी सम्प्रदायों के बनाये हुए नियम, जीवन—दर्शन, धर्म, भाषा इत्यादि को ग्रहण करता है।

All communities have ready made language, customs, laws, religion and philosophy for the baby.

यत्र कुले शिशोर्जन्म भाषैव नहि केवलम्।
विधानं दर्शनं धर्मः सर्वं हि शिक्ष्यते स्वतः।।६।।

बालक जिस कुल में जन्म लेता है वह इसकी भाषा ही नहीं अपितु नियम, जीवन—दर्शन, धर्म व सब व्यवहार स्वयं ही सीख लेता है।

The baby, not only learns the tongue of the community in which he is born, but also unconsciously adopts the customs, laws, religion and philosophy of that community.

बाल आजन्मसिद्धा ये संस्कारा आगताः स्वतः।
मातृस्तन्येन सार्धं ते गृह्यन्ते शिशुना मुने!।।७।।

हे मुनिश्रेष्ठ! जो संस्कार बालक जन्म से प्राप्त करता है वो माता के दूध के साथ बढ़ते हैं और बच्चों के द्वारा ग्रहण कर लिये जाते हैं।

Thus we can say that every baby is born in a particular set of ideas which he sucks with his mother's milk.

समाजस्थाश्च संस्काराः क्रियन्ते चात्मसात् क्षणात्।
नालमेतान् परित्यक्तुं बद्धमूला हिते शिशौ।।८।।

समाज में स्थित संस्कार बालक के द्वारा कुछ ही क्षण में ग्रहण कर लिये जाते हैं। ये संस्कार बालक के हित में हैं और ये छोड़ने योग्य नहीं हैं, अपितु ग्रहण करने योग्य हैं।

The ideas prevalent in his community become his ideas and are so deep- rooted that he can never get out of them.

प्रभावयन्ति चात्मानं संस्कारा बद्धमूलकाः।
गठन्ति नरचारित्रमत्र न संशयः क्वचित्।। ६।।

आत्मा में विद्यमान संस्कार प्रभाव डालते हैं जो मनुष्य के चरित्र का निर्माण करते हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

It is these communal ideas that act upon soul and veritably form the character of the man.

मौलिकी प्रकृतिर्यातु सर्वेष्वेकैव सा भवेत्।
एकस्मिंस्तु समाजे सा न व्यभिचरति क्वचित्।
प्रभावयति कर्माणि चाचारान् स्थापयेत् खलु।। १०।।

मूल रूप से जो प्रकृति है सबमें एक ही रूप में विराजमान होती है और एक ही समाज में समान रूप से विचरण करती है। वह कभी इससे भिन्न नहीं होती, यह कर्म और आचरण को प्रभावित करती है। निश्चित रूप से इस प्रकृति की स्थापना अन्तःकरण में करनी चाहिए।

The basic character which determines all our behavior and influences our actions is the same with all the members of a particular community.

चरित्रं रक्षसां मूलं तुल्यमेव न संशयः।
सर्वासु खल्ववस्थासु तुल्यरूपं भविष्यति।। ११।।

राक्षसों का आधारभूत चरित्र मूल रूप से समान होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। सभी अवस्थाओं में वह समान होगा।

Thus the basic character of all the Rakshasas is the same. Every Rakshasas will react to a particular situation in the same way.

कपिनामेवमेवं स्यादिन्दूनामेवमेव हि।
भगवत्सृष्टिचक्रे तु ये वै सर्वोत्तमाः स्मृताः।। १२।।

वानर जाति और आर्य (हिन्दु) जाति में विद्यमान प्रकृति को ईश्वरीय सृष्टि में श्रेष्ठ माना गया है।

The same is true of the Vanaras and also of the Hindus, the cream of God's creation.

यदस्माभिः कृतं कर्म कल्पितं च भवेत् तथा।
तत् सर्वं सकलैः कार्यं समाजस्थैर्नरैः सदा।। १३।।

जो कर्म हमारे द्वारा सोचा गया अथवा किया गया है वह सब सभी सामाजिक मनुष्यों द्वारा सोचा व किया जाता है।

All that we think and do is just the same as the other members of our community think and do .

स्माजप्रतिकूलानि कर्माणि चिन्तितानि च।
शक्यं नरेण केनापि न कर्त्तुं ध्रुवमेव हि।। १४।।

समाज के प्रतिकूल कार्यों को विचारने या उन्हें करने में कोई भी मनुष्य अविचल रूप से समर्थ नहीं है।

There is no thought nor action that a man is capable of conceiving or doing that will be inconsistent with the soul of the community.

व्यक्तेर्यन्मननं चित्ते स आत्मा कथ्यते बुधैः।
समाजे भावसंस्काराः समाजस्यान्तरात्मकाः।। १५।।

मनुष्य के चित्त में जो मन है उसी को विद्वानों ने 'आत्मा' कहा है। समाज में संस्कार उत्पादित व क्रियान्वित होते हैं व उसी के अन्तरात्मक होते हैं।

As the mental process of the individual constitute his soul, so do the ideas and traditions of a community constitute the communal soul.

समाजात्मप्रभावान्न मोक्षो व्यक्तेर्भवेत् क्वचित्।। १६।।

समाज और आत्मप्रभाव से व्यक्ति कभी मुक्त नहीं हो सकता।

No individual of a community can be free from the influence of the communal soul.

समाजभावसंस्कारैर्मुक्तोऽहं यो वदेन्नरः।
मिथ्याचारः स नूनं स्यान्नैतस्मिन् विश्वसेत् क्वचित्।। १७।।

जो व्यक्ति यह कहे कि मैं समाज के भाव आदि संस्कारों से मुक्त हूँ, वह निश्चित रूप से झूठा है। उसका विश्वास नहीं करना चाहिए।

If anybody says that he is free from the communal prejudices, go and tell him that he is a liar.

संस्कारैर्जन्मसिद्धैर्यो मुक्तोऽहमिति मन्यते।
पाषण्डः सुदुराचारः समाजहानिकृच्च सः।। १८।।

जो व्यक्ति यह मानता है कि मैं जन्म–सिद्ध संस्कारों से रहित हूँ वह पाखण्डी, दुराचारी व समाज के लिए हानिकारक है।

Believe not a person who say that he is free from the communal influences, for such a dishonest and dangerous devil.

सुमन्त उवाच–

यद्येवं देव! चिन्तायाः स्वातन्त्र्यं न हि विद्यते।
नवतथ्यप्रकाशाय प्रयासो न भवेत् क्वचित्।।१६।।

सुमन्त ने कहा–

हे महाराज! यदि ऐसी बात है तो सोचने–विचारने की स्वतंत्रता कहीं भी प्रतीत नहीं हो रही है। ऐसे तो नये आयामों को खोजने का प्रयास ही नहीं होगा।

The Sumanta said:

O Lord ! then there is no independent thinking. If it were true, there can be no research of new truths.

प्रभु उवाच–

अमात्यश्रेष्ठ! सत्यं वै भवदुक्तं वचोऽधुना।
चिन्ताया अत्र स्वातन्त्र्यं कि श्चिन्नास्ति महीतले।।२०।।

महाराज ने उत्तर दिया– हे मन्त्रिश्रेष्ठ! आपने सही कहा इस संसार में कहीं भी सोचने–विचारने की स्वतंत्रता नहीं है।

The Lord replied :

Yes, O 'great administrator of our Empire, you have spoken the truth. There is nothing like independent thinking.

समाजभावप्रेरणया कर्मणि वर्त्तते जनः।
सत्यमेतन्महाभाग! स्वीकर्तव्यं सदा नरैः।।२१।।

हे महानुभाव! सामाजिक संस्कारों की प्रेरणा से मनुष्य जो कार्य करता है, वह सत्य है और इस सत्य को सभी व्यक्तियों को स्वीकार करना चाहिए।

O prosperous one, that we all think and act as the soul of the community dictates us to do is the general truth.

सामाजिकस्वार्थपराः समाजप्रेरिताः कृतौ।
प्रियास्ते जननेतारः जनेच्छासाधकाश्चिरम्।।२२।।

जो समाज से प्रेरित होकर सामाजिक कार्यों को करते हैं और लोगों की इच्छाओं को पूरा करते हैं वे लोगो के प्रिय नेता होते हैं।

Popular leaders are they who reflect the opinion of the community, and act as the community wishes them to act.

विप्लविनो भवेयुर्वै चण्डाघातैः क्वचित् जनाः।
प्राक्संस्कारविरुद्धास्ते जायन्ते स्वसमाजके।।२३।।

जो लोग अपने राष्ट्र में प्रचलित संस्कारों के विरुद्ध आचरण करते हैं वे

लोग भयंकर आघातों से कष्ट पाते हैं।

Great shocks sometimes do produce rebels who go contrary to the tradition.

सामाजिकी व्यवस्थेयं सममाकर्षते समः।
तस्माद्विद्रोहिणो ये स्युर्न रोचन्ते जनाय ते।।२४।।

यह राष्ट्र की व्यवस्था है जो सभी को समान रूप से आकर्षित करती है। जो लोग इस व्यवस्था के विरुद्ध चलते हैं, वे लोगो को प्रिय नहीं लगते।

The rebels are not however liked by the people because in the social sphere the principle is that the like attracts the like.

यद्यपि वासना तेषां समाजहितकारिका।
तथापि जनवैमुख्यमस्ति विद्रोहिणः प्रति।।२५।।

यद्यपि उन लोगों की कामना राष्ट्रहितकारी होती है, तथापि विद्रोहियों के प्रति लोगों की उदासीनता है।

The people hate the rebels whether or not they are planning for the greatness and glory of their community.

सत्यनिष्ठा भवन्त्येते यदि विद्रोहिणो नराः।
दृढव्रता भविष्यन्ति स्वमते संशिताः सदा।।२६।।

यदि विद्रोही लोग सत्यनिष्ठ होते हैं तो वे अपने सिद्धांतों के प्रति दृढ़ संकल्प वाले होंगे और हमेशा प्रशंसित होंगे।

If the rebels are true, they will have the tenacity to stick strongly to their opinions.

असीमसाहसैर्युक्ताः कृच्छ्रसाधनतत्पराः।
एवं ते शक्नुयुः स्रष्टुं भावं स्वाभिमतं तदा।।२७।।

जो लोग अत्यधिक साहस से युक्त होते हैं, वे भले ही थोड़े साधन वाले हों, वे राष्ट्र में अपने सिद्धान्तों को फैलाने में समर्थ होंगे।

With hard work and unbounded courage they can create an atmosphere in their favour.

तेषां भावधारा यदि समाजे प्रतिस्थास्यति।
बहूनां द्रोहिणां जन्म ततः प्राक् तु भवेद् ध्रुवम्।।२८।।

उन विद्रोहियों के संस्कार यदि समाज में स्थापित होंगे तो बहुत सारे विद्रोहियों का निश्चित रूप से प्रादुर्भाव होगा।

There must be a long succession of rebels, if rebellious notions are to succeed and gain currency in community.

त्वत् प्रश्नस्योत्तरं धीर! भवेदोमिति नेति च।
भोः सुमन्त प्रयत्नतः स्पष्टीकृतमद्यैव हि।।२६।।

हे धैर्यवान् सुमन्त! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तरीके से प्रयत्नपूर्वक मैंने स्पष्ट कर दिया है।

O Sumanta ! thus my reply to your question is both in the negative and positive.

स्माजभावधारायाः प्रबलं परिवर्त्तनम्।
सुकरं न भवेद् धीर! कदामुत्रापि भूतले।।३०।।

हे धीरपुरुष! समाज में प्रचलित संस्कारों का पूर्णपरिवर्तन इस संसार में आसान नहीं है।

It is not an easy job to change the character of communities.

भगीरथेन कैलासात् गंगावतरणं यथा।
तथैव दुष्करं चैतत् क्वचिदेव भवेत्तथा।।३१।।

जैसे राजा भगीरथ ने कैलासपर्वत से गंगा का अवतरण कराया था, उसी प्रकार समाज में प्रचलित संस्कारों का परिवर्तन कठिन है।

It is as difficult as it was for our great ancestor, Bhagiratha, to bring the holy Ganga from the Kailash to the plains.

वत्सराणां सहस्रेषु ह्येको जातो भगीरथः।।३२।।

इस प्रकार के भगीरथ प्रयास करने वाले व्यक्ति हजारों वर्षों में कोई विरला ही पैदा होता है।

How many are Bhagirathas? In hundreds of years one such is born.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे
।। समाजात्मा नाम षष्ठोऽध्यायः।।

इस प्रकार वाल्मीकि रचित श्रीरामसंवाद में समाजात्मा नामक षष्ठ अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends the sixth chapter entitled “Communal Soul” of Shr Rama’s Discourse written by Valmiki.

*****

।। सप्तमोऽध्यायः।।

सप्तम अध्याय

Chapter 7

त्रिविध–जीवनोपायः
जीवन के तीन उपाय
Three Ways of Living

वशिष्ठ उवाच–

भिन्नानां खलु गोष्ठीनामस्तु वात्मा पृथक् पृथक्।
यथास्ति व्यष्टिदेहेषु पार्थक्यमात्मनो ध्रुवम्।।१।।

वशिष्ठ ने कहा–

इस बात को मान सकते हैं कि प्रत्येक समुदाय की अपनी आत्मा होती है, जिस तरह प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा है।

Vashishta spoke:

We may agree that every community has a soul of its own just as every individual has a soul.

स्वार्थान्धाः मानवाः प्रायो दृश्यन्ते गोष्ठीमन्तारा।
सदात्मदोषणायैव भवेयुः कार्यतत्पराः।।२।।

और उसी तरह यह संभव है कि समुदाय के अंदर प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थी हो। वह समुदाय में इस तरह से व्यवहार और कार्य करे, जिससे उसका अपना स्वार्थ पूरा हो।

All the same it were possible that every individual in a community may be selfish, acting and behaving in such a manner, as to benefit his own self.

आचारस्य हि व्यक्तीनां समाजे रूपता यदि।
स्वार्थमयो खल्वेकः सर्व एव तथा भवेत्।।३।।

यदि प्रत्येक व्यक्ति समाज में इस तरह से व्यवहार करता है तो प्रत्येक समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थी होगा।

If every individual in a society behaves in the same manner, it will not be one man but that everybody in a particular community will be selfish.

समाजात्मप्रयोजनं तदा किमस्ति हे प्रभो।
नाहं शक्योऽवधारयितुं ते युक्तेः सुसंगतिम्।।४।।

हे भगवन्! यदि हम आत्मा का अनुसरण नहीं करते हैं तो सामुदायिक आत्मा का क्या उपयोग रह जाएगा?

O Lord ! we do not follow of what use will then be the communal soul.

श्रीराम उवाच–

समाजात्मा भवत्येव नास्ति किंचिदमुं विना।
कथितं सत्यमेतस्य प्रश्नोऽपि नैव विद्यते।
प्रयोजनमस्ति नास्ति वाऽविनाशि न संशयः।।५।।

श्रीराम ने कहा–

सामुदायिक आत्मा के लाभ का तो यहाँ प्रश्न ही नहीं है। यहाँ तथ्य यह है कि सामुदायिक आत्मा का कुछ उपयोग हो या न हो, हम उसे समाप्त नहीं कर सकते।

Sri Rama said :

There is no question of the benefit of the communal soul. The facts are there; whether they are of any use or not, you cannot destroy them.

त्रिविधं प्राणिनामत्र जीवनं परिचाल्यते।
विच्छिन्नं स्वपरं चैकं द्वितीयं पारिवारिकम्।
सामाजिकं तृतीयं तु जीवनं कथ्यते बुधैः।।६।।

इस संसार में तीन प्रकार से प्राणियों का जीवन चलता है, पहला एकान्त जीवन या व्यक्तिगत जीवन, दूसरा पारिवारिक जीवन और तीसरा सामाजिक जीवन।

There are three ways in which animals live. There is the solitary life, there is the family life and there is a social life.

विच्छिन्नं स्वपरं प्रायो जीवनं प्राणिनां भवेत्।
पारिवारिकभावस्तु न तेषु जायते क्वचित्।।७।।

ज्यादातर प्राणी व्यक्तिगत जीवन ही जीते हैं। उनमें कहीं भी पारिवारिक भाव नहीं होता है।

Most of the animals live solitary life. There is no family life among them.

संत्यज्याण्डानि मीना तु व्रजन्ति यत्र कुत्रचित्।
सन्तानानां भविष्यस्य नास्ति तेषु विचारणा।।८।।

मछलियाँ अपने अण्डों को किसी कोने में छोड़कर जहाँ–कहीं भी चली जाती हैं। सन्तानों के भविष्य का उनमें कोई विचार नहीं है।

Fish deposit their eggs in some corner and parents depart. The next generation is left to its fate.

एवंस्वभावा भेकाश्च विहाय संततिः पुनः।
निराश्रयाः विपन्मये जलौघे मग्नप्रायिकाः।
संगृह्वान्ति हि खाद्यानि शिशवस्ते स्वयं पुनः।।९।।

ऐसा ही मेंढकों के साथ है। मेंढक अपने बच्चों के झुण्ड को सांसारिक खतरों का सामना करने के लिए अकेले छोड़ देते हैं और वे अपने माता–पिता की सहायता के बिना अपना भोजन प्राप्त करते हैं।

So is with the frogs: the swarming tadpoles are left to face a world of dangers and get their food without any aid from father and mother.

सूयन्तेऽण्डानि कीटास्तु स्थाने त्वनुकूले खलु।
तत् ऊर्ध्वं जहत्येव विपत्तौ संततीः स्वकाः।।१०।।

सामान्य तौर पर सूक्ष्म जीव भी अपने अण्डों को सुरक्षित स्थान पर जमा करते हैं और उनको संसार की दया पर छोड़ देते हैं।

The insects, generally, deposit their eggs in some favourable place and then leave them to the mercy of the world.

जीवजगति प्रापशो न परिवारजीवनम्।
स्त्रीपुंसोर्नास्ति संयोगः रतिकालं विना क्वचित्।।११।।

जानवरों के जीवन में पारिवारिक जीवन और रतिकाल को छोड़कर नर–मादा सहवास जैसी कोई बात नहीं है।

In a large part of animal life there is no such thing as family life and no association of male and female save for the short and necessary period of mating.

कपोतास्तत्र श्रेष्ठाशुः यौथजीवनदायने।
परस्परार्थ स्त्रीपुंसोर्जीवनं मधुरं सुखम्।।१२।।

जानवरों के जीवन में कबूतर पारिवारिक जीवन का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। कबूतर के जोड़े में पारिवारिक जीवन के कुछ असाधारण और सुंदर चीजें दिखाई देती हैं।

Among the animals, pigeons, present an ideal example of family life. There is something extra- ordinarily touching and beautiful in the family life of a pair pigeons.

प्रबलः संततिस्नेह एषु दृश्यः सदा भवेत्।
स्नेहाधिक्यं प्रजार्थं हि चिरमेषा स्वभावजम्।। १३।।

कबूतरों में नर–मादा एक दूसरे के लिए जीते हैं और अपने बच्चों को पूरे स्नेह के साथ रखते हैं।

Among the pigeons, male and female live for each other and have an intense affection for their young.

स्त्रिया सार्धं चिरं मैत्री पुंस मरणान्तिकं भवेत्।
मधुरा च सुसंबद्धा मधुरा श्लाघनीया भवेत् पुनः।। १४।

कबूतरों के पारिवारिक जीवन में नेक, नरम और सुंदर कार्य लगातार चक्र में चलते रहते हैं, जो अपने साथी के द्वारा दूसरे साथी को निर्देशित कर जाते हैं।

There is a perpetual round of gentle, tender & graceful actions, all directed by the partners to one another.

आक्रान्तः स्यात् यदन्येन कपोतेन युयुत्सुना।
आमृत्योस्तु कपोतोऽसौ प्रियार्थं कुरुते रणम्।। १५।।

पारावति त्यजेदसुं नीडस्य रक्षणाय वै।। १६।।

नर कबूतर अपने साथी की रक्षा के लिए मौत से लड़ सकता है, जबकि मादा कबूतर घर की रक्षा में अपने प्राणों को न्यौछावर कर सकती है।

The male may fight to death in defense of his partner against another aggressive pigeon. The female may end her life in defence of their home.

तादृक् न सुमहान् हर्षो नरार्थं संभवेत् दिवि।
यादृग् भवेत् कपोतार्थं पाप्मानः हि नरो यतः।। १७।।

इस बात का अनुमान लगाने में कुछ भी गलत नही होगा कि पापी मनुष्य की तुलना में वफादार कबूतरों के महान जोड़े का स्वर्ग में पूर्ण मिलन होता है।

There will be nothing wrong in supporting that there is a greatest rejoicing in heaven over the life of a faithful pair of pigeons than over the human sinner.

मधुपाश्च पिपीलिकाः समाजबद्धजीविनः।
श्लाघ्यं जीवनमेतेषामादर्शभूतमेव हि।। १८।।

मधुमक्खियां और चीटियां जीवों में सामाजिक जीवन का सुदंर उदाहरण

प्रस्तुत करती हैं।

Bees and ants furnish us the best example among animals of social life.

समाजार्थं सदा तेषां प्रयत्नः स्यात् स्वभावजः।
वृत्तिरेषां हि सामाजी ध्रुवा सत्या भवेत् खलु।। १९।।

समष्टेर्मगलार्थं स्यात् सार्थक्यं व्यष्टेरेव हि।
व्यष्टिरक्षणचेष्टा तु समष्टेः सर्वदा भवेत्।। २०।।

वे काम और बलिदान में विश्वास रखती हैं और यह उनके जीवन का नियम है। उनका एक सच्चा सामाजिक स्वभाव है जो समाज के कल्याण के लिए अग्रसर है।

They work and sacrifice for the whole and this is the law of their being. They have a social instinct as they live to promote the welfare of the community.

मधुकराः लक्षाधिकाः मधुचक्रे वसन्ति हि।
एकाभ्यामेव पितृभ्यां जायन्ते मधुपाः किल।। २१।।

पिता तु हन्यते तेषां संभोगात् परमेव हि।

विपुलैषां समष्टिः स्यात् मातृस्नेहो न संभवि।। २२।।

न गठितः परिवारः समाजो गतिश्च तैः।। २३।।

मधुमक्खियों के एक छत्ते में लाख से अधिक मधुमक्खियां होती हैं। वे समान माता–पिता की वंशज हो सकती हैं। संभोग के बाद पिता को मार दिया जाता है। इस विशाल झुण्ड से मातृत्व स्नेह की आशा नहीं की जा सकती। वे परिवार नहीं लेकिन समाज बनाती हैं।

A hive of bees may consist of more than a lac of members. They may have descended from, the same mother and same father, but the latter is killed soon after the nuptial union. As no maternal affection can be expected from such a huge aggregate of bees, they form not a family but a society.

सामाजिकेषु चादर्शीभूताः मधुकरा इमे।
प्रत्येकं जीवनं तेषां समष्टेर्मगलाय वै।। २४।।

मधुमक्खियों का सामाजिक जीवन मानवता के लिए आदर्शभूत है। उनमें से प्रत्येक का जीवन समाज के कल्याण के लिए होता है।

The social life of bees is the envy of man, as such of them lives for the good of the whole.

परेशां सुखसन्तोषविधाने तु सदा सुखम्।
ततोऽन्यत्तु सुखं नास्ति मधुकराणां कृते क्वचित्।।२५।।

एक मधुमक्खी खुश नहीं हो सकती यदि वह दूसरों को खुशी नहीं देगी। उसकी खुशी दूसरों की सेवा करने में है।

A bee cannot be happy unless she is giving happiness to those around her. She has no joy other than the joy of serving others.

व्यष्टेः समष्टेः कल्याणे न काचिदस्ति भिन्नता।
यदेव क्रियते व्यष्ट्या समष्टेर्मंगलाय तत्।।२६।।

व्यक्तिगत भलाई और सामाजिक भलाई में कोई अन्तर नहीं है। मधुमक्खी जो कार्य करती है वह समाज की भलाई के लिए है।

There is no distinction between an individual good and the common good. Any action that a bee does is for the good of the community.

अत्यन्तमेव स्वार्थान्धाः आदिमाः मानवाः खलु।
भिन्नभावैर्नराः हन्त! गठिताः धरणीतले।।२७।।

इस धरातल पर विभिन्न स्वभाव वाले मनुष्य हैं। ओह! आरंभिक मनुष्य तो आवश्यकता से भी अधिक स्वार्थी था।

Alas man is made up of a different texture. The primitive man was selfish to the core.

आदिमा मानवाः ह्यासन् पशवोऽत्र न संशयः।
न किंचित् करणीयं वै स्वार्थस्य साधनं विना।।२८।।

आरंभिक समय में मनुष्य केवल पशु था। उसके लिए अपने स्वार्थ की प्राप्ति से ऊपर कुछ भी नहीं था।

In primitive times man was a mere brute. To him, there was no aim higher than the attainment of his selfish ends.

अतितुच्छपदार्थार्थं परस्य प्राणघातने।
भृशं तत्परता तेषां सदा दृश्यत एव हि।।२९।।

प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से प्रतिस्पर्धा रखता है। किसी वस्तु और प्रत्येक वस्तु के लिए प्रत्येक का हाथ किसी के भी गले पर हो सकता था।

Everybody competed with everybody. For anything and everything, anybody's hand could be at anybody's throat.

परस्परोपकाराय न कापि साहचर्यता।
न चैवात्मीयता तेषां न स्नेहो न दया क्वचित्।।३०।।

कोई व्यक्ति किसी की सहायता नहीं कर सकता था, कोई मानवीय मूल्य नहीं थे। पारस्परिक भावना गौण थी।

There was no co-ordination, no mutual help, no fellow-feeling. Mutual affection was unknown.

ईर्ष्या द्वेषश्च पैशुन्यं परनिन्दा सदैव च।
आसीत् नरेष्वेतत् सर्वं नूनं चारित्र्यसिद्धकम्।।३१।।

ईर्ष्या, दुश्मनी, चुगली और निन्दा, असभ्य आरम्भिक मनुष्य के सामान्य गुण थे।

Jealousy, rancour, backbiting and scandal- mongering were the general traits of the uncivilized primitive man.

नरस्यैषा गतिर्ज्ञेया सृष्टेः प्रथमसंस्तवे।
भाषाचारमर्यादास्तु नासन्नवा विधिस्तदा।।३२।।

यह वह अवस्था थी जब मनुष्य की कोई भाषा नहीं थी। कोई रीति–रिवाज, कोई सम्मान और नियम नहीं थे।

This was the stage when man had no language, no customs, no code of honour and no laws.

उद्वाहविधिरुद्भूतो भगवत्कृपया खलु।
ततः प्रभृति मानवाः परिवारस्तरं गताः।।३३।।

पारिवारिकबुद्धिस्तु स्वाभाविकी नरस्य हि।।३४।।

प्रभु की कृपा से जल्दी ही मनुष्य ने विवाह–संस्थाओं का निर्माण किया और इस प्रकार मानवीय जीवन की पारिवारिक अवस्था विकसित हुई और पारिवारिक झुकाव कुछ स्वाभाविक प्रतीत हुआ।

By the grace of God, man soon evolved the institution of marriage and thus developed the family stage of human life. Family instinct appears as something natural with man.

पत्नीसन्तानयोः रक्षा कर्म चैव तदर्थकम्।
जन्मसिद्धं नरस्यैतत् नारीणामपि भवेत्तथा।।३५।।

पतिप्रीतिः सुतस्नेहः पुरुषेभ्योऽधिको खलु।
ततः प्रजायते तेषां जीवनं च समाजगम्।
आदर्शभूतमेतद्धि जीवने महती कृतिः।।३६।।

जिस प्रकार अपने साथी की सुरक्षा और परवाह पुरुष का जन्म–जात

स्वभाव है, उसी प्रकार स्त्री की अपने साथी के प्रति वफादारी व प्रेम और अपने बच्चों के प्रति अपार स्नेह स्वाभाविक है, तब मनुष्य का आयोजित समाज में सामाजिक जीवन आता है जो हमारे जीवन का आदर्श है।

To work, protect and care for his mate and his off- spring is the in-born nature of man. In like manner, woman has loyalty and affection for her mate and even an intenser affection for her young. Then comes the social life of man in an organized society, the ideal of our being.

उत्तमाध्यात्मिकी सिद्धिर्नराणां जायते तदा।
आत्मसमाजयोः स्वार्थः विभिन्नो न यदा भवेत्।। ३७।।

मनुष्य की सबसे ऊंची आध्यात्मिक उपलब्धि उस अवस्था को प्राप्त करने में है जब व्यक्तिगत और सामाजिक हितों में कोई अन्तर नहीं होगा।

The highest spiritual achievement of man lies in the attainment of the stage when there will be no distinction between private and communal ends.

गोष्ठीजीवनलाभाय द्वौ पन्थानावविष्कृतौ।
एकस्तु कृत्रिमः प्रोक्तो ह्यपरस्तु स्वभावजः।। ३८।।

सामुदायिक जीवन की अवस्था को प्राप्त करने में मनुष्य ने दो मार्ग अपनाए हैं, पहला जिसे हम 'कृत्रिम मार्ग' कहते हैं और दूसरा प्राकृतिक मार्ग।

To achieve the stage of communal life, man has adopted two courses; one we may call an artificial course and the other a natural one.

जनसंसदि यद्येव विधानं रचितं बुधैः।
कृत्रिमं तत् विजानीयात् यद्यपि सर्वसंगतम्।। ३६।।

कृत्रिम मार्ग बुद्धिमान मनुष्य के द्वारा बनाए गए नियम हैं और अपने आपको उनका पालन करने के लिए सहमत होना है।

The artificial course is just to make a set of laws by a body of men and to agree among themselves to abide by them.

आत्मकलहरोधार्थ समाजगठनाय च।
विधयः कल्पिताः केऽपि विद्वद्भिः शूरिभिस्तदा।। ४०।।

इन नियमों का उद्देश्य मनुष्य का मनुष्य के साथ चिरस्थायी द्वन्द्व को समाप्त करना तथा एक सुगम सामाजिक जीवन के मार्ग को प्रशस्त करना है।

These laws were meant to end the perpetual conflict between man and women and to pave way for a smooth communal life.

केवल्याः विधयो लोके ह्यशक्याः जनशासने।
ततः सर्वमतेनैव नृपतेः परिकल्पनम्।। ४१।।

चूंकि नियमों की कोई बाध्यता नहीं थी, इसलिए मनुष्य ने इन नियमों के पालन के लिए एक राजा चुना।

As the laws had no compulsion by themselves, man elected a king to enforce these laws.

अथवा शक्तिमान् कश्चित् नरोऽभूतजननायकः।
निर्मिताः विधयस्तेन स्वयं विध्यतिगामिना।। ४२।।

नीतेर्न्यायस्य मूलं सः वस्तुतः समभून्नृपः।
तस्यादेशेऽभवन् सर्वे नीतेः शक्तेश्च रक्षिणः।। ४३।।

एक शक्तिशाली मनुष्य नेता बना और नियमों को बनाया। राजा सब नियमों से ऊपर था, वह कानून और न्याय का स्रोत था। प्रत्येक को उसका पालन करना पड़ता था क्योंकि वह नियमों का अवतार और अपने लोगों की शक्ति था।

You can also say that a powerful man became a leader and enforced the laws. The leader(king) was above all laws; rather he was the source of law and justice. Everybody was to obey him. As he was the embodiment of law and the might of his people.

दण्डभयाज्जनाः सर्वे नाभुवन् परपीड़काः।।
समाजरुधिनः कार्यात् दण्डभीतेर्निवर्तिताः।
कृत्रिमस्त्वेषः पन्थास्तु न खलु त्रुटिवर्जितः।। ४४।।

यह केवल डर की भावना थी जिसने लोगों को दूसरों का बुरा करने से रोका। वे डरते थे कि राजा उन्हें दण्ड देगा, यदि वे समाज के हितों के विरुद्ध कार्य करेंगे। यह उपाय केवल कृत्रिम था और उसमें कई दोष थे।

It was only the sense of fear that made the people to do no wrong to their neighbours. They were afraid that the king would punish them if they acted against the interests of the community. This device (as based on fear) was merely artificial one and had several defects.

करिष्यन्ति जनाः कार्यं क्वपर्यन्तं हि दण्डतः।
यदि कर्मणि न वर्तेत प्रेरणा हि स्वभावजा।। ४५।।

केवल दण्ड के भय से मनुष्य कितना दूर जा सकता है, यदि उसे अपने कार्य को करने की अंदर से इच्छा नहीं होगी।

How long can man go on in a particular way under the shadow of fear, unless there be some inner urge for his actions ?

राजदण्डभयादेव न सर्वत्र क्रिया भवेत्।।४६।।

यदि तीक्ष्णदण्डदो भूपो मनुष्यत्वहानिस्तदा।
राजशासनमुल्लंघ्य दुर्विनीतो नरो भवेत्।।४७।।

केवल भय आपको एक सीमा तक कार्य करवा सकता है लेकिन उसकी अधिकता आपको निराश निरादरी और अमानव बना सकता है।

Fear can make you act to a particular limit, but too much if it is likely to make you either desperate to disobey or comletely demoralised to become in human.

एतादृशा यदा भिया समाजः परिचाल्यते।
विद्रोह–विप्लवौ तत्र संभवेतां विरक्तिजौ।।४८।।

ईदृक्–दशा चिरं कापि न शक्या परिपालने।
समाजजीवनसृष्टिर्भयात् काऽपि न संभवेत्।
अध्यात्मशक्तिलाभाद्धि विकासोऽस्तु हीश्वरेच्छया।।४९।।

ऐसे भय से पैदा किये गये कृत्रिम समाज के लोग विद्रोह और आन्तरिक झगडों के शिकार होने के लिए बाधित हैं। वे लम्बे समय तक नहीं चल सकते। सामाजिक जीवन भय की उपज नहीं है। यह एक आध्यत्मिक चरित्र है जिसे प्राप्त किया जाना है और प्रभु की कृपा से विकसित करना है।

Such fear-created artificial communities are bound to be the victim of revolt and inner dissensions. They cannot survive long. Communal life is not the product of fear. It is a spiritual character to be achieved and developed through the grace of God.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे
त्रिविधजीवनोपायो नाम सप्तमोऽध्यायः।

इस प्रकार वाल्मिकीरचित श्रीरामसंवाद में "त्रिविध–जीवनोपाय" नामक सप्तम अध्याय समाप्त हुआ।

Thus the ends the seventh chapter entitiled "Three ways Living" of the Discourse of Shri Rama written by Valmiki.

*****

।। अष्टमोऽध्यायः ।।

अष्टम अध्याय

Chapter 8

समाजः

समाज

Society

सुमन्त उवाच–

यतः समाज चारित्र गोष्ठिबुध्यः समुद्भवाः।
यदि सः कृत्रिमोपायो विप्लवेन विदूष्यते।।१।।

तर्हि नो ब्रूहि पन्थानं दिव्यं कल्याणकृत्तथा।
स्वाभाविकमुपायं हि समाजहितनिरूपणे।।२।।

येन यथा मनुष्याणाम् महदैक्यं प्रजायते।
व्यष्टेर्यथा समष्टेश्च कल्याणम् स्यात् महीतले।।३।।

सुमंत ने कहा–

हे भगवन्! हम प्रार्थना करते हैं कि उस स्वाभाविक मार्ग को बतायें, जिसके द्वारा मनुष्य सामुदायिक जीवन और सामुदायिक चरित्र को विकसित कर सकें यदि कृत्रिम मार्ग विद्रोह के खतरे व अवज्ञा से भरा हुआ है, तो हमें उस दिव्य पथ को दर्शायें, जो मनुष्य को अपने समुदाय के हितों के साथ अपना हित पह्चानने के लिए बताता है।

Sumanta spoke:

Pray, tell us, O Lord ! the natural course through which man develops communal living and communal character. If the artificial course is fraught with the dangers of revolt and disobedience, reveal unto us the divine path which bids man to identify his interests with interests of the community.

विवक्षुं राघवम् दृष्ट्वा वशिष्ठः समभाषत।
समाजस्य प्रयोजनं किमस्ति कृत्रिमस्य भो।।४।।

जैसा कि श्रीराम उत्तर देते, इसी बीच हस्तक्षेप करते हुए मुनि वशिष्ठ कहते हैं कि समाज की यहां क्या आवश्यकता है ?

As Shri Rama was to reply, Sage. Vasistha intervened and said; what need is there of society ?

समाजे वासहेतोर्हि नरः साधुत्व सत्यभाक्।
दण्डभीतिर्हि वस्तुतः प्रवर्त्तयति मानवम्।। ५।।

यह समाज ही है जिसमें मनुष्य को सत्यवादी, ईमानदार व गम्भीर होने की आवश्यकता है लेकिन मनुष्य सत्यवादी और ईमानदार इसलिए है क्योंकि वह दण्ड से डरता है।

It is in society that man is required to be truthful, honest and sincere, but man is honest and trustful because he is afraid of punishment.

दण्डेन बध्यते गोष्ठी दण्डेनैव हि संस्थितिः।
न्यायमार्गे जनानान्तु सर्वत्रैतद्धि दृश्यते।। ६।।

इस प्रकार यह दण्ड ही है जो समाज को बाँधे रखता है और यह दण्ड ही मनुष्य को नैतिक बनाता है।

Thus it is force that binds the society and it is force which makes a man moral.

किं दण्डस्य प्रयोजनं माऽभूत् समाज एव हि।
किं नारण्यं मनुष्याणां विविक्तजीवनं परम्।
साधने परमेश्वरस्य तपस्यायां च संस्थितम्।। ७।।

सब जगह दण्ड का प्रयोग क्यों किया जाना चाहिए? 'जहाँ कोई समाज ही न हो'–क्या यह अधिक उचित नहीं होगा। यदि मनुष्य जंगलों में चले जायें और वहाँ वे परमेश्वर के प्रति श्रद्धा एवं प्रार्थना करते हुए एकान्त जीवन जियें।

Pray, why should force be used at all? Let there be no society. Will it not be perferable if men recede into the jungles and live solitary life of prayers and devotion to God?

श्रीराम उवाच–

अस्माकं पूतराष्ट्रस्य महति तु पुरोधसि।
नैतत् न्याय्यं शोभनं वा मतं जनविगर्हितम्।। ८।।

श्रीराम ने उत्तर दिया–

हे मुनिश्रेष्ठ! यह अपमानजनक एवं अन्यायपूर्ण दोनों ही हैं, यदि हमारे शुद्ध एवं पवित्र साम्राज्य के उच्च पुरोहित ऐसे विचार रखते हैं।

Sri Rama said :

O Sage ! it is both disgraceful and unjust that the High Priest

of our Holy Empire should hold such views.

समाजस्य प्रयोजनम् वाय्वग्निवारिभिः समम्।। ९।।

समाज मनुष्य के लिए उतना ही जरूरी है जितना कि जीवन के लिए वायु, जल और अग्नि।

Society is as essential for man as are air, water and light for his living.

नरो न नर एव स्यात् विविक्ते वसते यदि।
वने हिमवतः शृंगे जनसंघविवर्जिते।। १०।।

मनुष्य मनुष्य नहीं है, यदि वह एकान्त जीवन जीता है, चाहे जंगल में रहकर या हिमालय के किसी दुर्लभ शिखर पर जा कर।

Man is no man if he lives a solitary life either in the jungle or on the untreaded high peaks of the Himalayas.

नरस्य पूर्णता स्यात्तु समाजबद्धजीविते।
नरस्य नरत्वप्राप्तौ समाजस्य प्रयोजनम्।। ११।।

मानव–स्वभाव को समाज में रहकर ही हम पूर्ण साकार कर सकते हैं। इसलिए समाज जरूरी है जिससे मनुष्य–मनुष्य बन सके।

Human nature can only be fully realised in Society. Society is essential so that man may be man.

प्रीतिपात्रं रक्षापात्रं विश्वासभूमिरेव च।
यत्कृते क्रियते त्यागो न कश्चिच्चेत् तथा भवेत्।। १२।।
मानवस्य महत्त्वं तु न तदा संप्रकाशयेत्।। १३।।

यदि हमारे पास सुरक्षा करने वाला कोई न हो, न ही कोई प्रेम करने वाला, विश्वास जताने वाला, त्याग करने वाला, तो ऐसे में हमारे नैतिक चरित्र को विकसित करने वाले अवसर का अभाव हो जाएगा।

If we have nobody to protect, nobody to love, nobody to keep faith with, nobody to make sacrifices for, we shall lack the opportunity to develop our moral character.

यद्यपि न भवेत् कश्चित् मिथ्या येन वदेज्जनः।
यस्मिन् कृतघ्नतां चैव नैघृण्यं चौरतां चरेत्।
परीक्षणं चरित्रस्य दार्ढ्यस्य न तदा भवेत्।। १४।।

यदि हमारे पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिससे हम झूठ बोल सकें, जिससे हम कुछ चुरा सकें, जिसे नष्ट कर सकें या जिसके प्रति निर्दयता व्यक्त कर सकें, तो ऐसे में हमें अपने चरित्र को परखने का कोई अवसर नहीं मिलेगा।

If we have nobody to lie to, nobody to steal 'from' nobody to betray and nobody to be unkind to, we shall have no opportunity to test our character.

स्वयं पूर्णाः नराः नैव चरित्रस्य विकासने।
संसर्गेनापरैश्चैव तेषामस्ति प्रयोजनम्।। १५।।

मनुष्य स्वयं समर्थ प्राणी नहीं है, उसे अपने सहयोगी प्राणी के साथ परस्पर आदान–प्रदान की आवश्यकता पड़ती है अपने स्वभाव की पूर्ण क्षमताओं को पूरी तरह विकसित करने के लिए।

A man is not a self-sufficient creature; he needs intercourse with his fellow- beings so that he may develop the full potentialities of his protection.

समाजाल्लभ्यते सर्वं जीवनं भोजनं सुखम्।
समाजेन विधीयन्ते भाशा विधिरक्षणानि च।। १६।।

यह समाज ही है जो हमें आगे बढ़ाता है, हमें भोजन प्रदान करता है और हमे भाषा, कानून एवं सुरक्षा देता है।

चरित्र गठने नृणां समाज एव कारणम्।
समाजे सत्त्वबहुले साधवो हि नराः सदा।। १७।।

सर्वोपरि समुदाय हमें हमारा चरित्र देता है। हम तभी अच्छे बन सकते हैं यदि हमारा समुदाय अच्छा है।

Above all community gives us our character. We are good if our community is good.

समाजोऽसत्यदा नरस्तत्रासाधुर्भवेद्ध्रुवम्।
न दण्डश्चिरमेवालं सद्विधेः परिपालने।। १८।।

जनसमुदाय चरित्र को आगे बढ़ाता है, जबकि चरित्र कर्म का स्रोत है।

Community gives forth character, while character is the source of action.

समाजो लाति चारित्र्यं चरित्राज्जायते क्रिया।
पूतः समाजो यत्रैव तत्र चारित्र्यपूतता।
पवित्रचरिताच्चैव पवित्रकर्मसंभवः।। १६।।

इस प्रकार अच्छा समुदाय निश्चित रूप से अच्छे चरित्र को जन्म देता है और चरित्र निश्चित रूप से अच्छे कर्म उत्पन्न करता है।

Thus good community must give forth good character and good character in its turn, must produce good action.

त्रुटिपूर्ण चरित्रं तु मानवानां क्वचित् भवेत्।
तेषामेव नराणां हि युक्तं दण्डेन शासनम्।। २०।।

दण्ड तो केवल जनसमुदाय के अपूर्ण सदस्यों को कानून एवं अनुशासन का पाठ पढ़ाने के लिए होता है।

Force is there only to teach law and discipline to those who are imperfect members of a community.

समाजस्थितिमूलं तु दंडो नास्ति कदा क्वचित्।
समाजस्य यदैतेन गठनं कृत्रिमं ध्रुवम्।। २१।।

दण्ड समाज का आधार नहीं है, यह तो केवल एक कृत्रिम समुदाय को पैदा कर सकता है।

Force is not the basis of society. Force can at best produce an artificial community.

चारित्रोन्मेषणान्नृणां समाजसृष्टिरेव हि।
आत्मिकप्रेरणाच्चैव समाजस्य समुद्भवः।। २२।।

समुदाय इसलिए अस्तित्व में आया है कि मनुष्य अपना पूर्ण विकास कर सके। समुदाय एक आध्यात्मिक आवश्यकता है।

A community comes into beings in order that man may develop himself fully. Community is a spiritual necessity.

चरित्रपूर्णता नूनं समाजे केवलं भवेत्।
समाजत्यागचेष्टा तु निन्दनीया गरलसमा।। २३।।

इहामुत्र हितं नृणां विनश्येदेतया ध्रुवम्।
तत्र मृग्यं वनं धीमन्! न च हिमवतो गिरिम्।
तुहिनमंडितं शृंगं नैशस्याराधने क्षमम्।। २४।।

मानवीय स्वभाव का उच्चतम विकास केवल समुदाय में ही घटित हो सकता है। समुदाय से दूर भागने का कोई प्रयास अनैतिक होता है। यह एक भयानक बुराई है जिसने मनुष्य के अन्दर जहर घोला है, वह जहर यह है कि तुम ईश्वर की भक्ति एवं प्रार्थना के लिए जंगल चले जाओ।

The highest development of human nature can only take place in a community. Any attempt to run away from the community is immoral, a dangerous evil which poisions man's here and hereafter. Thou shall not therefore talk of jungles for prayers and devotion to God.

उपलब्धिर्हि ब्रह्मणः समाजे नात्र संशयः।
ईश्वराराधनं कुर्यात् समाजे संसदि खलु।। २५।।

ईश्वर को केवल समाज में ही पाया जा सकता है। आओ, ईश्वर की प्रार्थना धार्मिक जन–समूह के मध्य ही करें।

God can be realiesed only in the society. Let all our prayers to God be in the congregation.

गृहकोणे विविक्ते च न प्रार्थनापरो भवेत्।
प्रार्थना जनसंनिधौ नूनं महाफलप्रदा।। २६।।

ईश्वर की प्रार्थना हमें अपने घर के कोने में छिपकर नहीं करनी चाहिए। यदि प्रार्थना जनसमूह के मध्य की जाती है तो वह ज्यादा फलदायक होती है।

Not alone hidden in a corner of your house are prayers to God be said. Prayers said in a congregation do alone bear fruit.

पूजास्थानं पूजेशस्य साधारणं सदा भवेत्।
नान्यथा प्रार्थना कापि गृह्यते हीश्वरेण वै।। २७।।

तुम्हारी प्रार्थना और प्रार्थना–स्थल सबके सामने हों। अन्यथा ईश्वर आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं करेंगे।

Let your prayer and the place of prayer be common to all. God shall not accept your prayer otherwise.

शृण्वन्तु हीन्दवः सर्वे तत्त्वानां तत्त्वमेव हि।
यत्तदा न कदाचित्तु विस्मर्तकं भविष्यति।। २८।।
लोकेन युज्यते लोकः केवलं धर्मरज्जुना।
समाजो रचितस्तस्मात् धर्मस्य प्रभवात् खलु।। २६।।

सभी आर्य (हिन्दु) सुनें, सभी सत्यों, आधार भूत सत्यों को, जो कभी विस्मृत नहीं होंगे। मनुष्य मनुष्य के साथ धर्म के बंधन से जुड़ा हुआ है और धर्म की मजबूत कंकरीट से समाज की रचना हुई है।

O Sons of moon ! hear now the fundamental truth of all truths the truth that you shall never try to forget. Man is united to man by the ties of Dharma. With the cementing force of Dharma Society is created.

आधारणात् समाजस्य धर्म इति निरुच्यते।
समाजो गठितो येन नरेण युज्यते नरः।। ३०।।

धर्म समाज की सहायता करता है, समाज का निर्माण करता है और मनुष्य से मनुष्य को जोड़ता है।

Dharma is what supports the society and what makes the society and binds man to man.

समाजस्यैकता मूलमेशा नीतिः सनातनी।
परमेशेन दत्तो नो धर्मो ह्येश सनातनः।
विख्यातो धरणीधाम्नि ह्येतया संज्ञया खलु।। ३१।।

धर्म देवताओं के द्वारा प्रदान किया गया शाश्वत नियमों की सामाजिक एकता है। हम पृथ्वी पर इसे "सत्य सनातन वैदिक धर्म" कहते हैं।

Dharma is the eternal law of social unity, gives to us by the Divinity. we, on earth, call it the Eternal Religion (Sanatana Dharma).

साधुर्जीवनयात्रा च विश्वासदार्ढ्यमेव च।
धर्मेण दीयते सर्वं धर्मेणैक्यं नरस्य तु।। ३२।।

धर्म हमें अच्छे जीवन के नियम एवं सच्ची आस्था देता है। हम सभी एक धर्म में विश्वास करते हैं और धर्म के माध्यम से संगठित होते हैं।

Dharma gives us the laws of good life and true faith. We all believe in the same Dharma and are thus united through Dharma

विश्वासेष्वपि साम्यं च समाजः सृष्ट एव सः।
चिन्ता स्वभावेष्वैक्यं च कर्मण्येव तथा भवेत्।। ३३।।

सर्वोत्तम समुदाय वह है जहाँ पर समान विश्वास, समान सोच, समान अनुभव और समान कर्म है।

The best community is that where all believe alike, think alike, feel alike and act alike.

विश्वासकर्मणोरैक्यमैक्यं चिन्तासु चैव यत्।
सः समाजस्तु सार्थकः प्रशस्यः सूरिभिः सदा।। ३४।।

सच्चा समाज विचार, आस्था एवं कर्म का जनसमुदाय होता है, इस प्रकार का समुदाय ही वेदों के द्वारा वरदान प्राप्त करता है।

The true society is the community of thought, belief and action. Such a community is blessed by the Vedas.

एकेश्वरे मतिर्येशां धन्यास्ते गोष्ठीवासिनः।
ईश्वर–कथिते सत्ये मेशां स्यात् प्रेरणा शुचौ।। ३५।।

वे ईश्वर की कृपा पाते हैं जो किसी समुदाय के सदस्य होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो एक ईश्वर में विश्वास रखता हो और जो उसके द्वारा प्रदान की गई सच्चाई से प्रेरित हो।

Blessed are those who are the members of a community, every individual of which believes in the same God and is inspired by the same truths given by him.

चिन्ताविश्वासयोरैक्यात् कर्मणि जायते मतिः।
एतत् सनातनं तथ्यं ज्ञातकं सूरिभिः सदा।। ३६।।

समाजे यत्र सन्त्येव प्रत्येकं मतयः पृथक्।
नाशस्तस्य समाजस्य क्षिप्रमेव भविष्यति।। ३७।।

इस मूल सिद्धांत को जानिये कि क्रियाशीलता आस्था और विचार की समानता की उपज है। ऐसा समाज जहां प्रत्येक व्यक्ति अपने विचार पर अडिग रहता है, वह किसी भी क्रियाशीलता के अयोग्य और पतन के लिए बाध्य नहीं है।

Know ye the eternal principle that activity is the product of the sameness in thought and belief. The Society where each member holds his own opinion, is incapable of any activity and is ultimately bound to be annihilated.

ये त्वेकवंशजाः लोकाः भोगिन्यो भ्रातरः यथा।
तेषां संरक्षणार्थाय प्रस्तुताः मरणे वयम्।। ३८।।

एक परिवार में बहन और भाई होते हैं जो रक्त की समानता से पैदा होते हैं और वे हमेशा अपना रक्त देकर उनकी सुरक्षा के लिए तत्पर रहते हैं।

In a family , we have brothers and sisters created by the sameness of blood, and we are always ready to shed our blood for their protection.

एवमेव समाजेऽपि धर्ममाश्रित्य चैकता।
संपर्कात् शोणितस्यापि धर्मे रतिर्गरीयसी।। ३६।।

जहां–कहीं भी समाज में हमारा ऐसा समुदाय है वह स्वाभिमान स्नेह और धर्म के बंधन पर आधारित है।

Whereas in a society we have a community of natural affection based on the ties of Dharma.

भ्रातृत्वं यादृशं धर्मे शोणिते तादृशं न हि।। ४०।।

वे सब जो आपके साथ धर्म के बंधन से जुड़े हुये हैं आप उन्हें पहचान जायेंगे, उनका अधिकार आप पर अधिक होगा, आपके अपने सगे भाई–बहनों की अपेक्षा अधिक होगा।

All those who are bound to you by the ties of Dharma, you shall recognize them as having greater right on you than even

your blood brothers and sisters.

आनन्दे सहधर्माणामानन्दो जायते भृशम्।
तेषां दुःखे भविष्यन्तिदुःखं नो नात्र संशयः।। ४१।।

सह–धर्मी होने की खुशी में तुम्हें तुम्हारी खुशी मिलेगी और दुःख में तुम्हें दुःख प्राप्त होगा।

In the joys of co-religionists you shall have your joy and in their sorrows, you shall have your sorrows.

सेवा तु समधर्माणां करणीयतमा मता।
तेषां हितं विधातव्यमेतत्तु श्रेष्ठसाधनम्।। ४२।।

सर्वोत्तम कर्तव्य आपका अपने सह–धर्मियों की सेवा करना है और उनके कल्याण को बढ़ावा देना है।

The highest duty of yours will be to serve your co-religionists and to promote their welfare.

उपेक्ष्य धर्मसेवा तु यदि स्वार्थपराः नराः।
तेषामीशाभिशापेन मरणं हि सबान्धवम्।। ४३।।

जो अपने सह–धर्मी व्यक्तियों की मांगों की उपेक्षा करते हैं और अपने हितों को महत्त्व देते हैं वे अभिशप्त व्यक्ति होते हैं और ईश्वर का प्रकोप उनका और उनके परिवार को विनष्ट कर देता है।

Those who neglect the demands of their coreligionists and prefer their own interests, are cursed beings and God's wrath shall destroy them and their family.

इन्दुवंशोद्भवाः ये च भ्रातरस्ते न संशयः।
आत्मप्रीतिमतिक्रम्य कर्तव्यं तेषु प्रीणनम्।
एशा भगवदिच्छेति ज्ञातव्या पण्डितैः सदा।। ४४।।

हिन्दू का प्रत्येक बच्चा आपका भाई है। आप उनसे अपनी अपेक्षा कहीं ज्यादा प्रेम करेंगे। यही ईश्वर की इच्छा है।

Every child of Hindu is your brother, you shall love them much more than you love youself. That is the will of God.

उपेक्षा स्वार्थ इन्दूनां निष्ठा स्यात् भवतो यदि।
इच्छा कृताऽन्यथा वाऽपि विभोः कोपः ध्रुवं भवेत्।। ४५।।

आर्यों (हिन्दुओं) के प्रति आपकी ओर से किसी भी प्रकार की उपेक्षा की जाती है या स्वार्थ में पड़कर उनके साथ अन्यथा व्यवहार किया जाता है तो ईश्वर की नाराजगी उसके ऊपर अवश्य होगी।

Any selfishness on your part, any neglect of your obligations to the Hindus is bound to have the divine wrath on you.

सम्पत्सु तव सर्वेषु वेदमार्गानुसारिणाम्।
तुल्यरूपोऽधिकारो हि वर्तते नात्र संशयः।। ४६।।

जो कुछ आपके पास है वह आपका नहीं है परन्तु उन सबका है जो वेदों के पवित्र धर्म में विश्वास रखते हैं।

All that you posses belongs not to you but to all who believe in the sacred religion of the Veda.

वेदधर्मे हि निष्ठितः सः समाजः स्वभावतः।। ४७।।

वैदिक धर्म में जो विश्वास रखता है वस्तुतः वही समाज है।

Who belive in Veda actually that is Society.

अस्मत्समाजयुक्तानामयुक्ता स्वार्थनिष्ठता।
ऐश्वर्याण्यस्मदीयानि सर्वैः भोग्यानि तुल्यतः।। ४८।।

यत्किंचाप्यस्मदीयं तत् सर्वस्यैव भवेद् ध्रुवम्।
जानीयात् भो मुनिश्रेष्ठ! नृणामादर्श एव सः।। ४९।।

समुदाय का कोई भी सदस्य स्वार्थी नहीं होगा, जो कुछ भी हमारे पास है वह समुदाय से सम्बन्धित है। हे मुनिश्रेष्ठ! यही मनुष्य का आदर्श है।

No members of community shall be selfish. Every thing we posses belongs to the community. O Great, sage ! this is the ideal for man.

समाज इन्दूनां यस्तु विधात्रा रचितः स्वयम्।। ५०।।

आर्यों (हिन्दुओं) का समुदाय वह समुदाय है जो सर्वदयालु ईश्वर ने मनुष्य को प्रदान किया है।

The community of the Hindus is what the all merciful God has granted to man.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे
।। समाजो नामाष्टमोऽध्यायः।।

इस प्रकार वाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद में 'समाज' नामक अष्टम अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends of the eight chapter entitled "Society" of Shri Rama's discourse, written by Valmiki.

*****

।। नवमोऽध्यायः।।

नवम अध्याय

CHAPTER 9

वेदाः
वेद
THE VEDAS

सुमन्त उवाच–

कथितं भवता देव ! धर्मो बध्नाति मानवम्।
समाजबन्धनं चैव धर्मेणैव हि सम्भवम्।। १।।

सुमंत ने कहा–

हे देव! आपने हमें बताया कि धर्म मानव को मानव से जोड़ता है और सामाजिक सम्बन्ध धर्म के द्वारा ही सम्भव है।

Sumanta said :

O Lord ! you have told us that Dharma unites man to man and creates the communal bonds.

धर्मः क एष वा राजन् ! कथं विज्ञायते च सः।
प्रकाशयतु तत्सर्वमस्माकं सविधे नृप !।। २।।

हे महाराज! धर्म क्या है और वह कैसे जाना जाता है? वह सब हमारे आगे बताइये।

O Great king ! Reveal unto us what Dharma is and low we know Dharma is.

श्रीराम उवाच–

विधानं शावाश्वत् धर्मस्तु संबद्धं येन सर्वकम्।
स्नेहप्रेममयेनैव बन्धनेन धरातले।। ३।।

श्रीराम ने उत्तर दिया–

धर्म 'वह' शाश्वत नियम है जिसके साथ सब कुछ सम्बन्धित है और जो प्यार तथा प्रेममय सम्बन्ध से सबको जोड़ता है।

Sri Rama spoke :

Dharma is the eternal law that unites men into a common

bond of love and affection.

राजाऽहं भवतामेष संबन्धो नहि केवलम्।
धर्मस्य तुल्यरूपस्य खल्वहमस्मि रक्षकः।।४।।

मैं तुम से न केवल एक राजा के रूप में जुड़ा हूँ बल्कि समानरूप से धर्म का रक्षक भी हूँ।

I am united to you not only as your King but as a the up holder of same Dharma as you do.

धर्ममूलो हि वै वेद एष ग्रन्थः सनातनः।
यस्मै श्रद्धां प्रदास्यामः नूनमान्तरिकीं वयम्।।५।।

वेद धर्म के ज्ञान का स्त्रोत है, यह ग्रंथ हमेशा रहने वाला है जिसे हम अपनी आन्तरिक श्रद्धा अर्पण करते हैं।

The source of knowledge of Dharma is the Veda, the eternal scripture to which we pay our respectful image

परमात्म–प्रसादेन ग्रन्थ एषः प्रकाशितः।
धातुर्विधानकं शाश्वदनेन जानयेन्नरः।।६।।

परमात्मा की कृपा से यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ ताकि मनुष्य इसके द्वारा शाश्वत दैविक नियम को जान सके।

God revealed the Veda to man in order that he may know the eternal divine law.

प्रकाशितेन वेदेन समाजैक्यं कृतं तदा।
धर्मस्यैक्यात् समाजोऽभूत् सत्यमेतन्न संशयः।।७।।

वेद के प्रकाशित होने से समाज की एकता स्थापित हुई। धर्म की एकता से समाज का निर्माण हुआ– यह सत्य है, इसमें कोई संशय नहीं है।

As soon as God revealed the Veda, men were suitably united in a social bond.

आत्मनीनाः मनुष्याः स्युर्यदि नो वेदसम्भवः।
विजिगीषा भवेत्तेषामहोरात्रं परस्परम्।।८।।

यदि वेद नहीं होता तो मनुष्य अब तक एक स्वार्थी प्राणी होता और दिन–रात एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा करता।

Had there been no Veda, man would have till now been a selfish creature-everybody competing with everybody.

करुणामयेन हीशेन ध्रुवं वेदं प्रकाशितम्।
इन्दूनां चन्द्रसूनूनां वेदमाश्रित्य चैकता।।६।।

करुणामय परमात्मा ने वेद प्रकाशित किया और चन्द्रमा के पुत्र आर्यो (हिन्दुओं) की एकता वेद को आश्रय बनाकर ही है।

The merciful God granted to us the Vedas and we were united through our love to the Veda into a community of Indus- the sons of moon.

वेदो बध्नाति नः सर्वैः सर्वदेशीयकैः सह।
अस्मत् साम्राज्यमुक्तैर्हि दूरान्तरनिवासिभिः।।१०।।

जो रिश्ता हमारे पवित्र साम्राज्य में दूर–दराज के लोगों को आपस में जोड़ता है वह वेदों का नाता है।

The bond that unites us to the people far away into the vast areas of our Holy Empire is the bond of the Vedas

भाषा यद्यपि भिन्नाः स्युर्विभिन्नाश्च परिच्छदाः।
अन्नानि भिन्नरूपाणि गृह्यन्ते यद्यपि पृथक्।।११।।

पवित्रवेदग्रन्थेषु सर्वेषां दृश्यते स्वता।
तस्मात्तैर्गठिता नूनं महाजातिर्महीतले।।१२।।

उनमें से अधिकतर अलग भाषाएं बोलते हैं अलग रीति–रिवाज को मानते हैं, विभिन्न पोशाकें पहनते हैं, विभिन्न प्रकार का भोजन करते हैं और अलग–अलग देवताओं को विभिन्न तरीकों से पूजते हैं लेकिन सब पवित्र वेदों में विश्वास रखते हैं और इस प्रकार पृथ्वी पर एक महान राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

Most of them speak different languages, observe different customs, wear varied kinds of dresses, and different kinds of diets in different manner, but all of them believe in the Holy Vedas and thus constitute one great nation on the earth.

बभूवुस्ते तदाज्ञाश्च लेखने पठने तथा।
यदा वेदस्य विस्तारो बभूव लोकसंहतौ।।१३।।

न ग्रन्थाः लिपयश्चैव तदासन् धरणीतले।
श्रुतिरित्याख्यया वेदो यदा ख्यातो नरेषु वै।।१४।।

वेदों का ज्ञान मनुष्य को तब मिला जब उसे पढ़ने और लिखने का ज्ञान नहीं था, जब कोई लिपि नहीं थी और जब पुस्तकें नहीं थीं और इसीलिए मनुष्यों में वेद 'श्रुति' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

The earth was revealed unto man when he was ignorant of even reading and writing. When there was no script and no books and was therefore called Sruti.

आधुनिके हि काले सा लिखिता ब्राह्मलेखने।
इतः प्रागन्यलिप्यां तु लिखितासीन्न संशयः।। १५।।

आधुनिक काल में वेद ब्राह्मी लिपि में लिखे हुए हैं लेकिन ब्राह्मी लिपि में आने से पहले क्या ये कई लिपियों में लिखे जा चुके थे।

The veda at present is in the Brahmi script, but in various scripts was it written before the Brahmi script came into being.

नानालिपिषु वेदस्य लेखनं संभवेद् ध्रुवम्।
ब्राह्मीलिपिर्यदा लुप्ता भविष्यति धरातले।। १६।।

तात्कालिकी लिपिस्तत्र प्रभवेद्वेदलेखने।
अनित्या लिपयो ज्ञेया वेदो नित्यः सनातनः।। १७।।

वेद कई लिपियों में लिखे जायेंगे, जब ब्राह्मी लिपि विद्यमान नहीं होगी। वेद चाहे समय के अनुसार अलग लिपि में लिखे जायें क्योंकि लिपि अस्थाई है। पर वेद हमेशा रहने वाले और स्थायी हैं।

In the various scripts will the Veda be written, when the Brahmi scripts will be no more. The Veda may be written in the script of the times, for the script is temporary, while the Veda is eternal.

अर्थहीनो लिपिर्ज्ञेया केवलं सार्थका श्रुतिः।
वेदस्य वेदता नूनं सदसज्ज्ञानविकासने।। १८।।

लिपि की कोई महत्ता नहीं है, असली मूल्य वेद के सार में छिपा है जो वास्तविक और अवास्तविक ज्ञान प्रदान करते हैं।

The scripts have no importance, for the real value lies in the contents of the Vedas which contain the knowledge of what is real and what is unreal.

चतुर्भिरंशैर्वेदस्य विभागो दृश्यते खलु।
ऋचो यजूंषि सामान्यथर्वाणश्चतुष्टयम्।। १९।।

वेद चार भागों में विभक्त हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद।

The Veda is divided into four parts – The Rigveda, the yajurveda, the Samaveda, and Atharvaveda.

ऋग्वेदेऽध्यायकाः सन्ति ह्येकविंशतिः संख्यका।
शतं यजुषि नव च साम्नि सहस्रमेव च।। २०।।

अथर्ववेदे पंचाशदध्यायाः ध्रुवमेव हि।। २१।।

ऋग्वेद 21 भागों (शाखाओं) में बंटा है, यजुर्वेद 109 भागों (शाखाओं) में,

सामवेद 1000 भागों (शाखाओं) में और अथर्ववेद 50 भागों (शाखाओं) में बंटा है।

The Rigveda is divided into 21 sections, the Yajurveda into 109 sections, the Samaveda into 1000 sections and the Atharvaveda into 50 sections.

मंत्राणां कलनादेते संहिताः इति कीर्तिताः।
चतुर्धा संविभक्तस्य वेदस्य धरणीतले।। २२।।

इन चारों वेदों को 'संहिता' कहा है क्योंकि ये मन्त्रों के संग्रह हैं।

These four Veda are also called Samhitas, for they are the collections of the Mantras.

चतस्रः संहिता एव नान्यो ग्रन्थो भुवि स्मृतः।
भगवद्वाणीरित्येव पूजनीया नरैः सदा।। २३।।

केवल ये चार संहितायें ही परमात्मा की वाणी हैं और हमारे आदर के पात्र हैं दूसरी कोई पुस्तक नहीं।

These four Samhitas alone, and no other book to be the word of God and deserve our respect.

वेदविरुद्धग्रन्थेषु ह्यास्था येषां हतात्मनाम्।
वाक्यजालैर्विमुग्धानां तेषां तु नरकं ध्रुवम्।। २४।।

जो कोई किसी अन्य पुस्तक को परमात्मा की वाणी मानकर विश्वास करेगा वह मृत्यु के बाद नरक की यातनाओं को भोगेगा।

Those who will believe any other book to be the word of God will be into the dungeon of hell after death.

अभिशप्ताश्च पाप्मानो वेदनिन्दापराश्च ये।
अपमन्यन्ते च ये वेदान् यथा कथंचिदेव हि।। २५।।

उन्हें धिक्कार है जो वेदों की बुराई करते हैं या किसी प्रकार से निरादर करते हैं।

Curse be on them who speak ill of the Veda or show disrespect in any manner.

वेदार्थसुखबोधाय वेदांगानि कृतानि तु।
षट्संख्यकानि मुनिभिरतीव पूर्वे युगे।
शिक्षाकल्पव्याकरणनिरुक्ताश्च्छन्दो ज्योतिषम्।। २६।।

प्राचीन समय में मुनियों ने छः वेदांग बनाए, जिसकी मदद से तुम वेदों की व्याख्या कर सकते हो। वे हैं शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष।

In ancient times, the sages framed six Vedangas, with the help of which you can interpret the Vedas. They are Siksha. Kalpa, Vyakarna, Nirukta,Chhandah and Jyotisha.

उच्चारणस्वरार्थं तु शिक्षा सृष्टा सुधीगणैः।
व्याकरणं भाषार्थं तु कल्पे यजनस्य कल्पना।।२७।।

विद्वानों ने उच्चारण की कला को सिखाने के लिए शिक्षा की रचना की, भाषा की जानकारी के लिए व्याकरण है, 'कल्प' में यज्ञीय कर्म काण्ड का तरीका है।

Siksha deals with pronunciation and accents, Vyakarna is grammar, Kalpa is the method of ritual.

निरुक्तः शब्द–व्युत्पत्तिश्छन्दस्तु पद्यमुच्यते।
ज्योतिषा संविजानीयात् तारकाग्रहसंस्थितिम्।।२८।।

'निरुक्त' शब्द की व्युत्पत्ति वाला अंग है, 'छन्द' पद्य है जबकि 'ज्योतिष' खगोल विज्ञान है।

Nirukta is philology, Chhandah is prosody while Jyotisha is astronomy.

ऋषिभिर्वेदभाष्यानि प्राचीनैः रचितानि तु।
ब्राह्मणान्युपनिषदो भाष्यानीत्यवधारय।।२९।।

प्राचीन ऋषियों ने वेदों पर कई टीकायें की हैं, उपनिषद् और ब्राह्मण ऐसी ही टीकायें हैं।

The ancient sages have written several commentaries on the Vedas, the Upanishads the Brahmanas are such commentaries.

ब्राह्मणान्युपनिषदो न श्रुतिर्भाष्यमेव हि।
यद्यपि प्राचीनतया कल्प्यन्ते श्रुतिरित्यपि।।३०।।

उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रंथों की वेदों से तुलना नहीं करनी चाहिए क्योंकि ये टीकायें हैं। हालांकि ये टीकायें सबसे प्राचीन हैं।

The Upanishads and the Brahmanas are not to be identified with the Vedas, though of all the commentaries, they are the oldest.

अपौरुषेयाः विज्ञेयाः वेदाः ग्रन्थान्तरं न हि।
नापौरुषेयाः मन्तव्याः ब्राह्मणान्युपनिषदः।।३१।।

दैविक सत्ता केवल वेदों में विद्यमान है और किसी पुस्तक में नहीं, चाहे वे

उपनिषद् हों या ब्राह्मण।

The divine authority is only vested in the Vedas and not in any other book whether be the Upanishads or the Brahmanas.

दशोपनिषदः सृष्टाः ईश–केन–कठास्तथा।
प्रश्न–मुण्डक–माण्डूक्याश्छान्दोग्यास्तैत्तिरीयकाः।।३२।।
ऐतरेयस्तथा बृहदारण्यका इमाः दश।।३३।।

उपनिषद् दस हैं– ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक।

There are ten Upanishads Isha, Kena, Katha, Prasna Mundaka, Mandukya, Atreya, taittirya, Chhandogya, Brihadarnyka.

वर्णनं ब्रह्मणामत्र करवाणि भवत्पुरः।
शतपथः सांख्यायनः गोपथस्तैत्तिरीयकम्।।३४।।
ऐतरेयो मैत्रायणः षड्विंश आर्ष्यतांडवाः।
अद्भुतश्च दशेतानि ब्राह्मणानि निशामय।।३५।।

मैं आपके समक्ष ब्राह्मण का वर्णन करता हूँ– शतपथ, सांख्यायन, गोपथ, तैतिरीय, ऐतरेय, मैत्रायण, शड्विंश, आर्षेय, ताण्ड्य, अद्भुत–ये संख्या में दस हैं।

I describe of the Brahmanas which are Shatapatha, Shankayana, Gopatha, Taittriya, Atreya, Maitrayana, Shadvimsha, Arshaya, Tandya, Adbhuta- ten in number.

यद्यप्यतिप्राचीनाः स्युर्ब्राह्मणान्युपनिषदः।
भाष्येभ्योऽधिकमर्यादा न तेषु दीयते क्वचित्।।३६।।

चाहे उपनिषद् और ब्राह्मण कितने भी प्राचीन हों, उनको टीकाओं से ऊँचा स्थान नहीं दिया जा सकता।

However old the Upanishads and the Bramanas may be, they are to be given no status higher than that of commentaries.

ऋषिभिर्विविधाः ग्रन्थाः रचिताः बहुभिः पुरा।
दर्शनाख्यां गतास्ते तु वेदार्थविनिबोधकाः।।३७।।

वेदों की दार्शनिकता का प्रतिपादन करने के लिए महान ऋषियों ने अनेक ग्रंथों की रचना की है जिन्हें 'दर्शन' कहा गया है।

To propound the philosophy of the Vedas, the great sages have written books called Darshanas.

सूत्रैर्निग्रन्थिताः ह्येते भृशं विस्मयकारकाः।
अल्पाक्षरा वचोमात्रैः विद्वद्भिः सर्वपूजिताः।। ३८।।

ये ग्रन्थ सूत्र शैली में लिखे गये हैं। कम से कम अक्षरों में लिखे गये आश्चर्य जनक ये ग्रंथ संसार के विद्वानों से सम्मानित हैं।

These books are written in the form of aphorishms short & pithy formulas, which are the wonder of the world and are highly respected by the scholars.

पतंजलिकृतो योगः सांख्यं तु कपिलेन वै।
वैशेषिकं कणादोक्तं न्यायस्तु गौतमेन हि।। ३९।।
मीमांसा जैमिनीप्रोक्ता वेदान्तो व्यासनिर्मितः।
जैमिनिना च व्यासेन मीमांसे पूर्व चोत्तरे।। ४०।।

कपिल ने सांख्य, पंतजलि ने योग, कणाद ने वैशेषिक, गौतम ने न्याय, जैमिनि ने पूर्व मीमांसा और व्यास ने उत्तर मीमांसा की रचना की।

Kapila wrote Sankhya, Patanjali wrote Yoga, Kanada wrote vaisheshika, Gautama wrote Nyaya, jaimini wrote Purva Mimansa and Vyas wrote Uttara mimansa.

सिद्धान्ताः वर्णितास्तेषु पूर्वोक्तादर्शनेषु हि।
बाध्यता ग्रहणे तेषां नास्ति वः क्वचिदत्र हि।। ४१।।

इन दर्शनों में जो विचार हैं उनके ग्रहण करने में तुम्हारी कहीं भी बाध्यता नहीं है।

The opinions expressed in the these Darshanas are varied and should not be binding upon you.

यद्यपि पूजनीयास्ते दर्शनविनिबन्धकाः।
आलोचयितुमेतेषां मतं शंकां तु मा कृथा।। ४२।।
विचारात् वर्धते ज्ञानमेषा साधारणी कथा।। ४३।।

यद्यपि ये दर्शनकार सम्माननीय हैं तथापि इनके सिद्धान्तों पर आलोचनात्मक विचार करना चाहिए क्योंकि विचार करने से ज्ञान बढ़ता है।

Even though these Darshana are the illustrious works, we should not be afraid of criticising them. To tell the truth, in criticism lies the development of knowledge.

सिद्धान्तानां विशेषत्वं यदि त्वं ज्ञातुमिच्छसि।
तेषां मननविश्लेषः कर्तकोऽतिप्रयत्नतः।। ४४।।

तुम्हें परिस्थितियों को सुनिश्चित करने का प्रयत्न करना चाहिए और

लेखकों के मन का चित्रण करना चाहिए कि उन्होंने ये विशेष विचार किन परिस्थितियों में व्यक्त किए।

You must try to ascertain the circumstances and scan the mind of the authors why they expressed a particular opinions.

निर्णीतव्यं पुनस्तेषां मतस्य भिन्नता कथम्।
कथं तदन्यसिद्धान्ते तेषां न मनसो गतिः।। ४५।।
सिद्धान्तविशेषे तेषां हठतैतादृशी कथम्।। ४६।।

तुम्हें यह अवश्य जानना चाहिए कि लेखक एक–दूसरे से अलग क्यों हैं, वे एक विचार को दूसरे से अधिक महत्ता क्यों देते हैं और वे एक विशेष विचार से क्यों जुड़े हैं?

You must find out why the authors differ from each other, and why they prefer one opinion to the other and why they stick to particular opinion.

कीदृगासीच्च परिवेष एतेषां ग्रन्थकर्तृणाम्।
के गुरवः के च ग्रन्थाश्च तेषां पूर्ववर्तिनः।। ४७।।

इन ग्रन्थकर्ताओं का वातावरण कैसा था? कौन से ऐसे ग्रन्थ और गुरु थे जिन्होंने उनके विचारों को ढाला था।

What were the environments of these authors? what were the books and teachers that moulded and fashioned their ideas.

विचारपद्धतिस्त्वेषा संगता मन्यते बुधैः।
विचारस्य विकासोऽपि ह्यनयैव सुसिद्ध्यति।
मूर्खो विचारमूढो हि विचाराद्भयमेष्यते।। ४८।।

आलोचनात्मक विचार करने का यह सही तरीका है। आलोचनात्मक विचार की मदद से बौद्धिक स्तर बढ़ता है, विचार से भ्रान्त मूर्ख व्यक्ति ही विचार करने से डरता है।

This is the right method of criticism. With the help of criticism is raised the intellectual standard, incapable of criticising, only talk ill of criticism.

तर्कातीतो ह्ययं वेदः स्वीकृतो सर्वमानवैः।। ४९।।
भगवत्प्रकाशिते ह्यत्र संहितानां चतुष्टये।
वेदरोधि कुतर्कस्तु दम्भिभिः क्रियते यदा।
तस्मिंश्चास्ति रतिर्येषां तेषां तु नरकं ध्रुवम्।। ५०।।

प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रयत्न करना चाहिए कि वे वेदों की आलोचना न

करें, क्योंकि चार संहितायें परमात्मा की सासें हैं। वेदों की बुराई पाप है। वे सब जो इसमें शामिल होंगे उन्हें नरक की आग में जलना होगा।

Let it be granted by everybody that they should not talk of criticism in the matter of the Vedas, for the four Samhitas are the breath of God. To express an adverse opinion on the Vedas is a sin. All those who will indulge in it shall be put in the fires of purgatory.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे

।। वेदो नाम नवमोऽध्यायः।।

इस प्रकार वाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद में 'वेद' नामक नवम अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends the ninth chapter entitled "The Vedas" of Shri Rama's Discourse written by Valmiki.

*****

।। दशमोऽध्यायः।।

दशम अध्याय

CHAPTER 10

नित्यनैमित्तिकः

नित्य–नैमित्तिक कर्म

DAILY AND OCCASIONAL DUTIES

सुमन्त उवाच–

वेदानुशासनानि नु कानि कथय हे प्रभो!।
यान्याश्रित्य नरस्तिष्ठेत् योगे वै परमात्मनः।।१।।

सुमन्त ने कहा–

हे भगवन्! वेदों में मनुष्यों के द्वारा किये जाने वाले कर्म कितने प्रकार के बताये गये हैं? निश्चित रूप से कहिये, जिनका आश्रय कर मनुष्य परमेश्वर की भक्ति में तल्लीन रहे।

Sumanta said :

O Lord ! what are the duties laid down in the Vedas for observance in order that may be in communion with God ?

श्रीराम उवाच–

द्विविधे कर्मणि वेदैरनुशिष्ठे धरातले।
नित्यं नैमित्तिकं चैव करणीयं बुधैः सदा।।२।।

श्रीराम ने उत्तर दिया–

इस वसुन्धरा पर वेदों के द्वारा दो प्रकार के कर्म करने का विधान किया गया है, नित्य (प्रतिदिन करने योग्य कर्म) और नैमित्तिक (किसी विशेष फल की प्राप्ति के लिए करने योग्य कर्म) बुद्धिमान पुरुषों को हमेशा इन दोनों प्रकार के कर्मों को करना चाहिए।

Sri Rama said :

There are two kinds of obligations, ordained by the Vedas, for observance by men daily and occasionally.

महायज्ञाश्च वै पंच करणीयाः मताः सदा।
इन्दुभिः सर्वदेशीयैः पालनीयाः प्रयत्नतः।।३।।

ब्रह्मयज्ञो देवयज्ञः समाजयज्ञ एव च।
पितृयज्ञ भूतयज्ञ इत्येते पंच एव तु।।४।।

सभी जगह निवास करने वाले आर्यों (हिन्दुओं) को पाँच महायज्ञ प्रयत्न पूर्वक हमेशा करने चाहिए जिनके नाम हैं– ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, समाजयज्ञ, पितृयज्ञ और भूतयज्ञ।

Daily obligations are five great sacrifices, to be performed by every Hindu, every day of his life. They are Brahma-Yajnah, Deva- Yajnah, Samaja-Yajnah, Pitri-Yajnah and Bhuta-Yajnah.

संध्योपासनमित्यादि विज्ञेयो ब्रह्मयज्ञतः।
वेदमंत्रेण संयुक्तं हवनं देवसंज्ञितम्।।५।।
इन्दूनां पूजनं ज्ञेयं समाजयज्ञ एव हि।
भूतयज्ञो गवां सेवा पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।।६।।

सन्ध्योपासना आदि को 'ब्रह्मयज्ञ' जानें, वेदमन्त्रों से हवन करना 'देवयज्ञ' कहलाता है। श्रेष्ठ पुरुषों का सम्मान करना 'समाजयज्ञ', गायों की सेवा भूतयज्ञ और माता–पिता को तृप्त करना पितृयज्ञ कहलाता है।

Brajma- Yajnah consists in the performance of daily divine service (sandhyopasana); Deva- Yajnah is the performance of havna with Veda mantras; Samaja- Yajnah is service to the Hindu community; Pitri – Yajnah is offering of in the memory of the ancestors ; Bhuta- Yajnah is the feeding of cows.

सायं प्रातश्च कर्तव्या प्रार्थना संध्ययोर्द्वयोः।
वेदबोधितमेतत् स्यात् संपालनीयमिन्दुभिः।।७।।

दोनों सन्धिवेलाओं में अर्थात् प्रातःकाल और सायंकाल सभी आर्यों (हिन्दुओं) को प्रतिदिन संध्योपासना करनी चाहिए।

It is enjoined by the Veda that every Hindu will daily perform Sandhyopasana at twilight in morning and evening.

आवृत्तिर्वेदमंत्रस्य हि संध्यायाः प्रथमाकृतिः।
मार्जनमाचमनं च प्राणायामोऽघमर्षणाः।।८।।
गायत्र्युपसनं चैव वेदमंत्रैः सुसिध्यते।
संध्यायाः सारमात्रस्तु गायत्र्याः जपनं मतम्।
भक्तितः साधयेदेतत् परार्थप्रदानकृत्।।९।।

वेदमन्त्रों का बार–बार उच्चारण करना आदि संध्या का प्रथम स्वरूप है। मार्जन, आचमन, प्राणायाम् अघमर्षण और गायत्री–उपासना आदि वेदमन्त्रों द्वारा अच्छी रीति से किये जाते हैं। गायत्री मन्त्र का जप सन्ध्या का सार माना गया

है। परमार्थ प्रदान करने वाले इस गायत्रीमन्त्र को भक्तिभाव से अपनाना चाहिए।

The main features of Sandhyopasana are the recitation of the Vedamantras, concerning achamana, Marjana, Pranayama, Aghamarshana. Let the Gaytri mantra be also recited, because it is the heart of Divine service and must be performed with full devotion.

संध्यावन्दनकाले तु निम्नोद्धृतान् श्लोकान् पठेत्।।१०।।

संध्यावन्दन के समय नीचे लिखे हुए श्लोकों को पढ़ना चाहिए।

At the Sandhyopasana, we enjoy the recitation of the verses as are given below.

सर्वज्ञः सर्वशक्तिर्भूस्त्वमेव जगतां प्रभुः।
अक्षरः सर्वगस्त्वं हि कूटस्थश्च निराकृतिः।।११।।

तू ब्रह्माण्ड का स्वामी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, स्वयंभू, अक्षर, सर्वगामी, सत्तावान् और निराकार है।

O' Supreme being thou art Omniscient, omnipotent, omnipresent, unchangeable and inmutable.

निर्विकारः स्वयंज्योतिः परिवृतेरगोचरः।
स्नेहमयीं कृपां देहि ह्यानुकूल्यं कुरुष्व नः।।१२।।

तू निर्विकार, स्वयंप्रकाशक और सम्पूर्ण जगत् के लिए अगोचर हो। आप सभी स्नेहमयी अनुकम्पा को जो हमारे लिए अनुकूल है, उसे प्रदान करें।

Thou art ineffable, selffeffugent and eternal. We pray for thy mercy and Kindness, we pray for thy love and help.

यत् किंचिदस्ति चास्माकं कृपया तव लभ्यते।
पूर्णत्वं वासनानां यत् केवलं भवतः कृपा।।१३।।

जो कुछ हमारे पास है वह सब आपकी कृपा से प्राप्त हुआ है। आकांक्षाओं में जो पूर्णता प्राप्त हुई है, उसमें भी आपकी कृपा है।

Whatever we possess, we owe to thee; whatever we desire, we hope to attain through thy grace.

आसूर्यादणुपर्यन्तं भुवनं धार्यते त्वया।
इन्दुसमाजरक्षार्थं कृपां याचामहे तव।।१४।।

सूर्य से अणु पर्यन्त सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आपने धारण किया हुआ है। आर्यों (हिन्दुओं) के समाज की रक्षा के लिए हम सब आपसे याचना करते हैं।

As you sustain the universe from the sun down to the minutest particle, we pray for your kindness to sustain the Hindu Community.

जीवनं धनसंपत्तिः तेजः प्राणान् बलं मनः।
कल्याणार्थं समाजस्य त्यक्ष्यामः सर्वमेव हि।। १५।।

जीवन, धन–सम्पत्ति, तेज, प्राण, बल और मन– यह सब कुछ आर्यों (हिन्दुओं) के समाज के कल्याण के लिए हम त्याग देंगे।

We pledge unto our life and all that we posses that we shall devote all our energy so long as we live to the service of the community.

प्रतिजानीम गंभीरं नास्माकं कामना क्वचित्।
इन्दुसमाजसेवायां शुद्धमनुरागं विना।। १६।।

हम प्रतिज्ञापूर्वक स्पष्ट कह रहे है कि हिन्दूसमाज की सेवा में शुद्ध प्रेम के अलावा हमारी कोई कामना नहीं है।

We solemnly declare that we have no individual interest but one and it is the interest of the Hindu Community.

कायेन मनसा वाचा हानिं कुर्मो न वा क्वचित्।
इन्दुवंशोद्भवानां हि शपथो ह्येष नो ध्रुवम्।। १७।।

हमारा यह दृढ़ संकल्प है कि हम मन, वचन और कर्म से आर्यवंश (हिन्दुवंश) में उत्पन्न किसी भी व्यक्ति को हानि नहीं पहुंचायेंगे।

We declare on oath that we will never harm any Hindu in thought, word or deed.

प्रार्थना श्रेयसी स्यात्तु मन्दिराभ्यन्तरे भृशम्।। १८।।

मन्दिर के अन्दर की गई प्रार्थना अत्यधिक कल्याणप्रद होती है।

Sandhyopasana shall preferably be performed in a congregation in the temple.

न विद्यते यदि गेहसविधे मंदिरं तदा।
मन्दिरे प्रार्थना कार्या दिवसे सकृदन्ततः।। १६।।

जब घर के पास कोई मन्दिर न हो तब भी दिन में एक बार दूर होने पर भी मंदिर में जाकर प्रार्थना करनी चाहिए।

If no temple is available in the near vicinity, it may be performed at home, but at least once in a day you shall perform it in the temple.

घटिकायाः तृतीयांशात् संध्यायाः प्राक् तु मन्दिरे।
घण्टानिनादः कर्तव्यः राष्ट्रियैः पुरुषैः खलु।। २०।।

राष्ट्र के शुभचिन्तक व्यक्तियों को सन्ध्या से पूर्व आठ मिनट तक (24 घटिका, इसका तीसरा भाग 8 मिनट) प्रत्येक मन्दिर में घण्टा बजाना चाहिए।

The state shall arrange that at least eight minutes earlier than the commencement time of the prayers, the bells shall be rung in all the temples.

भीन् पलान् निःश्वनेनैनं घोष्यते संध्यावन्दनात्।। २१।।

सन्ध्या से पूर्व तीन पल अर्थात् तीन मिनट 36 सेकेण्ड तक तेज ध्वनि से घण्टा बजायें। (एक पल = 1 मिनट 12 सेकेण्ड)

Again, at start of divine service, bells shall be rung for three (one minute and 12 seconds) to announce that prayers are being said.

निर्दिष्टसमये संध्या कुर्यात् सार्धं सधर्मभिः।
गेहे साधारणे तत्र यन्मन्दिरमितीष्यते।। २२।।

सामान्य घर में जहाँ मन्दिर के लिए स्थाननिश्चित किया हुआ है, वहाँ सहधर्मी के साथ निर्दिष्ट समय पर सन्ध्या करनी चाहिए।

Prayers must be said at fixed time along with the coreligionists in the common house which is temple.

साधारणी हि प्रार्थना भृशं भगवतः प्रिया।
रहसि प्रार्थना या तु न विशेषफलप्रदा।। २३।।

सामान्यजनों को भी समझ में आने वाली प्रार्थना भगवान् को विशेष प्रिय होती है। एकान्त में की जाने वाली प्रार्थना विशेष फलदायक नहीं होती है।

It is the common prayers alone that are blessed by the Supreme being. Prayers said alone have not much effect.

वर्तेत मन्दिरं दूरे समयाध्युषिते ततः।
उपासितव्यं स्थानीयैः सकृत् सप्ताहान्तके ततः।। २४।।

यदि मंदिर घर से अत्यधिक दूर हो तो सप्ताह के अन्त में एक दिन स्थानीय लोगों के साथ मिलकर प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए।

If a temple is far away, let once in a week all the people of the locality visit the temple to say prayers.

निर्दिष्टमीश्वरेणैव पुण्याहं रविवासरम्।
उपासितव्यं सर्वैस्तु सवर्गीयैर्हि मन्दिरे।।२५।।

परमेश्वर द्वारा रविवार को पुण्य दिन कहा गया है अतः इस दिन मंदिर में अपने समानवृत्ति वाले लोगो के साथ मिलकर प्रार्थना करें।

The auspicious day, blessed by the Lord, for saying prayers by the entire community in the temple is the day of Sun the Sunday.

निश्चेतव्यं मनस्येतत् पार्थक्यं न हि मन्दिरे।
उच्चावचं धन्यधनं पूतापूतं समंतदा।।२६।।

मन में यह निश्चय करना चाहिए कि मंदिर में कोई भी व्यक्ति ऊँच–नीच, गरीब–अमीर, पवित्र–अपवित्र नहीं होता, बल्कि सब एक समान होते हैं।

You shall make no distinction between high and low, rich and poor, clean and unclean at the temple

यदाभेदो ह्येतद्विधः कृतस्तु मन्दबुद्धिः।
ते राजपुरुषैर्दण्ड्याः सर्वशक्तिधरैस्तदा।।२७।।

जो व्यक्ति ऐसा भेद करता है वह मन्दबुद्धि कहलाता है, ऐसे व्यक्ति राजपुरुषों द्वारा दण्डनीय हैं।

Those who will make such distinction shall be punished by the state.

आरम्य नवमाद् वर्षात् संध्या चोपासना तथा।
सर्वैश्च निर्विशेषेण कर्तव्या वेदशासनात्।।२८।।

वेदों के नियमानुसार सभी मनुष्यों को अपनी आयु के नवमें वर्ष के आरम्भ से सन्ध्या और उपासना अवश्य करनी चाहिए।

All the persons, male and female, from the ninth year of their life are enjoined to perform Sandhyopasana till the end of their earthly existence.

अहोरहः प्रकुर्वीरन् देवयज्ञं सदा नराः।
भक्तिमन्तस्तु वेदज्ञाः ह्येतद्वै वेदशासनम्।।२६।।

भक्ति से युक्त वेदज्ञ, मनुष्य प्रतिदिन 'देवयज्ञ' अर्थात् 'हवन' करें– ऐसी वेदों की आज्ञा है।

Deva-Yajnah, as enjoined by the Vedas, will be performed with the veda mantras by the devotees every day.

हवनं हि रवेः दिने कर्तव्यं सकलैः नरैः।
मन्दिरे राष्ट्रनिर्देशादेतत्तु नान्यथा भवेत्।।३०।।

राजकीय निर्देशानुसार रविवार के दिन सभी लोग मंदिर में हवन करें, इससे भिन्न कोई व्यवस्था न हो।

The state shall arrange that in all the temple on Sundays, the Havana shall be performed to which all the persons, male and female, in the locality, shall visit.

सर्वेऽपि हवनं कुर्युः मन्त्रोच्चारणतत्पराः।।३१।।

मन्त्रोच्चारण के साथ उन्मुक्त होकर सभी लोगों को हवन करना चाहिए।

All who shall participate in the performance of the Havana, shall recite the Veda Mantras.

तत्र तु जातिवर्णानां नोच्चनीचता भवेत्।
समानाः सन्ति सर्वेऽपि हीश्वराग्रे च मानवाः।।३२।।

हवन करते समय कोई भी व्यक्ति जाति और वर्ण के अनुसार किसी से छोटा या बड़ा नहीं है, ईश्वर के लिए सभी मनुष्य समान होते हैं।

There shall be no distinction of colour and caste, high and low at such ceremonies, as everyone is equal in the eyes of God.

गृह्णोयात् बालकः शिक्षां भूत्वैकादशवर्षकः पुनः।
देवयज्ञार्थ मंत्राण्यं हवनेषूपयोगिनाम्।।33।।

ग्यारह वर्षीय बालक हवन में उपयोगी मंत्रो की शिक्षा प्राप्त करे।

Children, as soon as they enter the eleventh year of their life, shall be taught the mantras concerning Deva-Yajnah.

जागरणे सुषुप्तो वा चान्नपान क्रियादिषु।
शास्त्राभ्यासकालेऽपि चिन्तैषा मनसि ध्रुवम्।
विसृष्ठोऽहं समाजार्थं समाजार्थं हि जीवनम्।।34।।

जागते हुए, सोते हुए, खान–पान करते हुए, शास्त्रों का अभ्यास करते हुए मन में हमेशा यह भावना रखनी चाहिए कि मैं समाज के लिए बना हूँ और हमारा जीवन समाज के लिए है।

Walking and sleeping, eating or drinking, playing or reading, there shall be one consideration with every Hindu and it is that he is born to promote the welfare of his community.

सवर्गानां च सेवायां कुर्यान्न मरणाद्भयम्।
यावज्जीवं तु सेवेत स्वसमाजमतंद्रितः।। 35।।

अपने बन्धुओं की सेवा करने में मृत्यु से भी नहीं डरना चाहिए। जब तक जियें तब तक आलस्य त्याग कर अपने समाज की सेवा करें।

Even at the risk of his life, a Hindu shall be pledged to serve his people. He is to live and die for his community.

महान्तः पितरोऽस्माकं लब्धं तेभ्यो हि जीवनम्।
अस्माकं विभवाः ये तु सर्वे ते तेभ्य आगताः।। 36।।

तेषामार्थे हि यज्ञादिः पितृयज्ञः स उच्यते।। 37।।

हमारे लिए सबसे बड़े देवता हमारे पितर अर्थात् माता–पिता व आचार्य हैं, यह जीवन निश्चित रूप से इन्हीं से प्राप्त हुआ है। हमारी सभी समृद्धियाँ उन्हीं से प्राप्त हुई हैं अतः उनके लिए किया गया यज्ञ 'पितृयज्ञ' कहलाता है।

We are the descendants of the great race. We live because our ancestors once lived. Every thing we possess we owe to them.offerings in there memory constitute the pitri-Yajna.

गोसेवा भूतयज्ञः स्यात् सदा कार्या तु धीमता।
गौः रक्षति समाजं नस्तस्मात् सेवेत तां सदा।। 38।।

गो–सेवा 'भूतयज्ञ' है, बुद्धिमान पुरुष को हमेशा इस यज्ञ को करना चाहिए। गौ हमारे समाज की रक्षा करती है, इसलिए हमेशा उसकी सेवा करनी चाहिए।

Bhuta-Yajna is the feeding of the cows and we enjoy in its daily performances as it is the cows who sustain our race.

नैमित्तिकास्तु संस्काराः वेदशास्त्रानुमोदिताः।
विभिन्नसमये तेषामनुष्ठानं विधीयते।। 39।।

नैमित्तिक संस्कार वेदसम्मत हैं, अतः विभिन्न समय में उनके अनुष्ठान का विधान किया गया है।

Sanskaras are the occasional obligations of every follower of the Veda. They are to be performed at certain occasions.

संस्काराः दश एवैते तेषां प्राग्जन्मनस्त्रयः।
पुंसवनं, गर्भाधानं, सीमन्तनयनं तथा।। 40।।

ये संस्कार दस ही हैं जन्म से पहले तीन संस्कार पुसंवन, गर्भाधान और सीमन्तोन्नय होते हैं।

These Sanskaras are ten in number. Three of them are

prenatal. They are called Garbhadanam, Punsavanam and Simantonna-Yanam.

शिशोस्तु जननादूर्ध्वं जातकर्म विधीयते।
वेदमन्त्रेण पित्रैव संस्कारः समनुष्ठितः।। 41।।

शिशु के जन्मोपरान्त जात कर्म संस्कार किया जाता है। यह संस्कार वेदमन्त्र से पिता के द्वारा किया जाता है।

The fourth is Jatakarma which is performed by the father with the Veda mantras immediately after the birth of the child.

नन्दयन् नन्दनं तातो दीर्घायुर्याचते ततः।
कल्याणं–बुद्धिमेवैनं पाययन्मधु सर्पिषि।। 42।।

इसके बाद बालक को आनन्दित करता हुआ पिता उसकी लम्बी आयु के लिए प्रार्थना करता है। घी में मधु मिलाकर चटाता हुआ उसके कल्याणमयी बुद्धि के लिए कामना करता है।

The father welcomes his new –born child. He prays for its long life, intelligence and well-being and feeds it with honey and butter.

जन्मनः पंचमे चाह्नि च दशमे दशमान्तके।
द्वादशे वा प्रकर्तव्यं शिशोर्नाम महाफलम्।। 43।।

पाँचवां नामकरण संस्कार है। बालक के पाँचवें, दसवें, ग्यारहवें अथवा बारहवें दिन नाम रखना महाफलदायक होता है।

The fifth is the Namakaranam. The new-born child is given a name on the fifth, tenth, eleventh or twelfth day with recitation of the Veda mantras.

षष्ठे मासि तु कर्तव्यमन्न प्राशनमेव च।
वेदमंत्रसमुच्चारादद्रवान्नं तदाऽद्यते।। 44।।

शिशु को छठे महीने में वेदमन्त्रों के साथ अन्न खिलाना चाहिए, यह संस्कार 'अन्नप्राशन' संस्कार कहलाता है।

The annaprasnam comes in the sixth month when the child is given solid for the first time. The Veda mantras are recited at the ceremony.

चूडाकरणसंस्कारः विज्ञेयः सप्तमो बुधैः।
वर्षके च तृतीये वा हि पंचमे शिरमुंडनम्।। 45।।

विद्वानों ने चूड़ाकर्म संस्कार को सातवाँ संस्कार माना है। इस संस्कार में

शिशु के जन्म से पहले, तीसरे अथवा पाँचवे वर्ष में सिर का मुण्डन करवाया जाता है।

The seventh sanskara is the Chudakarnam. This ceremony of shaving the head of the child for the first time is performed in the fifth or seventh year of life.

उपनयनसंस्कारः प्रशस्यतम उच्यते।
उपवीतं हि धार्यते शिशुना संयतात्मना।। 46।।

उपनयन संस्कार को सर्वश्रेष्ठ संस्कार कहा गया है। इसमें संयमी शिशु के द्वारा यज्ञोपवीत धारण किया जाता है।

Next is the ceremony of wearing the sacred thread-Upanayanam. Of all the sanskaras, the most important is this.

पितृभ्यां सूतजन्मैति दैहिकं चोच्यते बुधैः।
उपनयनकाद्वेदे शिशोर्जन्म भवेद्ध्रुवम्।। 47।।

विद्वानों के द्वारा माना जाता है कि माता–पिता से बच्चे के शरीर का जन्म होता है जबकि बच्चे का वास्तविक जन्म तो यज्ञोपवीत धारण करने से होता है।

The mother and father give a child the physical birth, but with Upanayan, he ceremoniously becomes the real man, as is enjoined by the sages.

द्विजत्वं जायते तस्य यज्ञोपवीतधारणात्।
बालस्य पंच–यज्ञेष्वाधिकारे जायते तदा।। 48।।

यज्ञोपवीत धारण करने से बच्चे का दूसरा जन्म होता है। उपनयन संस्कार के बाद बच्चा पंच–महायज्ञ करने के अधिकारी बन जाता है।

After he wears the sacred thread (Yajnopavita) he becomes the twice-born, and is ordained to perform the five daily sacrifices.

वेदेनिष्ठा भवेद् येषामुपवीतस्य धारणे।
तेषामेवाधिकारः स्यात्तत्र कार्यं न बाधनम्।। 49।।

यज्ञोपवीत के धारण करने से बालक की वेद पर श्रद्धा उत्पन्न होती है। उपनयन संस्कार से बालक वैदिक कर्म करने का अधिकारी बन जाता है।

Everybody who believes in the Vedas has a right to wear the Yajnopavita and cannot be denied this right.

उपनयनसंस्कारो मंदिराभ्यन्तरे वरम्।
पश्चात् संस्कारादेतस्मात् शिशुः सामाजिको भवेत्।
समाजमतिमुद्देश्य कर्माणि साधयेत् सदा।। 50।।

उपनयन संस्कार मंदिर में करना उत्तम होता है। उपनयन संस्कार के बाद बालक सामाजिक बन जाता है और हमेशा समाज की उन्नति के लिए कार्य करता है।

It is preferable that the Upanayanam ceremony is performed in a temple, for henceforth the boy belongs to the community and is to act in the interests of the community.

मन्दिरस्य पुरोहितः बालकस्य पिता तथा।
वक्ष्यमाण–वचोभिस्तु बालकं शिक्षयेत्ततः।। 51।।

मन्दिर का पुरोहित तथा बालक का पिता कहने योग्य वचनों द्वारा बालक को शिक्षा दें।

At the ceremony, both the priest of the temple and the father are to tell the child as follows;

पारिवारिक गण्डिषु नाबद्धो साम्प्रतं भवान्।
वेदश्चेश्वर वाक् ज्ञेयं तस्यानुगः सदा भवान्।। 52।।

अब आप पारिवारिक कार्य से बंधे हुए नहीं हो। वेद और ईश्वर की वाणी को आप समझें तथा सदा उसका अनुसरण करें।

No more you belong to the small family circle, you are a follower of the Veda, the word of God.

समयं कुरु भो बाल! वेदस्य रक्षणाय हि।
स्वजीवन–व्ययेऽपि त्वं द्विधा हि न भविश्यसि।। 53।।

हे बालक! तुम वेद की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करो जिसके लिए तुम अपने जीवन का बलिदान करने में भी किंकर्तव्यविमूढ़ नहीं होगे।

Hereby you take an oath to protect the fair name of the Veda even at risk to your life.

उच्चनीचपृथक्ज्ञानात् किंचिन्न कर्तुमर्हसि।
इन्दुहारिकरं कार्यं जीवेस्त्वं शाश्वतिः समाः।। 54।।

तुम ऊँच–नीच के पृथक् ज्ञान से आर्यों (हिन्दुओं) के लिए कुछ भी हानिकारक कार्य न करना और इस प्रकार तुम सौ वर्ष तक जीना।

You are not to do any act that will injure any Hindu, high or how. May God bless you with long and prosperous life.

अध्ययनसमाप्तौ हि समावर्तन नामकः।
संस्कारो नवमो ज्ञेयो विवाहो दशमः स्मृतः।। 55।।

अध्ययन समाप्त होने पर नौवाँ संस्कार 'समावर्त्तन संस्कार' किया जाता

है। विवाह को दसवाँ संस्कार माना जाता है।

The ninth Sanskara is called Samovartana which marks the stage when boys or girls complete their studies. The performance ot marriage constitute the tenth sanskara.

ततो गृहस्थजीवनमारभ्यते हि वस्तुतः।
आत्मिकं मिलनं तत्र जायापत्योः सुसाधितम्।
मरणेऽपि विच्छेदः कदाप्यनयोर्भवेत्।। 56।।

पति–पत्नी के आत्ममिलन से गृहस्थ जीवन शुरु होता है। मरने पर भी इन दोनों का वियोग नहीं होता है।

Then begins the life of a householder. The boy and girl are combined into a spiritual union which lasts even beyond the domains of death.

सर्वस्मादेव सम्बन्धात् पूततमोऽयमुच्यते।
युगलेनावगन्तकाऽन्योऽन्यस्य करणीयता।। 57।।

सभी सम्बन्धों से पवित्र सम्बन्ध पति–पत्नी का सम्बन्ध माना गया है क्योंकि दोनों एक–दूसरे के करने योग्य कार्यो को पहले ही समझ लेते हैं।

Of all the relationships, the relation of marriage is the most sacred. The bride and bridegroom must understand their obligations to each other.

भ्राताभगिन्योः प्रीतिर्हि नूनं स्वाभाविकी मता।
जयापत्योः प्रीतिर्या सामाजिकी निगद्यते।। 58।।

भाई और बहन में जो प्रेम होता है वह स्वाभाविक माना जाता है, लेकिन पति–पत्नी का जो प्रेम है वह सामाजिक प्रेम कहलाता है।

Love between a brother and a sister is natural. Love between husband and wife is what the society demands of them.

संच्छिन्नसर्वसम्बन्धाः पितृभ्यां कन्यका भवेत्।
गृहिणी सा पतिगृहे गृहस्थश्च पतिर्यतः।। 59।।

कन्या अपने माता–पिता से अपने सभी सम्बन्धों को छोड़ देती है चूंकि वह पति के घर में रहती है इसलिए पति के घर में वह 'गृहिणी' कहलाती है।

Cutting of all her ties with the maternal roof, the bride goes to the house of her husband as the house's mistress.

पितरौ स्वामिनो मान्यौ तयास्वौ पितरौ यथा।
सदा प्रीतिमतिस्तिष्ठेत स्वामिनो बान्धवेष्वपि।। 60।।

जो कन्या अपने जन्म के माता–पिता के समान अपने पति के माता–पिता के साथ सद्व्यवहार करती है, वह कन्या पति के बन्धु–बान्धवों के हृदय में हमेशा स्नेह का स्थान बना लेती है।

Let her be sweet to all the relations of her husband and look upon her husband's parents as her own parents.

दम्पत्योर्या भवेत् प्रीतिः स्थिरा सा कामचारिणी।
प्रीति कामौ परस्परे स्यातामामरणं च तौ।। 61।।

पति–पत्नी में जो प्रेम और श्रद्धा है, वे जीवन–पर्यन्त बने रहें।

Let there be true love and faithfulness between husband and wife. They should ever strive to win each other's affection.

जीवनव्रतमेतद्धि जायापत्योर्भवेद् ध्रुवम्।
प्रणयः सुगभीरः स्यात् एतद्वेदानुशासनम्।। 62।।

पती–पत्नी के बीच यह प्रेम आजीवन बना रहे–यही वेद की शिक्षा है।

Let it be the life long principle with the husband and wife that they should be sweet to each other. Thus teach the Vedas.

इति वाल्मीकिविरचित श्रीराम संवादे
नित्येनैमित्तिक कर्तव्यो नाम दशमो ऽध्यायः।।

इस प्रकार वाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद में "नित्य–नैमित्तिक कर्म" नामक दशम अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends the tenth chapter entitled "Daily and Occasional Duties" of Shri Rama's Discourse" written by Valmiki.

एकादशोऽध्यायः
ग्यारहवाँ अध्याय
CHAPTER 11

विवाहो नामः
विवाह
CASTE RESTRICTIONS

वशिष्ठ उवाच –

स्वामिन् ! मे कृपया ब्रूहि वर्णधर्मस्य रक्षक !।
विवाहविषये वेदे कस्तावन्नियमः कृतः ।। 1 ।।

हे वर्णधर्म के रक्षक भगवन्! वेद में विवाह के विषय में क्या नियम बताये गए हैं? इसके बारे में कृपा कर हमें बताइये।

Sage Vasishta said :

O Supreme upholder of the tradition ! we will like to know what caste restrictions are imposed by the Vedas in setteing the matches.

आदीनां धर्मवक्तृणां मनुना विहितो विधिः।
ब्राह्मणः सर्ववर्णेषु विप्रभिन्नेषु क्षत्रियः ।। 2 ।।
वैश्यग्राह्या वैश्यकन्या शूद्रकन्या तथैव च।
शूद्रोद्वाह्या तु शूद्रैव नीतिरेषा प्रवर्तिता ।। 3 ।।

मनु ने आरम्भ के धार्मिक प्रवक्ताओं को विवाह की विधि बताई, जिसके तहत ब्राह्मण सभी वर्ण की कन्याओं से विवाह कर सकता है, क्षत्रिय, ब्राह्मण को छोड़कर तीन वर्ण की कन्याओं से, वैश्य दो वर्ण की कन्याओं से और शूद्र केवल एक वर्ण अर्थात् शूद्र कन्याओं से विवाह कर सकता है।

Our primordial law-giver Manu lays down that a Brahmana can marry in all castes, but a Kshatriya cannot marry a Brahmana girl. A Vaishya can marry only among Vaishya and Sudras, while a Sudra can marry only a Sudra girl.

वैदिको विधिरेष वा ज्ञातुमिच्छामि तत्ततः।
विधिरन्यो हि वेदेषु विवृतः किं तदुच्यताम् ।। 4 ।।

यह वैदिक विधि है अथवा अन्य इसे मैं जानना चाहता हूँ। क्या वेद में अन्य विधि भी बताई गई है? यदि हाँ तो कृपा कर उसे बताइये।

Pray, advise us if this principle is consistent with the teachings of the Vedas, or if there is some other law, enunciats by the Vedas.

श्रीराम उवाच –

वर्णा आदर्शकाः ज्ञेयाः न ते सन्ति यथा स्थितौ।
तत्वहीनास्तु ते सन्ति ह्यस्मदिन्दुसमाजके ।। 5 ।।

श्रीराम ने उत्तर दिया–

आदर्श स्थापित करने वाले वर्ण अपनी सही स्थिति में नहीं हैं। हमारे हिन्दू समाज में ये सार–रहित हो गए हैं।

Sri Rama spoke :

Caste are only a theoretical division of the Society. They have nothing to do with practice.

भवद्भिर्ज्ञायते नूनमिक्ष्वाकुजनको मनुः।
यस्य वंशे पुनर्जाता अयोध्यापतयो वयम् ।। 6 ।।

आप सभी इक्ष्वाकुवंश के आदि पुरुष मनु को जान ही रहे हैं, जिनके वंश में हम सब अयोध्या के राजा उत्पन्न हुए हैं।

Presumably all of you know that Manu was father of king Ikshvaku, the founder of our Ayaodhian dynasty.

यस्त्वेष मनुनिर्देषो वर्णानां विषये कृतः।
समाजहितदो नूनं न वास्तवप्रदर्शकः ।। 7 ।।

वर्णों के विषय में महाराज मनु का जो निर्देश है वह निश्चित रूप से समाज के लिए हितकारी है लेकिन वह वास्तविक पथ–प्रदर्शक नहीं है।

Manu laid down the rules for the best administration of the social relationship of man. He was not concerned with what the actual position was, but what an ideal society should be.

सत्यं समाजसौधस्य मुख्या भित्तिर्मनौ स्थिता।
तथापि तस्य ग्रन्थाद्धि विभ्रान्तिर्जायते क्वचित् ।। 8 ।।

मनुस्मृति नामक ग्रंथ में समाज के विशाल भवन का आधारभूत ढाँचा सही है किन्तु उनके ग्रन्थ से कहीं–कहीं भ्रांति उत्पन्न हो जाती है।

Manu's great book is the principal foundation of our social structure but there is a great misunderstanding about several of his teachings.

अल्पबुद्धेर्जनस्यैतषा धारणा तत्र विद्यते।
ऋचः पुरुषसूक्ताद्धि चातुर्वर्ण्य प्रकल्पितम्।
मृषैषा धारणा किन्तु पुरुषोक्तिविरोधिनी।। 9।।

मन्दबुद्धि वाले व्यक्ति की यह धारणा है कि ऋग्वेद के पुरुषसूक्त से चातुर्वर्ण्य व्यवस्था निकली है। यह धारणा असत्य है और पुरुषसूक्त का कथन विरोध पैदा करने वाला है।

His division of society into four castes is said to have derived inspiration from the Pursha Sukta of the Rigveda. What a sheer misunderstanding.

विश्वसृष्टिमधिकृत्य पुंसूक्तं कथितं खलु।
समाजगठने तस्य तात्पर्यं नास्ति किंचन।। 10।।
प्रमाणं वर्णभेदस्य ऋग्वेदे दृश्यते त्विति ।
भ्रान्ता नु धारणा ह्येषा भवेत् शाठय्मयी नु वा।। 11।।

संसार की रचना के विषय में ही पुरुषसूक्त में कहा गया है। समाज के संगठन में इसका कोई तात्पर्य नहीं है। ऋग्वेद में वर्णों के वर्गीकरण के विषय में प्रमाण तो दिखाई देता है, लेकिन लोगों ने इसके विषय में जो धारणा बनाई वह भ्रान्त और कपट युक्त है।

What a distortion of the word of God ! The Pursha-sukta is a hymn dealing with cosmogomy and not with the structure of society. To seek justification for the division of society into castes in the Regveda is an absurdity, if not knavery.

येषु हि चाश्रितो धर्मो वैदिकोऽयं सनातनः।
न ह्युच्चनीचता तेषु सर्वेषु समता ध्रुवम्।। 12।।

वेदों में वर्णित जो सनातन वैदिक धर्म है उसमें ऊंच और नीच का भेदभाव नहीं है बल्कि सबों में समानता है।

To the Vedas, every body who follows the Sanatana Dharma holds the same status and none can be strictured as high and low.

मनुप्रोक्तविभागास्तु सर्वत्र न हि दृश्यते।
एको वर्णो भवेत् सिन्धौ गान्धारेऽपि तथैव च।। 13।।
पांचाले, मालवे, वर्णो द्वावेव प्रतिदृश्यते।
कौशलके विदेहेऽस्ति त्रिवर्णपरंपरा।
न क्वापि ह्येकता तत्र चतुर्वर्णप्रभाविका।। 14।।

मनु द्वारा कहे हुए वर्णविभाग सभी जगह नहीं देखे जाते हैं। सिन्धु देश में

एक वर्ण है। उसी प्रकार गान्धार प्रदेश में भी एक ही वर्ण है। पाँचाल और मालव प्रदेशों में केवल दो ही वर्ण देखे जाते हैं। कौशल और विदेह में तीन वर्णों की परम्परा है। चातुर्वर्ण्य व्यवस्था तो कहीं भी एक साथ प्रभावी दिखाई नहीं देती है।

Where are manu's castes in actuality? In Gandhar and Sindhu there is only one caste; in Panchala and Malwa there are two castes, in Kaushal and Viddeh there are three castes. Nowhere the four castes are to be seen at one place.

वर्णातिरिक्तजातीनां समाजे शतशः स्थितिः।
कर्मविभागजा जातिरेषा स्याद् बहुधा खलु।। 15।।

वर्णों के अतिरिक्त जातियों के सैकड़ों भेद पैदा हो गए हैं और कर्म के वर्गीकरण से ये जातियाँ भी अनेक भागों में बँट गई हैं।

Besides these ideal castes, there are more than a hundred castes prevalent in our society, every occupation constituting a separate hereditary caste.

न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदं जगत्।
विहितंस्ति पुराणादौ विदितं हि भवता ध्रुवम्।। 16।।

वर्णों में कोई विशेष नहीं है क्योंकि यह सम्पूर्ण जगत् ईश्वर का है। पुराण आदि में प्रतिपादित इस बात को आप लोग जान ही रहें हैं।

There is nothing high and low about these castes, as is described in the Purana etc, as you know.

जातौ जातौ विभेदोऽपि लज्जाजनकमेवहि।
स्वीकृतं खलु सूरिभिः सर्वजनेषुपूजितैः।। 17।।

जातियों के बीच भेद–भाव लज्जा–जनक है, यह बात सभी लोगों में सम्मानित विद्वान् पुरुषों के द्वारा स्वीकृत है।

It is veritably shameful to have these caste distinctions, so is said by the worshipful sages.

एषाऽपि विच्युतिश्चास्ति वेदेभ्यो जातिवर्णानाम्।
अन्नप्राशन उद्वाहे यच्चास्ति शासनं पृथक्।। 18।।

यह एक भ्रान्तियुक्त बात है कि जाति और वर्णों के मध्य खान–पान और विवाह के विषय में अलग–अलग व्यवस्था वेदों से ही उत्पन्न हुई है।

How disgraceful it is that every caste has developed, its own rules of diet and marriage. The Veda rejects and condemns them.

धिग्धिगेतत् किमेतत् यत् जातयो बहुषः पुनः।
नीचाश्चास्पृश्या इत्युक्ताः परित्यक्ताः समाजतः।। 19।।

जातियों में अनेक प्रकार के भेद को वेदों ने धिक्कारा है और जातिगत भेद करने वालों को समाज से पृथक् अछूत माना है।

Is it not shameful that some castes are condemned as low and untouchable ?

नरेषु वेदग्राह्येषु सर्वेष्वेव पवित्रता।
कथमस्पृश्यता तेषु भविष्यति वद ऋषे !।। 20।।

वेदों के द्वारा ग्रहण करने योग्य पवित्रता सभी मनुष्यों में होती है, फिर हे ऋषि! बताइये– उन लोगों में अस्पृश्यता कैसे हो सकती है।

Every bit of man, coming in contact with the Veda, is purified for all times. How can a follower of the Veda be made an untouchable ?

यथा सुवर्णतां याति कांस्यं रसविधानतः।
तथा दीक्षाविधानेन द्विजत्वं जायते नृणाम्।। 21।।

जैसे कांसे को रस के सानिध्य से सोना बनाया जाता है ठीक उसी प्रकार मनुष्य को दीक्षाविधि से द्विज बनाया जाता है।

As a base metal can be converted into gold, initiation into the Veda makes a man twice-born.

एष वैदिकशास्त्राणां सिद्धान्तः सूरिसंमतः।
न तु पार्थक्यमेतस्मात् स्वीकर्तव्यं कदाचन।। 22।।

यह वैदिक शास्त्रों का सिद्धांत ऋषियों द्वारा स्वीकृत है, इससे अलग सिद्धांत कभी भी स्वीकार नहीं करना चाहिए।

There can be no separate rules for each caste, as for everybody same rules and laws will apply.!

तुल्या एवेन्दवः सर्वे चैकशास्त्रेन शासिताः।
अन्नपानादिसम्बन्धे त्वयुक्ता भिन्नजातिता।। 23।।

सभी आर्य (हिन्दु) एक शास्त्र के द्वारा संचालित हैं, खान–पान आदि से जातियों का वर्गीकरण अनुचित है।

Every Hindu holds the same status, as uniform laws apply to them. There can be no caste distinctions based on diet etc.

तथा विवाहसम्पर्के नास्ति कार्या विचारणा।
उद्वहेदिन्दुकन्यां तु हिन्दुपुत्रो विधानतः।। 24।।

ठीक उसी प्रकार विवाह के विषय में भी वर्गीकरण उचित नहीं है। प्रत्येक आर्य (हिन्दु) के पुत्र को आर्य (हिन्दु) कन्या के साथ विधिपूर्वक विवाह करना चाहिए।

There are no caste restrictions in the settlement of matches. Every Hindu is eligible to marry any girl.

विवाहखाद्यसम्बन्धे भेदः कोऽपि न कल्प्यताम्।। 25।।

विवाह और खान–पान में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए।

No recognition is to be given to barriers of diet and marriage.

विवाहस्त्वेकगोत्रेषु वर्जनीयः सदा बुधैः।
व्यापक एव सम्बन्धः समाजे सुकृतो भवेत्।। 26।।

विद्वान् पुरुषों ने एक ही गोत्र में विवाह का निषेध किया है। समाज में व्यापक विवाह सम्बन्ध अर्थात् दूर के गोत्र में विवाह करना समाज के कल्याण के लिए होता है।

There is however one restriction. One shall not marry in the same gotra, because it will retard the growth of relationship in the wider sphere of our society.

विवाहो भिन्नगोत्रेषु समाजस्य घनिष्ठताम्।
दृढतरां पुनः कुर्यान्नास्त्यत्र कोऽपि संशयः।। 27।।

विभिन्न गोत्रों में विवाह करने से समाज में एकता बढ़ेगी, अतः इस नियम का पालन दृढ़ता से करें, इस विषय में तनिक भी सन्देह नहीं है।

Marriage in a different gotra will, doubtless, bring the entire society nearer and nearer and also help in the intellectual and physical developed of our race.

विकासो देहमनसोऽस्तु समाजस्य ततो भवेत्।। 28।।
वर्णानां मनुना भागो न वंशपारम्पर्यतः।
गुणकर्मविभागस्तु वर्णानां खलु कल्पना।। 29।।

इस विवाह विधि से मनुष्य के शरीर और मन का विकास होता है, जिस समाज में मनुष्य बलशाली होंगे वह समाज भी शक्तिशाली बनेगा। मनुमहाराज द्वारा वर्णों का विभाग वंशपरम्परा से नहीं किया गया है, यह विभाग केवल गुण और कर्मो के आधार पर किया गया है।

The caste, as enunciated by Manu, are not the hereditary divisions of our society. To base them on personal tendencies is also fallacious.

न त्वं विप्रो न क्षत्रो वा न वैश्यः शूद्र एव वा।
हिन्दुरेव समख्यातो वेदमार्गे प्रतिष्ठितः।। 30।।

तुम न तो ब्राह्मण हो, न क्षत्रिय, न वैश्य और न ही शूद्र। तुम केवल वेद

मार्ग पर चलने वाले आर्य (हिन्दु) हो।

Neither be a Brahmana nor a Kshatriya, nor a Vaishya, nor a Sudra; you are but to be a Arya (Hindu), the follower of the Veda.

हिन्दूनां कोऽपि भेदो न स्वीकर्तव्यः खलु त्वया।
यावज्जीवेः सदा भूया हिन्दुसेवा सु–तत्परः।।31।।

तुम्हें आर्यों (हिन्दुओं) के बीच किसी प्रकार का भेद स्वीकार नहीं करना चाहिए। जब तक जीयो तब तक आर्यों (हिन्दुओं) की सेवा में तत्पर रहो।

You shall make no distinction between a Hindu and a Hindu. Your life shall be a dedication to the cause of Hindus.

या कन्यका तु वेदेषु न च श्रद्धापरायणा।
विवाहस्तु तया सार्धं संवर्जनीयो हिन्दुना।।32।।

जो कन्या वेदों में श्रद्धा नहीं रखती उस कन्या के साथ किसी भी आर्य (हिन्दु) को विवाह नहीं करना चाहिए।

No Hindu boy shall be permitted to marry a girl who does not believe in the religion of the Veda.

वेदानां दीक्षया शुद्धिर्यस्य बालस्य नास्तिव।
विवाह हिन्दुकन्यायास्तेन सह प्रतिवर्जयेत्।।33।।

जो बालक वैदिक विधि से पवित्र नहीं किया गया है, उस बालक के साथ आर्य (हिन्दु) कन्या का विवाह नहीं करना चाहिए।

Nor shall a Hindu girl marry a boy who has not been purified by faith in the Vedas.

वेदधर्मे विशुद्धिहि यदा तयोर्भविष्यति।
तदा तयोर्विवाहः स्यादेतत् वेदानुशासनम्।।34।।

जब वैदिक विधि विधान से बालक–बालिका की शुद्धि हो जाएगी, तभी उन दोनों का विवाह होना चाहिए, यह वेदसम्मत विधान है।

Such marriage can only take place after their conversion into the religion of the Vedas. This is the law laid down by the Vedas.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे
विवाहो नाम एकादशोऽध्यायः।

इस प्रकार वाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद में 'विवाह' नामक ग्यारहवां अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends the eleventh chapter entitled 'Marriages' of Shri Rama's written by Valmiki.

*****

।। द्वादशोऽध्यायः ।।

बारहवां अध्याय

CHAPTER 12

मानवीयकर्मनामः

मानवीय कर्म

HUMAN ACTIONS

सुमन्त उवाच –

वयं भवेम यद्यत्र समाजेच्छानुसारिणः।
बुद्धेस्तत्रोपयोगित्वं किं तदा नु भवेत् प्रभो।।1।।
विचारस्यैव चास्तित्वे संशयो जायते भृशम्।
विचारस्तु वृथैव स्यात् समाधिरत्र कथयताम्।।2।।

सुमन्त ने कहा–

हे भगवन्! यदि हम समाज के नियमानुसार चलेंगे तो हमारी बुद्धि की क्या उपयोगिता रहेगी। विचारों के अस्तित्व में ही अनेक प्रकार के सन्देह उत्पन्न होते हैं। यदि विचार व्यर्थ है तो इसका समाधान कीजिए।

The Sumanta said:

O Lord ! if we act in obedience to the communal will, what function does reason serve? Does it mean that there is no reason? if there is one, is it superfluous? please clarify.

श्रीराम उवाच –

विचारः कार्यसंपर्के भवतां भ्रान्तधारणा।
कश्चिदेव विचारस्य कार्ये प्रयोग इष्यते ।।3।।

श्रीराम ने उत्तर दिया–

कार्य के सम्पर्क में आने पर विचार उत्पन्न होता है, आपकी यह धारणा भ्रान्तिपूर्ण है। कभी–कभार ही विचारों का प्रयोग कार्य में किया जाता है।

The Lord spoke:

The common conception of the function of reason is wrong. Let it be known that we rarely use reason.

वर्णितं हि नभो नीलं घासो हारीतवर्णकः।
तदाविचारबुद्धेः किं प्रयोगः क्रियते क्वचित्।।4।।

आकाश को नीलवर्ण और घास को हरित वर्ण कहा जाता है। तब क्या विचारात्मक बुद्धि का प्रयोग किया जाता है।

When we say that sky is blue or grass is green, do we use reason in making these statements?

समाजः शिक्ष्यते भावान् समास्थान् हि सर्वतः।
तत्र तु बुद्धिसंयोगं स्वल्पमेव प्रतीयते।।5।।

समाज प्रचलित भावों की शिक्षा सब ओर से देता है। बुद्धि का संयोग तो थोड़ा ही जान पड़ता है।

These statements are based upon what is taught to up by the society. They are not the outcome of reasoning.

परिवारविशेषे हि जायन्ते नरसूनवः।
गृहीते भाव–चारित्र्ये पूर्वजेभ्यो हि मुख्यतः।
पितृपितामहेभ्यश्च ह्यार्यकेभ्यस्तथैव च।।6।।

परिवार विशेष में मनुष्य का जन्म होता है। भाव और चारित्रिक शिक्षा तो पूर्वजों से ग्रहण की जाती है और उसी प्रकार पिता और पितामह आदि श्रेष्ठ पुरुषों से भी इनकी शिक्षा ली जाती है।

In the first place a man is born in a particular family. He inherits the tendencies and character of his parents, grand–parents etc.

यस्मिन् समाजके जन्मलाभस्ते तत्, एव हि।
संस्कतिं नियमं चिन्तां धर्मबोधं लभेत् नरः।।7।।

जिस समाज में मनुष्य जन्म लेता है, उसी समाज की संस्कृति, नियम, चिन्तन, धर्म आदि का ज्ञान वह प्राप्त करता है।

Secondly, there is the society in which everybody is born. The society gives its own morals, customs, laws and ideas to all its members.

आचारो नियमो वापि युत्तया लभ्यो न तु क्वचित्।
पूर्वलब्धस्तु सर्वः सः जन्मतः सुलभः स्वयम्।।8।।

आचरण अथवा नियम कहीं भी युक्ति से प्राप्त नहीं होता बल्कि वह सब मनुष्य जन्म से स्वयं ही सुलभता से प्राप्त कर लेता है।

It is not that man does rationally choose customs and laws but that he finds them ready made for himself.

ऐतिह्यस्याधिकारी तु धारकश्चैव संस्कृतेः।
युगधर्मानुसारी तु ह्याचारैः गठितो नरः।।9।।

संस्कृति को धारण करने वाला व्यक्ति ही उपदेश का अधिकारी होता है। युगधर्म के अनुसार उन का अनुसरण करने वाला व्यक्ति आचरण से ही संगठित होता है।

A man is an inheritor of tradition, a member of a culture, a child of his times and a product of customs.

यमजचरितेनैव प्रभावो जन्मनः स्फुटः।
दुर्वृत्तो वाऽथवा सन्तो नूनं चोभौ भविष्यतः।।10।।

जन्म का प्रभाव युगचरित्र के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है। जन्म से व्यक्ति दुष्ट अथवा सन्त दोनों ही हो सकता है।

The influence of birth can be judged from the character of a pair of twins. Either both the twins will be criminals, or both of them will be virtuous.

विश्वस्य सर्वकर्माणि समुद्रभूतानि कारणात्।
आकस्मिकं न किंचिद्धि यदृच्छा घटितं न वा।।11।।

संसार के सभी कार्य समुद्र में होने वाले परिवर्तनों के कारण होते हैं। निश्चित रूप से कोई भी घटना अकस्मात् अथवा स्वेच्छा से घटित नहीं होती है।

Every event in the world is connected with the cause. Nothing is accidental or a mere chance- happening.

यत्किंचित् कर्म चास्माकं चारित्र्यं तस्य कारणम्।
अस्माकं यत्तु चारित्र्यं समाजेच्छा समुद्भवम्।।12।।

हम जो भी कार्य करते हैं उनमें हमारे चरित्र का प्रभाव रहता है और हमारा चरित्र समाज की इच्छा से बनता है।

Whatever we do, must have a cause in our character, and our character is formed by the communal Will.

स्वेच्छया कर्म कर्त्तुं हि नालं किंचित् वयं क्वचित्।
तत्र स्वाधीनता काचित् नास्त्येक धरणीतले।।13।।

हम कहीं भी स्वेच्छा से कुछ भी कार्य नहीं करते हैं, मानो इस धरती पर स्वाधीनता जैसी कोई वस्तु नहीं है।

Thus we are not free to do anything we like. There is no such thing as freedom of action.

यत्कृतं कर्म चास्माभिः समाजस्य विभूतये।
स्वातंत्र्यस्य नु सार्थक्यं ततो भवति नान्यथा।। 14।।

हमारे द्वारा समाज की समृद्धि के लिए जो भी कार्य किया जाता है। उसी में स्वाधीनता की सार्थकता है अन्यत्र नहीं।

Our true freedom consists in doing such acts that promote the welfare of the community.

नवकर्मण आरम्भे ह्याकस्मिकस्य वा पुनः।
न युक्ते युक्ता काचित् समाजमंगलं बिना।। 15।।

नये कार्य आरम्भ करने में हमें शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। समाज के कल्याण के बिना हमारा कोई भी कार्य युक्ति–संगत नहीं है।

Reason does not consist in doing anything which is new or accidental, but in realising the good of the community.

बुद्धिर्नो भगवद्दत्ता विचारार्थं ध्रुवं पुनः।
उन्नतेबधिकं किं स्यादुन्नतेः साधकं नु किम्।। 16।।

भगवान ने निश्चित रूप से विचार करने के लिए बुद्धि प्रदान की है। क्या यह बुद्धि प्रगति में बाधक है, या साधक है।

God has gifted us the faculty of reason to ascertain which of our acts hinder the progress of the community and which lead to its promotion.

विश्लेषश्च विचारश्च यथा खल्वगम्यते।
कर्मणि चरिते चैव सदसद्विद्यते तु यत्।। 17।।

जिस प्रकार विचारों के विश्लेषण से जाना जाता है कि यह कार्य अच्छा है या बुरा, उसी प्रकार कर्म को करने पर उसके अन्दर विद्यमान अच्छाई या बुराई का पता लगता है।

Reason is an analytical faculty to find out the good or bad in our actions or in our character.

कर्मणि प्रेरणा काचित् विचारेण न संभवेत्।
सह जाताभिरिच्छाभिः कर्मणि प्रेरणा भवेत्।। 18।।

कार्य करने में विचार से कोई प्ररेणा नहीं मिलती है बल्कि उत्पन्न इच्छाओं के साथ कार्य करने से प्रेरणा मिलती है।

Reason cannot make us act. Our actions are bound by the system of desires that we inherit.

एकादशो हि वृत्तयः पूर्वमुक्ता मया खलु।
मुख्यतः कर्मधारा हि ताभि संचालिता भवेत्।। 19।।

मेरे द्वारा पहले ही ग्यारह प्रकार की वृत्तियां बताई गई हैं। मुख्य रूप से इन वृत्तियों के द्वारा ही कार्य करने की प्रवाह संचालित होती है।

Fundamentally the eleven tendencies that we have described before are main ground work to determine our modes of action.

क्षुधा प्रवर्तयेदस्मान् खाद्यसंग्रह–कर्मणि।
विपत् प्रवर्तयेदस्मान् पलायने ततस्ततः।। 20।।

भूख हमें खाद्यसंग्रह रूपी कर्म में प्रवृत्त करती है और आपदाएँ हमें इधर–उधर भागने के लिए प्रेरित करती हैं।

Hunger makes us to hoarding food; calamities makes us fly away hither and thither.

संकुचिता भवामो वै जुगुप्सा वस्तुभिः सह।
सृजति विश्वमस्मभ्यमवस्थाः विविधाः खलु।। 21।।
प्रेरणा कर्मणो याभिरस्माकं जायते भृशम्।
आभ्यन्तरी प्रवृत्तिस्तु कर्मधारां विनिर्दिशेत्।। 22।।

घृणास्पद वस्तुओं से हमें संकोच होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड हमारे लिए विभिन्न प्रकार की अवस्थाओं का सृजन करता है। जिन के द्वारा हमारे अन्दर कार्य करने की अत्यधिक प्रेरणा होती है वह आन्तरिक प्रवृत्ति कार्य करने के प्रवाह को निर्देशित करता है।

The world around us is continuously presenting us situations that stimulate us to action. The way we behave is determined by our inborn tendencies.

अरण्ये हिंसकं दृष्ट्वा पलायन्ते भिया नराः।
मज्जतो रक्षणार्थं हि नद्यां मग्नो नरो भवेत्।। 23।।

जंगल में हिंसक प्राणी को देखकर भयभीत प्राणी भागने लगते हैं। नदी में डूबते हुए की रक्षा के लिए मनुष्य स्वयं ही कूद पड़ता है।

We see a lion at large, are terrified and take to heels. We see a baby drowning, jump into the river and save it.

यद्यप्युदिश्य सिद्धौ हि बाधाऽस्माकं भविष्यति।
उपायेन दृढेनैव हिंसायां निश्चितां ध्रुवम्।। 24।।

यदि हमारे उद्देश्य की सफलता में बाधा होगी तो दृढ़ उपाय से उसे पार किया जाएगा। आवश्यक पड़ने पर हिंसा के द्वारा भी उसे पूरा किया जाएगा।

If we are thwarted in the achievement of our goal. we resent it and, if necessary, remove the hindrance with violence.

स्वप्नस्य कीदृक् स्वरूपमुत्पत्तिश्च कुतोऽस्य वा।
विश्लेषणाद्धि ज्ञातव्या मनसोऽभ्यन्तराः क्रियाः।। 25।।

स्वप्न का स्वरूप कैसा होता है? अथवा इसकी उत्पत्ति कहाँ से होती है? मन की आन्तरिक क्रियायें तो विश्लेषण से जानी जाती हैं।

If we analyses what dreams are and how they arise, we can understand the inner workings of our mind.

घटनानां विवर्ताद्धि नानावस्थाः प्रजायन्ते।
ता आश्रित्य प्रयत्नो नो भवेत्तु कर्मसिद्धये।। 26।।

घटनाओं के घटने से ही अनेक प्रकार की अवस्थाओं का पता चलता है। उनका आश्रय कर कार्य की सफलता के लिए हमारा प्रयास होना चाहिए।

The world continuously presents us situations which lead us every moment of our life to trying to achieve various goals.

प्रयत्नान्न सदा सिद्धिः व्यर्थताऽपि क्वचिद् भवेत्।
विफलाः कामनाः यास्तु जायन्ते मनुजस्य वै।। 27।।

मनुष्य की जो कामनायें विफल हो जाती हैं उनसे ज्ञात होता है कि प्रयास करने पर भी हमेशा सफलता नहीं मिलती, कभी–कभी प्रयास विफल भी हो जाता है।

It is not however always necessary that we succeed in the attainment of our goal. We are often thwarted in our efforts.

अज्ञाताः वापि ज्ञाता ह्यन्तरस्तमके स्थिताः।
दैनिकविषये सन्ति वासनाः खल्वसंख्यकाः।। 28।।

मनुष्य के आंतरिक मस्तिष्क में अनगिनत ज्ञात अथवा अज्ञात कामनायें उपस्थित होती हैं।

The defeated desires persist in the innermost core of our mind, whether we knew it or not.

यद्यपि विफलास्ता हि मनसि पुंजिताः सदाः।
परितृप्तौ तु तासां वै चांचल्यं जायते भृशम्।। 29।।
विफलाभिः पुनस्ताभिः भवान्ति या मनोरुजः।
तन्निर्गमाय प्रकृत्या पन्थानः कृपया कृताः।। 30।।

यद्यपि अपूर्ण कामनाएँ हमेशा मन में विद्यमान रहती हैं। कामनाएँ तृप्त होकर और अधिक चंचलता पैदा करती हैं। विफल हुए उन कामनाओं के द्वारा

जो मानसिक पीड़ा उत्पन्न होती है उनके निर्गमन के लिए प्रकृति ने कृपा कर रास्ते दिए हैं।

निर्गमनस्य पन्थानः स्वप्नास्तासां प्रकल्पिताः।
कामनापूरणं स्वप्ने भविष्यति न संशयः।। 31।।

उन विफलीभूत कामनाओं के निर्गमन के लिए स्वप्नरूपी रास्ते बनाये गये हैं क्योंकि स्वप्न में कामनायें निःसन्देह पूरी होंगी।

In our daily life, hundreds of such defeated desires gather together in our mind. The force of these pent-up desires is bound to disease our mind, but Nature has mercifully provided an outlet to destroy their force .

व्यर्थानां वासनानां हि दुष्प्रभावश्च नाशितः।
अन्तरवासनाः याः ताः निश्चिन्वन्ति न केवलम्।। 32।।

स्वप्न के द्वारा व्यर्थ की कामनाओं का दुष्टप्रभाव नष्ट हो जाता है लेकिन जो आन्तरिक कामनायें हैं केवल वे पूरी नहीं हो पाती हैं।

This outlet is the dream. In the dreams we fulfill our desires and gain our objective and thus the evil effects of the defeated desires are done away with.

स्वप्नमेव परं तास्तु कर्मनिर्णायिकाः सदा।
यथा वेदविदः किंचिद् यत्र दीयते ददि।। 33।।

कार्यों के निर्णायकों में स्वप्न ही प्रमुख नहीं है जिस प्रकार वेदज्ञ के द्वारा जो कुछ दिया जाता है वही सम्पूर्ण होता है।

It is not only the dream that are determined by our inner mind. But all our actions are determined by the combined forces of our mental tendencies.

"वेद" इति लिखितं तत्र ह्यक्षरं नेत्रकर्षकम्।
एकेनैव प्रकारेण यस्या चैकयैव हि।। 34।।

'वेद' यह अक्षर जहाँ लिखा होता है वहाँ पर निश्चित तौर से आँखें बार–बार देखती हैं एक ही प्रकार से एक ही स्याही से लिखे शब्दों में से 'वेद' अक्षर नेत्राकर्षक होता है।

If a person, deeply interested in the study of the Vedas is presented with a sheet of paper, the word, "Vedas" written there will strike him all of a sudden.

लिखितान्यक्षराण्यत्र बहूनि पत्रके तथा।
अनेकशब्दमध्येऽपि वेदशब्दस्य कर्षणम्।। 35।।

संभवति कथं ब्रूहि मनः संस्कारकारणम्।
तथैव निर्णयः स्याद्धि किं पाठ्यं ग्राह्यमेव वा।। 36।।
मनसो गठनं यत्तु निर्मितं येन यत्खलु।
विशिष्टायामवस्थायां कर्म वा किंविधं भवेत्।। 37।।

कागज पर अनेक अक्षर लिखे होने पर भी अनेक शब्दों के मध्य में वेद शब्द का आकर्षण अधिक होता है। पढ़ने योग्य और ग्रहण करने योग्य विषयों का निर्णय मन के संस्कारों के कारण कैसे सम्भव हो जाता है? मन विभिन्न विषयों का निर्णय किस प्रकार करता है? विशेष अवस्था में कर्म किस प्रकार का होना चाहिए?

The word "Veda" was written in the same ink in the uniform way, neither thicker nor thinner than any other word on the sheet. Never the less you pick up the word "Veda" out of numberless such words. The reason is that our mental prejudices determine, what we must pick up and read.

संस्कारान्मनसस्तत्तु सर्वैः संप्रधार्यताम्।
विभिन्नः खलु सिद्धान्तो दृश्यो ह्युपनिषत्सु वै।। 38।।

उपनिषदों में विभिन्न सिद्धान्त देखने योग्य हैं, सब लोगों को मन के इस संस्कार को भलीभांति समझना चाहिए।

Thus it is our mental make-up that decides how we are to react to a particular situation.

वशिष्ठ उवाच–

निष्कामः कर्मवादस्तु विस्तरेणात्र वर्णितः।
दुष्कर्मणां समारम्भ उद्देश्यः वर्तते नृणाम्।। 39।।

वशिष्ठ ने कहा–

यहाँ निष्काम कर्म का वर्णन विस्तार से किया गया है, तथापि लोगों में बुरे कर्म करने की प्रवृत्ति देखी जाती है।

Sage Vasishta said:-

The Upanishads lay down a different rule. They enunciate the principle of motiveless (nishakamya) action.

न चावश्यकता तस्य साधुकर्मविचारणे।
तथा तस्करकार्येषूद्देश्यं वर्तते नृणाम्।। 40।।

लोगों की प्रवृत्ति कर्म में देखी जाती है अतः शुभ कर्म करने में विचार करने की उसे आवश्यकता ही नहीं है।

Whenever we do an immoral act, we do it with some motive, but for virtuous action no motive is required.

पुण्यकर्मणि तादृश्या प्रेप्सया न प्रयोजनम्।
सत्यवादे च सत्कार्ये प्रवृत्तिः सहजा नृणाम्।। 41।।

सत्यविवेचन करने और सत्कार्य में मनुष्यों की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है अतः पुण्यकर्म में उस प्रकार की उत्कृष्ट उत्कण्ठा वांछित नहीं होती।

If one commits vice he must have some motive for doing so Different is the case with a virtuous deed where no motive is required.

पुण्यकर्मण्यतो नैव कामनायाः प्रयोजनम्।
सुखदुःखहर्षामर्षगौरवेर्ष्याविवर्जिते।। 42।।

पुण्यकर्म से कामना का कोई प्रयोजन नहीं होता क्योंकि इसमें सुख–दुःख, हर्ष, क्रोध, गौरव और ईर्ष्या वर्जित होने से कामना का कोई प्रयोजन नहीं होता।

Virtuous action is, therefore, one which has no motive and is free from attachment to pleasure or pain, joy or sorrow, pride or jealousy etc.

उपनिषत्सु हि खल्वेवं कीर्त्यन्ते कर्ममार्गकाः।
भवतोऽत्र विचारे हि कथं सिद्धान्तभिन्नता।। 43।।

उपनिषदों में कर्ममार्ग बताये गये हैं। उसमें आपके विचार से सिद्धांतो में भिन्नता क्यों है?

So say Upanishadas, the authority on the doctrine of action. Pray tell us why do you set up a different principle ?

उपनिषदां प्रामाण्यं हि विवृणोषि कथं मुने!।
यत्किंचित् दृश्यते तत्र सर्व ग्राह्यं कथं भवेत्।। 44।।

श्रीराम ने कहा:–

हे मुनि! तुम उपनिषदों के प्रमाण को कैसे वर्णित कर रहे हो? जो कुछ वहाँ देखा जाता है, वह सब के द्वारा ग्रहण कैसे किया जा सकता है?

Shree Ram said:

O sage ! why are you quoting the authority of the Upanishadas? There is no reason that whatever is written there must be accepted by us.

वेदानां यत्तु प्रामाण्यं भाषितानां स्वयं विधेः।
विचारो नात्र तर्को वा कर्तव्यो वेदवादिनाम्।। 45।।

वेदों में परमेश्वर की प्रामाणिकता सिद्ध की गई है कि वेद के जानने वालों को ईश्वर विषयक प्रामाणिकता में तर्क नहीं करना चाहिए।

The Veda is the only authority to be treated as the word of God. Nobody is to challenge or criticise the teachings of the Vedas.

रुचिः निष्कामकर्मणि न तत्र दृश्यते क्वचित्।
सुखदुःखादिद्वन्द्वेषु नोदासीनता तथा।। 46।।

निष्काम कर्म में कहीं भी रुचि दिखाई नहीं देती है और न ही सुख–दुःखादि द्वन्द्वों में उदासीनता ही दिखाई देती है।

There is not a word anywhere in the Vedas of the motiveless action nor that of the feeling of detachment to joy and sorrow, pleasure and pain, etc.

पुण्यात्मकेऽपि कार्येऽस्ति मूलमुद्देश्यभाविता।
उद्देश्यमन्तरा कर्म क्वापि नैव प्रवर्तते।। 47।।

पुण्यात्मक कार्य में भी अपना कोई–ना–कोई उद्देश्य ही होता है। उद्देश्य के बिना कोई भी कर्म में कहीं भी प्रवृत्ति नहीं होती।

There is motive even to a virtuous action, for no action is possible without motive.

मज्जतो बालकस्यार्थे माता मग्ना भवेज्जले।
स्नेह–प्रवणता तस्याः कारणं तत्र कर्मणि।। 48।।

डुबते हुए बालक को बचाने के लिए माता जल में उतरती है, वहाँ भी उसका स्नेह (ममता) कर्म करवाने का कारण बनता है।

When a mother risks her life to save the drowning baby, her maternal affection is the motive to her action.

मातुः कर्मणि नूनं हि वासना वर्तते ध्रुवम्।
तत्क्रिया वासनोत्थाऽतो भवेत् पापमयी ततः।। 49।।
धारणैतादृशी यस्य मूढधीःस न संशयः।। 50।।

माता के कर्म में निश्चित तौर पर यह कामना है। जो कार्य कामना पूर्ति के लिए किया जाता है वह पाप कर्म कहलाता है। जिस मनुष्य की ऐसी धारणा होती है वह मन्दबुद्धि होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। हमारे शौर्ययुक्त तथा शक्तिशाली सभी प्रकार के कर्म कामना से ही उत्पन्न होते हैं।

There is definitely a motive in the action of the mother but to say that this is an evil act because it has motive is absurd.

शौर्य वीर्यात्मकं कर्म नो वासनोत्थितम्।। 51।।
वासनानदितं यस्मात् तस्मात् पापः भवेत्।
इति यस्य मतिः सोऽयमुन्मत्तो नात्र संशयः।। 52।।

यदि सभी कर्म कामना से प्रेरित हों तो पाप ही मानो, यह बुद्धि जिस पुरुष की है वह मूर्ख है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। यहाँ सभी मनुष्य कामना रखने वाले हैं, अर्थात् कामना से ही कर्म किया जाता है कामना को छोड़ने में कौन समर्थ है?

All our actions of heroism arise from motives and are the product of our noblest desires. To call them bad is insanity.

सवासनाः नराः सर्वे नात्र कश्चित् व्यतिक्रमः।
कर्ममूलो हि वै कामः, कः कामं हातुमर्हति।। 53।।

बुद्धिमान को यह बात स्पष्ट है कि सुख–दुःख, हर्ष–शोक, मान–अपमान रहित व्यक्ति इस संसार में कोई नहीं हैं।

A man is a product of his desires which make a network of his character. His desires are the springs of his action.

सुखदुःखहर्षामर्षमानापमानवर्जितः।
नाऽस्ति कश्चिज्जनो लोके, स्पष्टमेतत् सचेतसाम्।। 54।।

इन भावों से रहित मनुष्य को मनुष्य नहीं मानना चाहिए। वह अनार्य, पशु, असज्जन माना जाता है।

It is absurd to think that a man can be free from the feelings of joy and sorrow, pleasure and pain, elation and humiliation.

मानवो नावगन्तव्यः एतद्भावविवर्जितः।
अनार्यः स पशुर्नूनं साधुतावर्जितो नरः।। 55।।

जो दूसरों के दुःखों में सहानुभूति नहीं रखता, जनसमूह से अलग वह व्यक्ति पशु से भी नीचा माना जाता है।

One who has no such feelings is not a man. You call him a brute, an uncivilised barbarian.

यश्चापरस्य दुःखेषु सहानुभूतिवर्जितः।
किं पशोरधमो नो सः यो विविक्तो जनाश्रये।। 56।।

संसार में जिस मनुष्य में उदासीनता और जड़ता दिखाई दे, वह मनुष्य स्वार्थी है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

It will be nothing short of brutishness that you have no sympathy with the sorrows of yours fellow-beings.

औदासीन्यं च लोके यत् तज्जड़त्वं भवेद् ध्रुवम्।
स्वार्थमयो जनः स्यात् स, तत्रः कः संशयं व्रजेत्।। 57।।

जो लोग अनासक्त (वैराग्य) हैं वे क्रूर हैं। निस्सन्देह इस अनासक्ति में स्वार्थ निहित है।

He who is detached (vairagya) is a brute, for, doubtless detachment is a rank selfishness.

विविक्तसेवोत्त्यजते स्वार्थं लोकस्य योऽपि, सः।
विच्छुरतिस्वार्थविषं सर्वस्यां जनसंसदि।। 58।।

जो व्यक्ति स्वार्थभाव के कारण संसार में सेवाभाव नहीं रखता है, वह सम्पूर्ण मानवसमाज में बिच्छु जैसा स्वार्थरूपी जहर को फैलाता है।

One who lives in detachment is a selfish man and spreads the poison of selfishness in the entire atmosphere around him.

स्वगोष्ठीप्रेमिको भूयाः राष्ट्रकल्याणचिन्तकः।
तेषामर्थे जीवितं स्यात् गोष्ठयामन्तर्भवन्ति ये।। 59।।

राष्ट्र के कल्याण को सोचने वाले अपने समुदाय के प्रिय बनो और समुदाय के अन्तर्गत जो लोग हैं उनके लिए जियो।

Be attached with your community. All the members of your community are your own stuff. Love them and live for them.

उत्तमः स तु विज्ञेयो यो गोष्ठीदुःखदुःखितः।
एकीभूतः स्वगोष्ठ्या यो सुखे दुःखे समांशभाक्।। 60।।

जो अपने समुदाय के दुःख से दुःखी होता है, और अपने समुदाय के साथ सुख और दुःख में भागीदार बनता है, उस व्यक्ति को उत्तम मानना चाहिए।

The highest character cosists in one's identification with the community. In the joy and sorrow of your community, you are to feel your own joy and sorrow.

कार्ये निष्कामता ह्यत्र सृजति मुनिपुंगव।
हृदि भावविपर्यासं व्यक्तित्वे रुग्णता ततः।। 61।।

हे मुनिश्रेष्ठ! कर्म में निष्कामता मनुष्य के हृदय में विरोधाभास और व्यक्तित्व में रुग्णता पैदा करता है।

O sage ! the teachings concerning motiveless action produce a conflict in the mind and result in a diseased personality.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे मानवीयकर्मनामो द्वादशोध्यायः।

इस प्रकार वाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद में 'मानवीय कर्म' नामक बारहवां अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends the twelth chapter entitled "Human Actions" of Sri Rama samvad written by Valmiki.

*****

त्रयोदशोऽध्यायः
तेरहवां अध्याय
CHAPTER 13

राष्ट्रम्
राष्ट्र
THE STATE

श्रीसुमन्त उवाच –

वयं तु ज्ञातुकामाः स्मस्त्वत्तो जम्बूद्वीपाधिप!।
समाजोद्देश्यलक्ष्याणि तथा तस्योपयोगिता।। 1।।

सुमन्त ने कहा–

हे जम्बूद्वीपाधिपति! हम सब समाज के उद्देश्य के लक्ष्य और उसकी उपयोगिता जानना चाहते हैं।

The sumanta said:

O Emperor of Jambu Dwipa ! we desires to know what the aims and objects of a society are and how it fulfulls its mission.

श्रीराम उवाच–

ईशेच्छां पूर्णमानेतुं समाजस्य समुद्भवः।
नरैर्नरान् स बध्नाति ज्ञानोन्मेषाय वैं नृणाम्।। 2।।

श्रीराम ने कहा–

ईश्वर की इच्छा पूर्ण करने के लिए समाज का जन्म होता है। यह समाज ज्ञानवृद्धि के लिए मनुष्यों को मनुष्यों के साथ बाँधता (मिलाता) है।

Shri Rama spoke :

Society comes into being to fulfill the divine mission. It is through society that man is combined to man.

आत्मोत्कर्षस्तु विज्ञेयो लोकमंगलसाधने।
स्वगणभूतिहेतोर्हि नरजन्म भवेन्मुने!।। 3।।

संसार के कल्याण में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। हे मुनिश्रेष्ठ! मनुष्य का जन्म अपने समाज की समृद्धि के लिए ही होता है।

One must know that the highest spiritualism consists in doing good to mankind, o sage ! a man is born to do good to his fellow beings.

नरजन्मनि सार्थक्यमेतेनैवैपलभ्यते।
समाजस्याश्रये चैव ह्येतत्कर्तुमलं नरः।
विच्छिन्नो यः समाजात् सः पशुरेव न संशयः।।4।।

शुभकर्म से मनुष्य अपने जन्म में सार्थकता प्राप्त कर लेता है अर्थात् इससे मनुष्य का जन्म सफल हो जाता है। समाज में रहकर मनुष्य को यह अवश्य करना चाहिए। जो मनुष्य समाज से भिन्न अर्थात् समाज की समृद्धि में सहयोगी नहीं बनता है, वह जानवर ही है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

Man can attain this objective only in and through society. Man without society is a mere brute.

श्रीवशिष्ठ उवाच–

रक्तसम्पर्कमूलः स्यात्सम्बन्धः पारिवारिकः।
समाजे तादृक्सम्बन्धो दृश्यते न कदाचन।।5।।
तस्मात्कथय भो देव! समाजे बन्धनं कथम्।
नृणां परस्परेणैव जायते निबिडं खलु।।6।।
समाज–गठनं कीदृग् व्रिवृणु नः सविस्तरम्।।7।।

मुनि वशिष्ठ ने कहा–

खून के रिश्तों से पारिवारिक सम्बन्ध बना रहता है, लेकिन समाज में कभी इस प्रकार का सम्बन्ध नहीं देखा जाता है।

तो हे महाराज! बताइये समाज में यह सम्बन्ध कैसे स्थापित हो? व्यक्ति परस्पर एक–दूसरे के कैसे बने रहें?

समाज का संगठन कैसे हो? हमें विस्तार से बताइये।

Vasishta said:

A family is formed by ties of blood, but there are no such blood ties among all the members of the society. O Lord ! pray, tell us in detail how man is combined to man in society, and how a society is formed.

श्रीराम उवाच–

जनसमूहं विधृत्यैंव समाजो न प्रवर्तते।
एतस्य जनता संज्ञा शृंखलारोहितो यदा।। 8।।

श्रीराम ने कहा–

केवल लोगों को एकत्रित करने से ही समाज नहीं बन जाता है, इस समूह

को जनता के नाम से जाना जाता है अर्थात् यह जनसमूह केवल समाज के साथ एक शृंखला की तरह जुड़ा होता है।

Shri Rama said :

Any body of persons does not form a community. It is a mere crowd so long as the individuals are not combined together by some fundamental link. It is then called a community.

संघेन रहिताः पुरुषाः राष्ट्रे स्थित्वाऽपि केवलम्।
भाषाचारविरोधेन समाजं न गठन्ति हि।।9।।

संगठन से रहित मनुष्य राष्ट्र में रहकर भी भाषा और व्यवहार के विरोध के कारण समाज को संगठित नहीं करते हैं।

Persons living in the same state do not necessarily form a nation if there is no community of language and character; and accordingly there will be no community in their actions and thoughts.

भावैक्यचिन्तने तेषां यदा नास्तीह कल्पना।
संस्कारैक्यविभिन्नाः स्युस्तेषां का संघट्टना।।10।।

जब तक मनुष्यों के विचारों में एकता का भाव नहीं पनपेगा तब तक संस्कारों में समानता नहीं होगी। भिन्न संस्कार वाले लोगों का संगठन कैसे बन सकता है?

So long as a body of persons are not moved by unity of sentiments and have varied mental make- up, they do not and can not form a community.

वासो देशविशेषेऽपि न समाजस्य साधकः।
एकदेशनिवासोऽपि क्वाप्यास्ति रिपुतापरः।।11।।

यदि किसी विशेष भाग में रहकर भी व्यक्ति समाज की समृद्धि में साधक नहीं बनता है तो इससे बढ़कर शत्रुता और क्या होगी? परस्पर की शत्रुता हितकारी नहीं होती है।

Persons living in the same area not necessarily form a community, they can at best be geographical neighbours with possibility of perpetual quarrels.

भ्रातृत्वं भ्रातृसम्बन्धं गोष्ठी घटयते खलु।
गोष्ठी जने चात्मबोधो भवेत् समाजसाधकः।।12।।

भ्रातृत्व की भावना से ही समाज बनता है। जनता में आत्मीयता का भाव समाज की समृद्धि में सहायक है।

A community is based upon the sentiment of brotherhood and fraternity. Each member of the community is to think of the other as his own like. This is the essential trait of communalism.

भावैक्यं चिन्तनम् चैक्यं तथैक्यं कर्मसुध्रुवम्।
गोष्ठीभावं सृजन्ति नु जनानां, नान्यथा क्वचित्।। 13।।

लोगों के मन में चिन्तन, विचार और कर्म में एकीभाव निश्चित तौर पर जनसमूह के भाव को पैदा करता है, अन्य नहीं।

By community we mean a group of persons who are capable of collective feelings, collective thinking and collective action, otherwise it is not community.

दृढेणाभंगुरेणैव युतायां बन्धनेन च।
भावैक्यं जायते नृणां नान्योपायेन केनचित्।। 14।।

संगठन में दृढ़ और स्थायी भाव के द्वारा लोगों के बीच एकता स्थापित होती है, अन्य किसी उपाय से नहीं।

Such collective sentiments can only be produced by a very strong unbreakable tie. There is no other method.

धर्मः सर्वान् निबध्नाति, धर्मो धारयतेऽखिलम्।
धर्मो मूलं समाजस्य संघस्य न संशयः।। 15।।

धर्म सभी मनुष्यों को जोड़कर रखता है, धर्म के द्वारा ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड धारण किया जाता है, धर्म सामाजिक संगठन का मूल आधार है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

Such a tie is the tie of religion which binds and supports everybody. The fundamental function of religion is to convert its votaries in to a well-knit community.

उरसि प्राणमयी श्रद्धा धर्म एव प्रकीर्त्यते।
येन कर्मणि ज्ञाने च भ्रातृत्वं भजते जनः।। 16।।

लोगों के हृदय में प्राणस्वरूपा श्रद्धा को धर्म ही फैलाता है। जिस श्रद्धा के द्वारा कर्म और ज्ञान में मनुष्य भाईचारे की भावना को बढ़ाता है।

Religion is the living faith which inspire a group of persons to look upon all its votaries as brethren in faith and action.

विधिर्जीवनयात्रा या समाजे धर्म उच्यते।
समाजात्खल्वभिन्नेयं धर्मो नात्र विभिन्नता।। 17।।

समाज में जीवन जीने की कला को धर्म कहा जाता है। धर्म समाज से अलग नहीं और न समाज से पृथक् है।

Religion is a system of living in a community. Religion is community and community is religion.

धर्महीनाश्च ये वा स्युः स्युरनार्याः असंशयम्।
स्वार्थान्धाश्च कलहयुक्तास्ते सदा मत्सरान्विताः।। 18।।

धर्महीन लोग स्वार्थी, अन्धे, झगड़ालू, ईर्ष्या रखने वाले और अनार्य माने जाते हैं, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

Had there been no religion, we would have been barbaries, competing against each other, and mutually fighting for our own selfish ends.

उत्सादयति संघर्षं धर्मः परिजनेषु च।
आत्मीयत्वं सजात्येषु वेदनिष्ठेषु साधुषु।। 19।।

समुदाय के लोगो में धर्म मनमुटाव को समाप्त करता है और वेदों में श्रद्धा रखने वाले सज्जनों में आत्मीयता (अपनापन) पैदा करता है।

Religion ends the struggle between man and man and affords him social life. It teaches that whosoever believes in the Vedas is your own kith and kin.

स्मर्यतां वाक्यमेतन्मे त्विन्दुकल्याणसाधने।
ईशेन प्रेरिताः यूयमेतस्मिन् धरणीतले।। 20।।

आर्य (हिन्दु) के कल्याण में सहायक मेरे इस वचन को याद रखो कि इस धरातल पर तुम सभी ईश्वर के द्वारा प्रेरित हो।

I behest you to keep in mind that God hath sent you on earth to safeguard the interests of the Hindus.

इन्दूनां विषये न हि स्यात् कोऽपि विश्वासघातकः।
अनार्जवं प्रतारणां सर्वदा वर्जयेत् ध्रुवम्।
न च तस्य विरोधित्वं न मृषा भाषणं तथा।। 21।।

आर्यों (हिन्दुओं) के लिए कोई भी व्यक्ति विश्वासघात करने वाला न हो। हमेशा के लिए निश्चित रूप से इनके लिए छल–कपट व प्रताड़ना (दुःख देना) आदि बुरे कर्म को त्याग देना चाहिए। इनके विरोधी न बनें और न ही झूठी भाषण–बाजी करें।

Thou shalt never betray the trust of a Hindu. Thou shall never be impolite to or cheat a Hindu. Thou shalt never tell a lie or oppose a Hindu.

परिवादो न कर्त्तव्यो वेदे वर्जितमेव तत्।
भ्रातृवदाचरेत्तांस्तु भ्रातृवत् पालयेत् भृशम्।। 22।।

वेद के विषय में विवाद नहीं करना चाहिए। वह बिल्कुल वर्जित है। आर्यों (हिन्दुओं) के साथ भाई जैसा व्यवहार करें और भाई जैसा ही उनका पालन करें।

The Veda forbids you to indulge in scandals against any Hindu all of whom you are to treat as your own brethren.

एतत् साधयितुं ह्यर्थं राष्ट्रस्य हि समुद्भवम्।
समाजोऽयं तु राष्ट्रं हि तत्प्रतिष्ठानमुच्यते।। 23।।

इन सामाजिक नियमों के पालन से ही राष्ट्र की उन्नति होती है और ऐसी सामाजिक व्यवस्था से युक्त प्रतिष्ठान ही 'राष्ट्र' कहलाता है।

To achieve the ends of social life, a society is converted into state. Society is the sentiment while state is the resultant concerete organisation.

राष्ट्रसमाजौ चाभिन्नौ समाजो राष्ट्रतां गतः।। 24।।

राष्ट्र और समाज में कोई अन्तर नहीं है वस्तुतः दोनों एक ही हैं। समाज ही अन्त में राष्ट्र बन जाता है।

There is no difference between society and state. The community itself becomes and merges into state.

राष्ट्रं सामाजिकं स्याच्वेन्मुख्यसिद्धिर्नृणां भवेत्।
आध्यात्मिकी खलु श्रेष्ठा विज्ञेया मुनिपुंगवैः।। 25।।

यदि राष्ट्र सामाजिक हो तो उसमें मनुष्यों की आवश्यक सभी कामनायें पूरी हो जाती हैं। श्रेष्ठ मुनियों के द्वारा आध्यात्मिक कामना को श्रेष्ठ माना गया है।

व्यक्तित्वं सार्थकं स्यात्तु राष्ट्रे सामाजिके सति।
व्यक्तिभावो विलुप्तः स्यात् राष्ट्रेसामाजिके खलु।। 26।।

राष्ट्र के सामाजिक बन जाने पर व्यक्तित्व सार्थक हो उठता है और राष्ट्र के सामाजिक बन जाने पर व्यक्तिभाव भी विलुप्त हो जाता है।

O' wisest among sages, note that the communal state is the highest spiritual achievement of man. Man realizes his true personality only in a communal state, because it is only in a communal state that individualism is completely subordinated. (25-26)

व्यक्तिस्वार्थो न कश्चित् स्यात् पृथग्भूतो महामुने।
राष्ट्रे सामाजिके गोष्ठीस्वार्थः केवलमेव हि।। 27।।

हे महामुनि! सामाजिक राष्ट्र में व्यक्तिगत स्वार्थ जनसमूह के स्वार्थ से भिन्न नहीं होना चाहिए, उसमें केवल जनसमूह के हितों की ही वरीयता होनी चाहिए।

O sage ! no individual has personal interest. The only interest

that an individual knows in a communal state is the communal interest.

हस्तपादौ श्वासयंत्रं ह्रदयं च यकृद्यथा।
देहार्थं कर्म कुर्वन्ति स्वार्थं त्यक्त्वा स्वकीयकम्।। 28।।
तथैव राष्ट्रवास्तव्याः जनहितं ह्यनुशीलयन्।
राष्ट्रस्यार्थे क्रियावन्तो भवन्ति ह्यत्र केवलम्।। 29।।

जिस प्रकार हाथ–पैर, श्वसन–यन्त्र, हृदय और जिगर अपने स्वार्थ को त्यागकर शरीर के लिए कार्य करते हैं। ठीक उसी प्रकार देशवासी जनहित का कार्य करते हुए राष्ट्र के लिए क्रियाशील होते हैं।

Just as arms, legs, lungs, heart and liver have no interest but to serve the body as a whole, the individuality has no interest but to serve the communal state.

तद्राष्ट्रं सार्थकं ज्ञेयं यत्तु स्यात् सामाजिकम्।
अन्यथा तद् भवेन्नू नमात्मनाशकरः सदा।। 30।।

वही राष्ट्र राष्ट्र कहलाने योग्य है जो सामाजिक होता है, नहीं तो उसे अपना विनाशक मानना चाहिए अर्थात् सामाजिकता के अभाव में राष्ट्र अपना ही विनाश कर लेता है।

The true state will be a communal state, otherwise it will be a state, divided against itself.

एकत्वादात्मनो यद्वत् शरीरस्यैकता भवेत्।
धर्मस्य बन्धनेनैवं राष्ट्रस्य स्यात् सुसंहतिः।। 31।।

जिस प्रकार आत्मा के एकत्वभाव से शरीर की एकता होती है, उसी प्रकार धर्मपरायण होने से राष्ट्र की एकता होती है।

Just as our body must have but one soul, the state must be well-knit by the sacred ties of one religion.

दृश्यन्ते हि यदा देहे पृथक्त्वमात्मनः क्वचित्।
भूतग्रस्तं शरीरं तत् प्रवदन्ति जनास्तदा।। 32।।

जब शरीर में आत्मा से पृथक्ता का प्रभाव दिखता है तब लोग उस शरीर को भूत–प्रेत–ग्रस्त बोलते हैं।

If a body has more than one soul, we say that ghosts have possessed that person.

उन्मत्तं खलु मन्यन्त आत्मनः यत्र भिन्नता।
कर्मणि चानुपयुक्तोऽसौ चिन्तनरहितः प्रजायते।। 33।।

जहाँ आत्मा से शरीर का अलगाव–सा हो जाता है वहाँ उस व्यक्ति को 'पागल' कहा जाता है। उस स्थिति में वह व्यक्ति न कर्म करने लायक रहता है और न ही सोचने लायक।

A man with more than one soul is an insane person who can neither think nor act.

धर्मः समाजमित्येतत् द्वयं यत्र भवेन् मुने!।
बह्वयो गोष्ठ्श्च यत्रस्युः राष्ट्रके चासामाजिके।। 34।।
युक्तिवाह्यं भवेत् तत्तु विध्वस्तं त्वचिरात् भवेत्।। 35।।

हे मुनि! जिस असामाजिक राष्ट्र में धर्म और समाज दोनों पृथक्–पृथक् विद्यमान हों, अनेक जनसमुदाय हों और बुद्धिमत्ता से कार्य न होता हो तो वह राष्ट्र शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

O sage ! if there are communities or religions more than one in a state, it is an insane state, bound to be disrupted earlier than it is created.

समाजराष्ट्रयोरैक्यं वेदेषु कथितं खलु।
राष्ट्रं समाज एवास्ति द्वयं नैव कदाचन।। 36।।

समाज और राष्ट्र एक ही होता है, ऐसा वेदों में कहा गया है। राष्ट्र समाज ही है ये दोनों अलग–अलग नहीं हैं।

The Veda admonishes that the community and the state are one. The community is the state and the state is the community.

सुमन्त उवाच –

अधुना ज्ञातमस्माभिर्धर्मो घटयते कथम्।
समाजश्च पुनः सोऽपि कथं गठति राष्ट्रकम्।। 37।।

सुमन्त ने कहा–

अब हमने जान लिया है कि धर्म कैसे बनता है। और वह समाज राष्ट्र का निर्माण कैसे करता है?

विवृणु जम्बुनाथ! त्वं जिज्ञासाऽत्रेदृशी च नः।
राष्ट्रस्य कानि कार्याणि भवन्ति धरणीतले।। 38।।

हे जम्बूनरेश! आप बताइये कि इस धरती पर राष्ट्र के क्या–क्या कर्तव्य हैं? यह हमारी जानने की इच्छा है।

The Sumanta said:

We have understood how religion forms a community and how community becomes a state. We besearch you, o' Emperor of Jambo Dwipa ! to narrate us the functions of a state. (37-38)

श्रीराम उवाच–

गोष्ठीभावे बलाधानं राष्ट्रस्य मुख्यसाधनः।
बालोऽपि शिक्षया जानीत् राष्ट्रेण सार्धमेकता।। 39।।

श्रीराम ने उत्तर दिया–

जनसमूह के भावों को शक्ति प्रदान करना राष्ट्र का मुख्य कार्य है। बालक भी शिक्षा के द्वारा राष्ट्र के साथ एकता को समझ जाता है।

Shri Rama spoke :

The foremost of the functions of the state is the strengthening of the communal will. All the children shall be trained to identify themselves with the state.

विधानानां प्रयोगस्तु राष्ट्रे तुल्यः सदा भवेत्।
व्यवहारः सदा तुल्यः प्रजासु संभविष्यति।। 40।।

राष्ट्र में एक समान कानून का प्रयोग हो तो प्रजाजनों में समान व्यवहार की भावना पनपेगी।

The state shall administer uniform laws throughout its jurisdiction. There shall be no discrimination between man and man in the eyes of law.

उच्चतां नीचतां चैव लोकेषु ह्यविचारयन्।
व्यवहारः सदातुल्यः तेषु संकुर्यात् सदा।। 41।।

प्रजाजनों में ऊँच और नीच की भावना मिटाकर सबके साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए।

The state shall not recognize high and low. Complete equality will be guaranteed to all the nationals.

विप्लवात् रक्षितव्यास्ते शान्तिं चैव स्थापयेत्।
येनोपद्रवहीनाश्च सर्वे स्युः कर्मतत्पराः।। 42।।

राष्ट्र की उपद्रवों से रक्षा करनी चाहिए और इसमें शान्ति का माहौल बनाना चाहिए, जिससे राष्ट्र में सभी लोग उपद्रव रहित होकर कर्मशील बनें।

The state shall protect all its nationals from lawlessness. Perfect peace and security shall be guaranteed to all the citizens to pursue their vocations.

संरक्षेत् सर्वदा राष्ट्रं जनानां वित्तसम्पदः।
स्तेयप्रतारणादिभ्यो भयनाशो न वा यथा।। 43।।

राष्ट्र को हमेशा सभी लोगों के धन–सम्पत्ति की रक्षा करनी चाहिए और

चोरी–प्रताड़ना आदि से भय का नाश न हो, ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।

The state shall protect and guarantee the property of every individual against theft, defrauding and devastation.

प्रजा न वित्तहीनाः स्युः न भेवत् क्षुत्प्रकर्षिताः।
वृद्धाक्षमातुराणां तु कार्यं रक्षणपोषणम्।।44।।
समर्थाः युवकाः वृत्तौ भवेयुर्निरताः सदा।45।।

राष्ट्र का धर्म है कि कोई भी व्यक्ति निर्धन न रहे, कोई भी भूखा न रहे, वृद्ध और क्षमा चाहने वाले लोगों की रक्षा पालन हो। समर्थ युवक हमेशा रोजगार में लगे रहें।

The state shall provide work to all its citizens and none shall be allowed to die of starvation and want. The state shall protect and feed all the invalids, the sick and the old whereas all fit adults shall have to work.

कायेन मनसा वापि श्रमः स्यान्न कृतो यदि।
संपदि तत्र स्वामित्वं न कस्यापि कदाचन।।46।।

यदि कोई व्यक्ति शरीर अथवा मन से, परिश्रम न करे तो किसी की भी सम्पत्ति पर उसका स्वामित्व नहीं होना चाहिए।

The state shall not allow the male adults the right of any such income that they do not earn with their physical or intellectual labour.

राष्ट्रस्थाः शिशवः सर्वे शिक्षणीयाः प्रयत्नतः।
शिक्षा राष्ट्रेण यस्मिन् स्यात् तद्राष्ट्रं पापपूरितम्।।47।।

राष्ट्र को अपने सभी बच्चों को बड़े प्रयत्न से शिक्षित करना चाहिए। जिस राष्ट्र में शिक्षा न हो, वह राष्ट्र पाप कर्म से घिर जाता है।

The state shall educate all the children at its own expense. Illiteracy and the true state are incompatible.

भवेत् सेनाबलं तीक्ष्णं क्षमं पृथ्वीजये खलु।
सुशिक्षिताः प्रजाः सर्वाः भवेयुर्युद्धकर्मणि।।48।।
श्रेष्ठं गौरवदं कार्यं भवेत् राष्ट्रार्थकं रणम्।।49।।

राष्ट्र की सेना सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतने में अत्यधिक समर्थ होनी चाहिए और सभी लोग युद्ध करने में निपुण हों। युद्ध राष्ट्रहित में श्रेष्ठ गौरव प्रदान करने वाला कार्य होता है।

The state shall maintain a strong military, capable of fighting the whole world at any time. The state shall provide military

education to all the nationals, because it is their foremost duty to fight for the glory of the state.

नियन्त्रितानि सम्यक्स्युः सेनांगान्यखिलानि तु।
रिपुभ्यः सुष्ठु गुप्तानि श्रेष्ठशस्त्राणि तानि वै।।50।।

सेना में सभी अंग शत्रु की पंक्तियों को अच्छे प्रकार से नियन्त्रित करें और अपने श्रेष्ठ हथियारों को शत्रुओं से गुप्त रखें।

The state shall see that all the wings of the military are kept in perfect discipline and are provided with the best equipment and such armaments that are unknown to the world.

सर्वैः नागरिकै रर्ह्यं राष्ट्रे हि सैनिको भवेत्।।51।।

राष्ट्र यह सुनिश्चित करे कि सभी नागरिक सैनिकों का सम्मान करें।

The state shall see that every soldier who wears the uniform is respected by all the citizens.

कृषिशिल्पोन्नतिर्येन भृशमेव प्रजायते।
तत् कार्यं हि राष्ट्रेण तत्प्राचुर्यं यथा भवेत्।।52।।

जिस कार्य से कृषि और शिल्प कला का अत्यधिक विकास होता है उन कार्यों की व्यवस्था राष्ट्र प्रचुरता से करे।

The state shall adopt all possible means to increase the agriculture and industrial produce to the country.

आपद्विरहितं वित्तमार्यसम्मतजीवनम्
राष्ट्रेण देयमेव स्यादन्यथा नास्ति राष्ट्रता।।53।।

राष्ट्र को आपदाओं से रहित धन और श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा स्वीकृत जीवन–पद्धति अपने नागरिकों को उपलब्ध करानी चाहिए, अन्यथा राष्ट्रीयता बरकरार नहीं रहती है।

The state shall guarantee prosperity, security and decent living to all its nationals.

राष्ट्रप्रभावाधीनाश्च भवेयुः प्रतिवेशिनः।
वेदधर्मप्रचारार्थं तद्देशं राष्ट्रसात् क्रियात्।।54।।

राष्ट्र को अपने पड़ोसी देश को अपने प्रभाव में रखना चाहिए और वैदिक धर्म के प्रचार के लिए उसे अपने साथ मिला लेना चाहिए।

The state shall keep the neighbouring countries under its influence or conquer them so that the inhabitants of those countries may be converted into the religion of the Veda.

मन्दिरस्य च निर्माणं व्यवस्था रक्षणे क्षणे।
राष्ट्रेण सर्वदा कार्यं पोषणं च यथा भवेत्।। 55।।

राष्ट्र को मन्दिर के निर्माण की व्यवस्था करनी चाहिए और प्रतिक्षण उसकी रक्षा के लिए तत्पर रहना चाहिए तथा जैसे उसका पोषण हो, वैसे उसकी व्यवस्था करनी चाहिए।

The state shall build temples and make all possible arrangements for their upkeep and maintenance.

ऋत्विजः शिक्षिताश्चैव स्थापयेन्मन्दिरेषु च।
वेदविहितकर्मादिर्यथाऽनुष्ठीयते शुभम्।। 56।।

राष्ट्र को मन्दिरों में शिक्षित ऋत्विजों को रखना चाहिए जिससे वेदों के द्वारा प्रतिपादित शुभकर्म आदि का अनुष्ठान हो सके।

The state shall engage and train the priests to conduct the services connected with the religion of the Veda.

एतानि मुख्यकर्माणिराष्ट्रस्य साधने खलु।
यदि राष्ट्रं न शक्तं स्यान्न हि राष्ट्रस्य राष्ट्रता।। 57।।

अभी ऊपर जिन कार्यों का वर्णन किया गया है वे सब राष्ट्र के प्रमुख कार्य हैं। इन कार्यों को पूरा करने में यदि राष्ट्र समर्थ नहीं है तो राष्ट्र की राष्ट्रीयता बरकरार नहीं रह सकती है।

These are the main functions that a state shall discharge and a state which can not discharge them can not be called a state.

वशिष्ठ उवाच –

नूनं राष्ट्रसंस्थितिरेवं भवता वर्णितं प्रभो!।
भारतेश ! महाराज ! जम्बूद्वीपनृपोत्तम!।। 58।।

वशिष्ठ ने कहा–

नरश्रेष्ठ! जम्बूनरेश! भगवन्! आपने जैसा वर्णन किया है उस अनुसार राष्ट्र अवश्य ही स्थिर रह सकता है।

देशो राष्ट्रं च कल्प्येतेऽपृथक् प्राकृतैर्जनैः।
देशभक्तिः सर्वोत्तमा सर्वैस्तु स्वीकृता सदा।। 59।।

सामान्य लोगों के द्वारा देश और राष्ट्र को एक ही माना जाता है। हमेशा ही सभी लोगों के द्वारा देशभक्ति को सर्वोत्तम माना गया है।

देशराष्ट्रविभेदो यः स वर्ण्यः कृपया विभो!।। 60।।

हे भगवन्! कृपा करके देश और राष्ट्र में जो अन्तर है, उसे बताइये।

Vasishta said :

O Lord ! king of Bharata and the Emperor of Jambu dwipa! You have called the state an organization, but the common man identifies it with country, the geographical tract while the love of the country, we generally believe, is the highest of all virtues. O Lord, pray, tell us what is the difference between the country and the state? (58, 59, 60)

श्रीराम उवाच –

इन्दुवंशोद्भवाः पूज्या शृण्वन्तु सुसमाहिताः।
गोष्ठीजीवनलाभो हि नराणां श्रेष्ठ–साधनः।
तल्लाभाय प्रयासो यः सोऽस्मांक स्वत एव हि।। 61।।

श्रीराम ने उत्तर दिया–

आर्य (हिन्दु) धर्म में उत्पन्न, सम्मानीय आप लोग ध्यान से सुनिये। सभी लोगों के लिए जनसमुदाय का लाभ ही श्रेष्ठ काम माना जाता है और उसकी प्राप्ति के लिए हमारा जो प्रयास होता है वह स्वतः ही हो जाता है।

Shi Rama spoke :

O'Nobles of the Hindu race, gathered here, please note that community is the ultimate goal of human life. It is a goal which we strive for its own sake.

शरीराच्छादनार्थं हि वाससां तु प्रयोजनम्।
व्याधिविनाशकार्यार्थं यथा भेषजसेवनम्।। 62।।

जिस प्रकार शरीर को ढकने के लिए वस्त्रों की और रोग को दूर करने के लिए औषधि का सेवन आवश्यक होता है।

When we desire clothes, we desire them so that we may protect our body; when we desire medicine, we desire it so that we may be relieved of disease so that we may live cheerfully.

कामना नो व्याधिनाशे देहस्य वरणे तथा।
आत्मप्रीतिकरौ ह्यैतौ स्वीकृतौ मानवैः सदा।। 63।।

उसी प्रकार शरीर को ढकने और रोग को नष्ट करने की हमारी कामना होती है। हमेशा ही सभी मनुष्यों के द्वारा ये दोनों कार्य अपने को प्रिय लगने वाले कार्य स्वीकार किये गये हैं।

We desire to protect our body and we want to be relieved of disease so that we may live cheerfully.

देहस्य स्वास्थ्यरक्षार्थमेतयोर्हि प्रयोजनम्।
कायस्य स्वस्थता ज्ञेया जीवनानन्ददायिका।।64।।

शरीर को स्वस्थ रखने में ही इन दोनों का प्रयोजन है। शरीर की स्वस्थता को जीवन में आनन्द देने वाला समझना चाहिए।

Clothes and medicine are the means for the attainment of the goal of a healthy body. A healthy body is a means for the attainment of the goal of cheerful living.

विश्वप्रपंचो विज्ञेयो ह्युपाय लक्ष्यसाधकः।।65।।

विश्व में फैले हुए इस कार्य को उपाय और लक्ष्य को सिद्ध करने वाला समझना चाहिए।

Thus the objects in the world which we come across are links in the chain of means and ends.

कश्चिदेव भवेत्पंथाः सिद्धिप्राप्तेरसंशयम्।
पुनरेव हि सिद्धिः सा परसिद्धिहेतुका भवेत्।।66।।

निःसन्देह सिद्धि–प्राप्ति को कोई न कोई रास्ता होता है। यही सिद्धि दूसरे व्यक्ति की सिद्धि का कारण बन जाता है।

A certain things may be a means to a certain and which may in itself be means to certain other ends.

एवं परम्परारूपेणोपायस्य च लक्ष्यता।
लक्ष्यस्योपायता तद्वत् पुनरेव च संभवेत्।।67।।

इस प्रकार परम्परा से उपाय की लक्ष्यता और लक्ष्य की उपायता स्वतः सिद्ध होती जाती है।

Thus unendingly means become ends and ends serve as means to some other ends.

परं तत्रमीन्त लक्ष्यैकं यत्नोपायो भवेत् कदा।
समष्टिमंगलं तत्तु विद्वद्भिः सम्प्रकीर्त्यते।।68।।

जब कभी एक श्रेष्ठ लक्ष्य बनाकर प्रयत्नपूर्वक कार्य किया जाता है तो सम्पूर्ण जनसमुदाय का कल्याण होता है, ऐसा विद्वानों के द्वारा कहा गया है।

But there is an end which is never a means. The end of all ends is the communal good. So say the scholars.

सर्वमंगलमाँगल्यं समाजमंगलं खलु।
तदभिलक्ष्य मनुष्याणां सर्वो यत्नो भवेद् ध्रुवम्।।69।।

सबके लिए मंगल की कामना से समाज का कल्याण निश्चित तौर पर होता

है। इसलिए मनुष्य के सब प्रयत्न श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए होने चाहिए।

मंगलस्य हि मांगल्यं गोष्ठीमंगलसाधने।
अत्रैव हि भवेन्नूनं मांगल्यं मंगलस्य हि।।70।।

जनसमुदाय के लिए मंगलकामना मंगल के लिए साधक बन जाती है यहाँ निश्चित रूप से मंगल की कामना ही करनी चाहिए।

The communal good is the ultimate good. It is good in itself. Every thing else that we call good is good so far as it partakes of the communal good.

गोष्ठीनां वासभूमिर्हि देश इत्युच्यते बुधैः।
समाजसंपदेवैषा न समाजः कदाचन।।71।।

जनसमुदाय में आवासीय भूमि को ही विद्वानों ने 'देश' का नाम दिया है। यही समाज की सम्पत्ति है न कि समाज।

Country is the place where the community lives. It is a possession of the community; it is not the community.

वासस्थानं यथा गृहं भवति पारिवारिकम्।
परिवारस्य संपत्तिर्न परिवारकं क्वचित्।।72।।

जिस प्रकार रहने वाला स्थान पारिवारिक घर होता है और वही पारिवारिक सम्पत्ति माना जाता है न कि परिवार।

Likewise a house is the place where the family lives. House is a possession of the family; it is not the family.

वासांसि संपदः यद्वन्नरस्य न नरः क्वचित्।
तथा देशः समाजस्य वासभूमिर्न चान्यथा।।73।।

जैसे व्यक्ति के वस्त्र उसकी सम्पत्ति होती है न कि व्यक्ति, ठीक उसी प्रकार देश समाज की रहने वाली जगह है न कि राष्ट्र, इसके विपरीत कुछ भी नहीं।

Just as the clothes are the possession of man and not the man, a country is the possession of the community and not the community.

प्रेमावाससि नो न हिस्त्यात् प्रेम तु मानवे ध्रुवम्।
न गृहे रतिरस्माकं प्रीतिस्तु पारिवारिके।।74।।
तथा गोष्ठ्यां किं प्रेम नो न हि देशे स्पष्टमेव हि।
देशसमाजयोरेवं पार्थक्यं स्पष्टमेव तत्।।75।।

जैसा प्रेम हमारा मानव में होता है वैसा वस्त्र में नहीं होता, जैसा प्रेम परिवार में होता है वैसा घर में नहीं।

जैसा प्रेम हमारा जनसमुदाय में होता है, वैसा देश में नहीं, यह बात स्पष्ट ही है। इसी प्रकार देश और राष्ट्र की पृथक्ता भी स्पष्ट ही है।

What we are to love is the man, not the clothes, the family and not the house. Likewise we are to love the community and not the country. This must be clear to you. Such is the difference between the country and the community.

यदा जीर्णं भवेद्वासो नरो जह्यादकुंठितः।
तथा देशस्य संत्यागः समाजस्य क्वचिन्न च।। 76।।

जब वस्त्र जीर्ण हो जाते हैं, तो मनुष्य बिना किसी उदासी के उनको त्याग देता है। ठीक उसी प्रकार देश का त्याग हो सकता है लेकिन समाज का कभी नहीं।

Just as we can have a different set of clothes as soon as the old set is worn out, we can change the country and not the community.

देशप्रेम ह्यनार्याणामुत्तमो धर्म उच्यते।। 77।।

देश प्रेम तो अनार्य लोगों का श्रेष्ठ धर्म कहा जाता है।

It is among the barbarian races that the love of country is treated as the highest good

या जातिः शिक्षयेत् प्रीतिं सदा देशगतां खलु।
अचिरात्सा भविष्यति स्वार्थान्धजनसंकुला।। 78।।

जो जाति हमेशा देश से सम्बन्धित प्रेम की ही शिक्षा देगी, वह जाति शीघ्रातिशीघ्र स्वार्थ में अन्धे हुए लोगों द्वारा घिर जाएगी।

Such races that Endeavour to inculcate the sentiment of the love of the country are bound to be a mere crowd of selfish individuals.

स्नेहभावो न भ्रातृत्वमाशु जातिषु जायते।
केवलं देशभक्तिस्तु शिक्ष्यते यत्नतो यतः।। 79।।

जहाँ प्रयत्न पूर्वक केवल देशभक्ति की शिक्षा दी जाती है उस जाति में प्रेमभाव और भ्रातृत्वभाव शीघ्र उत्पन्न नहीं होता है।

Among such races that teach love of the country there shall never be a spirit of fellow-feeling and sense of human affections.

तासां राष्ट्रं दृढं न स्यात् देशभक्तिसमाश्रयात्।
विलोपो ह्यवने तेषामवश्यम्भाविको भवेत्।। 80।।

देशभक्ति के सहारे राष्ट्र शक्तिशाली नहीं बन सकता, इस धरा पर उसका विनाश अवश्यम्भावी है।

On the basis of the love of country, such races shall never be able to develop the right type of state and are destined to be effaced from the world.

गोष्ठीप्रेमा नराणां हि कर्तव्यो वेदचोदितः।
देशप्रेमा न वर्तेत ह्येतद्वेदानुशासनम्।। 81।।

मनुष्य को जनसमुदाय से प्रेम करना चाहिए, ऐसी प्रेरणा वेदों के द्वारा दी गई है। निश्चित रूप से देशप्रेमी नहीं होना चाहिए, यह वेद–सम्मत सिद्धान्त है।

The love of community and not the love of country is the watchword of the Veda.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे राष्ट्रं नाम त्रयोदशोऽध्यायः।

इस प्रकार वाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद में 'राष्ट्र' नामक तेरहवाँ अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends the thirteenth chapter entitled. "The State" of Shri Rama's Discourse.

*****

चतुर्दशोऽध्यायः
चौदहवां अध्याय
CHAPTER 14

अनुपलब्धः।

यह अध्याय क्षतिग्रस्त पाण्डुलिपि के कारण उपलब्ध नहीं हो सका।

It is regretted that manuscripts of this chapter were worn out that nothing could be deciphered.

*****

पंचदशोऽध्यायः
पन्द्रहवां अध्याय
CHAPTER 15

युद्धः
युद्ध
WAR

सुमन्त उवाच–

सेनाधिपस्य कार्याणि न व्याख्यातानि भूपते!।
तथा वैदेशिवर्गस्य, कृपया ब्रूहि विस्तरम्।।1।।

सुमन्त ने कहा–

आपके सम्माननीय महामहिम ने सेना के अधिपति और विदेशी सम्बन्धों के मंत्री के कर्त्तव्यों को नहीं बताया है। कृपया हमें विस्तार से इनके बारे में बताएं।

The Sumanta said :

Your sacred Majesty has not explained the duties of the Minister in charge of the Military, nor those of the minister for foreign relations. Kindly narrate these to us in detail.

श्रीराम उवाच –

सेनाबलं सुशिक्षितं शक्तिमद्धि तथैंव च।
जातेरात्मैव विज्ञेयं भगवत्कृपया हि तत्।।2।।

श्री राम ने कहा–

एक शक्तिशाली और सुशिक्षित सेना किसी राष्ट्र की आत्मा होती है। वस्तुतः ईशकृपा से ही यह संभव हो पाता है।

Shri Rama spoke :

A strong and well- disciplined army is the soul of a nation. This verily is through the grace of God.

सेनानुगत्यकेन्द्रो नु एक एव भवेद्ध्रुवम्।
जातिरेव स विज्ञेयो नान्यः कश्चन भूपते!।।3।।

सैनिकों की वफादारी का एक ही केन्द्र होना चाहिए और निश्चित रूप से वह केन्द्र राष्ट्र है, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

The soldiery ought to have but one centre of fidelity; and it ought to be the nation and nothing else.

न बलस्य भवेज्जातिर्न प्रादेशिकता तथा। 4।।
अव्यभिचारिणी निष्ठा त्विन्दुजातिं प्रति भवेत्
आनुगत्येः विभेदस्तु बलविश्लेषकारणम्।। 5।।

सैनिकों की कोई जाति नहीं होती और न ही कोई क्षेत्रीय संबंध होते हैं। उनकी केवल एक भावना होनी चाहिए और वह भावना है आर्य (हिन्दु) राष्ट्र के प्रति अटल विश्वास।

Soldiers have no caste and territorial relations and they ought to have only one sentiment and it is of unflinching loyalty to the Hindu Nation.

नाम्ना भगवतः कुर्याच्छपथग्रहणं बलम्।
ऐन्दवं चानुगत्यं स्यात् मरणान्तिकमेव च।। 6।।

प्रत्येक सैनिक को ईश्वर के नाम पर एक शपथ लेनी चाहिए कि वह आर्य (हिन्दु) राष्ट्र के प्रति वफादार होगा और उसकी सेवा करेगा। यदि आवश्यक हुआ तो अपने प्राणों को समर्पित करके भी अपनी राष्ट्र की सेवा करेगा।

Every solider must take a solemn pledge in the name of God that he shall be loyal to the Hindu Nation and will serve it, if necessary, with his death.

सेनाबलं समग्रं तु स्थायि भूयात् सदैव हि।
राजकोषात् भृतिं तस्य नियमेनाप्नुयात् खलु।। 7।।

सम्पूर्ण सैन्यबल हमेशा स्थायी होगा और उन्हें राजकीय कोष से नियमित रूप से वेतन दिया जाएगा।

The entire fighting force will be the standing army and will be paid regularly from the state treasury.

विभिन्ना नामधेया न कदापि स्यादनीकिनी।
मालवीयाश्च पाञ्चालाः कोशलाश्चेत्यपि क्रमात्।
प्रादेशिकसम्बन्धेन दूषिता स्यात्ततश्च सा। 8।।

छावनियों को मालवा, पांचाल और कौशल आदि नाम नहीं दिया जाएगा क्योंकि ऐसा करने से क्षेत्रीय संबंधों के संकेत मिलेंगे।

Regiments shall not be named as Malawas, Panchala or Kaushla regiments, because such a course will smack of territorial affinities.

न भवेज्जातिचिन्हेन सेनापरिचयः क्वचित्।
आनुगत्यस्य भृत्यत्वं ह्येतेनैव भविष्यति।। 9।।

किसी छावनी को किसी जाति विशेष के चिन्ह से नहीं जाना जाएगा, क्योंकि जाति के चिन्ह उन्हें जाति के प्रति पक्षपाती बना देगी।

A regiments shall not be known by any caste label, for such caste labels are bound to make them caste partisans.

सुष्ठुनीतिं समालम्ब्य सेनायाः संग्रहो भवेत्।
यथेच्छाचार एवात्र वर्जनीयः प्रयत्नतः।। 10।।

सेना की नियुक्ति स्वेच्छाचारिता से नहीं की जाएगी। यह नियुक्ति कुछ आदर्श सिद्धान्तों पर आधारित होगी।

The recruitment of the army shall not be made in haphazard way. It shall be based on certain sound principles.

दृढिष्ठो वेदनिष्ठो नु चेन्दुजातीयको भवेत्।
न तस्य पूर्वजः कश्चिद्राष्ट्रद्रोही तथात्मीयः।
अनीकिन्यां स संग्राह्यो भवेद्धि प्रयत्नतः।। 11।।

वे लोग जो वेदों में विश्वास रखते हैं, जो शारीरिक रूप से सक्षम हैं, जिनके पूर्वज या परिवार के सदस्य देशद्रोह में दोषी न रहे हों, जो आर्य (हिन्दु) राष्ट्र की सेवा करने का संकल्प लें, केवल ऐसे लोगों को ही सेना में नियुक्त किया जाएगा।

Those who believe in the Vedas, who are physically fit, whose ancestors or family members have never been guilty of high treason, who pledge to serve the Hindu Nation, shall only be recruited to military services.

नौबलं स्थलसैन्यं च द्विविधा स्यादनीकिनी। 12।।

युद्ध लड़ने वालों की दो मुख्य श्रेणियाँ होंगी। ये हैं थल सेना और जल सेना।

There shall be two main divisions of the fighting forces, the army and the navy.

चतुरंगसमायुक्ता भवेदेव हि वाहिनी।
रथाश्वगजपादातैश्चतुरंगं सुयंत्रितम्।। 13।।

थल सेना में चार प्रकार की श्रेणियाँ होंगी। ये हैं–रथों की श्रेणियाँ, घोड़ों की श्रेणियाँ, हाथियों की श्रेणियाँ और पैदल सिपाहियों की श्रेणियाँ।

नौबलस्य प्रयोजनं शक्तिमतः विताडने।
अनार्याणां प्रवेशो न जलमार्गेण संभवेत्।। 14।।

एक शक्तिशाली जल सेना आवश्यक है ताकि हमारे देश में समुद्र के रास्ते प्रवेश करने वाले बर्बर लोगों को रोका जा सके।

The army shall consist of fourfold divisions of chariots, horse, elephants and infantry. A strong navy is essential to keep off the barbarians to enter our country by way of sea. (13-14)

सेनाबलस्य चांगानि योग्यशिक्षामवाप्नुयुः।
संग्रामे निपुणानि स्युरन्योऽन्यसहयोगिनः।। 15।।

थल सेना की सभी श्रेणियों को अच्छी प्रकार से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे एक–दूसरे के सहयोग से युद्ध करें।

All the wings of the army should be properly trained to fight in co-ordination with each other.

वशिष्ठ उवाच–

रणे मानवप्रकृतेः वितृष्णा विद्यते क्वचित्।
युक्तिमत्तां रणस्याद्य कृपया ब्रूहि नः प्रभो!।। 16।।

मुनि वशिष्ठ ने कहाः– मनुष्यों के कुछ वर्गों में युद्ध को बुरा बताने की प्रवृत्ति पाई जाती है। हे भगवन्! ये बताएँ कि युद्ध क्यों लड़ना चाहिए?

Sage Vasishta said :

There is a tendency among certain sections of people to condemn war. O Lord ! tell us why we should fight at all.

श्रीराम उवाच –

कासुचित् खलु गोष्ठीषु क्लीबता मूढतास्ति वा।
यतः समरवैमुख्यं तासां मनसि जायते।। 17।।

श्री राम ने कहा–

कुछ जनसमूह में यह अज्ञानता अथवा नपुंसकता है जो उन्हें युद्ध के विरुद्ध बात करने के लिए बाध्य करती है।

Sri Rama spoke:

It is ignorance or inherent demoralization of certain communities that induces them to talk against war.

गौरवं जायते युद्धात् महत्त्वं चैव जातिषु।
समराद्विमुखी या तु सा जातिर्जातिरेव न।। 18।।

यह युद्ध है जो कि राष्ट्रों के गौरव और महानता का निर्माण करता है। एक राष्ट्र जिसने कभी युद्ध नहीं किया, उसे राष्ट्र की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

It is war that builds up the glory and greatness of nations. A nation which has never gone to war can not be called a nation.

काम्या शान्तिः सदा नूनं, न शान्तिर्हि रणं बिना।। 19।।

शान्ति की हमेशा कामना की जानी चाहिए परन्तु बिना युद्ध के कोई शान्ति नहीं हो सकती।

Peace should always be desired but there could be no peace without war.

सुदृढा लौहसंहातिः गोष्ठी संजायते ध्रुवम्।
समरे तत्परा यत्र भवन्ति जातयो भुवि।। 20।।

युद्ध जनसमूह को एकता प्रदान करता है, अतः संसार में किसी भी राष्ट्र को युद्ध के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

War unites the members of the community in hoops of steel; thus a nation should always be prepared for war in the world.

नैक्यं कदापि जायेत रणसंभोषिका बिना।। 21।।
अभिव्यक्तिर्गुणानां च महतां भवति ध्रुवम्।
समरश्रेष्ठकाव्यानां नाट्यानां चोदयो भवेत्।
न वा चाविष्कृतिर्भूरि जायते नात्र संशयः।। 22।।

युद्ध के बिना कोई राष्ट्रीय एकता संभव नहीं हो सकती। निःसंदेह युद्ध मनुष्य के सबसे अच्छे गुणों को बाहर निकालने में सहायता करता है। सर्वोत्तम काव्य, नाटक और सबसे अधिक लाभदायक आविष्कार युद्ध की ही देन हैं।

There can be no national unity without war. War undoubtedly brings out the best qualities of man. The best poetical literature and dreams and the most useful inventions are all products of war.

स्थायिनी शान्तिरेव स्यात् निश्चला सरसि यथा।
सृजति विषवाष्पांस्तु रोगांश्च कठिनांस्तदा।। 23।।

स्थायी शांति, रुके हुए जल का एक तालाब है जो कि मलिन गैसों को निष्कासित करता है और भयानक बीमारियाँ उत्पन्न करता है।

Permanent peace is like a stagnant pool of water which emits foul gases and products fatal diseases.

सर्वदा शान्तिकालेऽपि युद्धार्थं प्रस्तुतो भवेत्।
उद्योगाज्जायते जातिः वर्धते धर्मतस्तथा।। 24।।

शांति की अवधि को युद्ध की तैयारी के लिए उपयोग करना चाहिए। युद्ध की तैयारी राष्ट्र को गुणी और खुशहाल बनाती है।

The duration of peace is to be used in preparation for war. The very preparation of war makes the nation virtuous and prosperous.

अवसादकरी शान्तिः भीरुता क्लैब्यदायिनी।
धीरा उद्योगिनो युद्धं कुर्वन्ति नात्र संशयः।। 25।।

शांति जनसमूह को हतोत्साहित करती है और उन्हें कायर बनाती है वस्तुतः इसमें कोई सन्देह नहीं है कि शक्तिशाली और परिश्रमी राष्ट्र युद्ध करते हैं।

Peace demoralizes communities and makes them timid. Verily, there is no doubt that bold and adventurous nations go to war.

एतद्वै मम निर्देशः सकलान् हि जनान् प्रति।
सुदृढा भक्तिरीशे स्यात्, रणेप्साऽनार्यैः सह।। 26।।

मैं अपने सभी लोगों को आदेश देता हूँ कि वे ईश्वर में अटल विश्वास रखें और बर्बर लोगों के विरोध के लिए हमेशा तैयार रहें।

Unto all my people I command to have an unshackling faith in God and to be always prepared for war against barbarians.

जानीयात् शत्रुराष्ट्रांस्तान् य एव प्रतिवेशिनः।
कुर्यात् भृशं समुद्योगं समराय तु तैः सह।। 27।।

यदि आप अपने सभी पड़ोसी देशों को अपने शत्रु की तरह से देखेंगे तो अपने सभी संसाधनों को उनके साथ युद्ध करने के लिए तैयार रखेंगे।

You shall look upon all your neighbouring countries as your enemies and muster up all your resources to wage war against barbarians.

न भवेत् विरतो युद्धात् यावन्न विजितं जगत्।
दीक्षिता वेदधर्मे हि भवेयुः सर्वमानवाः।। 28।।

आप तब तक लड़ना बंद नहीं करेंगे जब तक संसार के सभी लोगों को नहीं जीत लेते और वैदिक धर्म के दायरे में नहीं ले आते।

You shall not stop fighting till you conquer all the men over the world and bring them into the fold of the religion of the Vedas.

जयो निकटराष्ट्रस्य वेदधर्मे च दीक्षणम्।
अनार्याणां यदा स्यात्तु नृसेवा चोत्तमा तदा।। 29।।

आप मानवता के लिए सर्वोत्तम सेवा यह कर सकते हैं कि आप पड़ोसी अनार्यों को अपने अधीन करें और उन्हें वैदिक धर्म का अनुयायी बनायें।

The highest good that you can do to humanity is to subdue the neighboring barbarians and to convert them to the true faith of the Vedas.

यशसे विजिगीषा चेत् सम्मानाय तथैव च।
स्वबलं परसेनायाः विदध्यात् शक्तिमत्तरम्।। 30।।

यदि आप इच्छा करते हैं कि विदेशी राष्ट्र आपको आदर और सम्मान से देखें तो केवल एक ही तरीका है कि आप के पास एक शक्तिशाली और अविजित सेना की शक्ति हो।

If you desire that the foreign nations should look upon you with respect and awe, there is only one way and it is that you should have a strong and invincible military power.

राष्ट्रैर्वैदेशिकैः सार्धं सम्पर्को मधुरो भवेत्।
तथापि दृढता नीतेः सन्धिविग्रहके पुनः।। 31।।

विदेशी राष्ट्रों के साथ अच्छे संबंधों का रहस्य है एक शक्तिशाली सेना और बातचीत में समझौता न करने का व्यवहार।

The secret of good relations with the foreign nations is a strong army and an uncompromising attitude in negotiations.

युष्मास्वेव भवेत् प्रीतिः प्रतिष्ठा मान्यताऽपि च।
भिन्नाः राष्ट्राः बिभीयुश्च सदा सेनाबलाद्धि वः।। 32।।

विदेशी राष्ट्र आपको प्रेम करेंगे, आपकी आज्ञा का पालन करेंगे और आपका सम्मान करेंगे, केवल तभी जब वे आपके सैन्यबल से डरते हों।

The foreign nations will love you, obey you and respect you only if they are afraid of your military power.

नास्ति परं बलं सैन्यात् यच्छ्रद्धाकर्षणे क्षमम्।
शक्तिरेव हि पूज्यते राष्ट्रे वैदेशिकैः ध्रुवम्।। 33।।

विदेशी राष्ट्रों से सम्मान प्राप्त करने के लिए कोई भी शक्ति सैन्यशक्ति से बड़ी नहीं है। विदेशी राष्ट्र केवल एक चीज को जानते हैं और वह है आपका सैन्य बल।

There is no power higher than military power to win the respect of the foreign nations. The foreign nations know of only one thing and it is your force.

जातयो दुर्बला यास्तु क्षीणसेना बलान्विताः।
धरण्यामभिशप्तास्ताः भवन्त्येव न संशयः।। 34।।

एक दुर्बल राष्ट्र, जिसकी सैन्यशक्ति कमजोर है वह मानवता के लिए अभिशाप है।

A weaker nation with weaker military power is a curse to humanity.

सामरिकन्तु यैर्बलं क्षीयमाणं दिने दिने।
ते राष्ट्रनायकाः नूनमपसार्या पदात् खलु।। 35।।

वह सरकार जोकि सैन्यबल को दुर्बल बनाने की दोषी है, उसे हटा देना चाहिए।

A government which is guilty of weakening the military power of the state should be overthrown.

विजये दृढबुद्धिस्तु जातिर्युक्ता यदा रणे।
सर्वाधिकारसम्पन्ना भवेयुः सैन्यनायकाः।
आश्रयेयुः सर्वोपायान् रणे जयो यथा भवेत्।। 36।।

यदि एक राष्ट्र युद्ध करता है तो वह पूर्ण विश्वास के साथ जीतने के लिए युद्ध करेगा। सैन्य–संचालकों को शत्रु को हराने के लिए किसी भी साधन को अपनाने की पूरी शक्ति दी जाएगी।

Once a nation goes to war, she shall fight with full determination to conquer. The military leaders will be given full power to adopt any means to defeat the enemy.

अशक्तो यो भवेद्राजा समुच्छेद्यो भवेद्ध्रुवम्।
शत्रुसेना विनाशाय स्रष्टुं सेना बलं खलु।। 37।।

वह सरकार जोकि शत्रु को परास्त करने के लिए सेना को उत्साहित करने में असफल रहती है, उसे निःसंदेह हटा देना चाहिए।

A government which fails to inspire the army to exert its all to defeat the enemy should undoubtedly be overthrown.

पराजयभयात् यस्तु रणशान्तिं विघोषयेत्।
स एव तुल्यरूपेण चोच्छेद्यो नात्र संशयः।। 38।।

वह सरकार जो कि पराजय के भय को छिपाने के लिए शत्रु के साथ युद्धविराम करती है, उसे हटा देना चाहिए।

A government which declare truce with enemy to hide its fear of defeat, must be overthrown.

प्रयत्नं सर्वथा कुर्युः संग्रामनिरताः जनाः।
राष्ट्रनिवासिनः सर्वे विजयार्थं सदैव हि।। 39।।

युद्ध के दौरान सभी नागरिकों का यह कर्तव्य है वे अपने राष्ट्र को विजय प्राप्त कराने हेतु अपना अधिक से अधिक योगदान दें।

During the course of war, it is the duty of all the nationals to exert their upmost to contribute to victory.

अहिंसा प्रवदेत् यस्तु शान्तिमेव तथैव च।
यदा युद्धरता जातिः राष्ट्रद्रोहकरी हि सा।
प्राणदंडस्य योग्यः सः नात्र काचिद्विचारणा।। 40।।

युद्ध के दौरान जो व्यक्ति आहिंसा और शान्ति का संदेश देते हैं, उन्हें बड़े देशद्रोही के रूप में देखा जाना चाहिए और उन्हें मौत की सजा देनी चाहिए।

During the course of war, the persons who preach non-violence and peace shall be looked down as guilty of high treason and sentenced to death.

संग्रामावसरे ये खल्वर्थलाभेप्सवः पुनः।
मूल्यस्य वृद्धिकारिणो दंडयोग्याः भवन्ति ते।। 41।।

युद्ध के दौरान जो व्यक्ति अनावश्यक लाभ कमाएँगे या आवश्यक वस्तुओं के दामों को बढ़ाने के दोषी पाए जाएँगे, उन्हें सजा दी जाएगी।

During the course of war, the persons who will make undue profits or shall be guilty of raising the prices of essential commodities will be penalized.

इति श्रीवाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे 'रणो' नाम पंचदशोऽध्यायः।

इस प्रकार श्रीवाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद का पन्द्रहवाँ अध्याय "युद्ध" समाप्त हुआ।

Thus ends the fifteenth chapter entitled "war" of Shri Rama's Discourse written by Valmiki.

*****

षोडशोऽध्यायः
सोलहवां अध्याय
CHAPTER 16

न्याय–विन्याय–नामः
न्याय और दण्ड
JUSTICE AND PUNISHMENT

सुमन्त उवाच –

कथिताः कर्मणो भागः मन्त्रिणां भारताधिप।
कार्याण्येपि तथा तेषां, कृपया कथयाधुना।
राष्ट्रसंगठनं चैव, यच्छ्रोतुमिप्सवो वयम्।।1।।

सुमन्त ने कहा–

हे! भारत के सम्राट! आपने बहुत सज्जनता के साथ मन्त्रि परिषद् के कर्तव्यों और कार्यों को बताया है। अब हम राज्य के स्थायी ढांचे के बारे में जानना चाहेंगे।

The Sumanta said :

O King of Bharata ! you have very kindly narrated the duties and functions of the council of Ministers; we will like to know something about the permanent structure of the state.

श्रीराम उवाच–

आदर्श राष्ट्रगठनं तदा भवति भूतले।
एकीभूतैरुपादानैर्यदास्य रचना भवेत् ।।2।।
चिन्ताभावयोरैक्यं च विश्वाससाम्यमेव हि।
नूनं भविष्यतस्तत्र प्रयासस्त्वन्यथा वृथा।।3।।

श्री राम ने कहा–

इस धरा पर एक आदर्श राज्य की स्थापना समरूप तत्वों से की जा सकती है, जहाँ सभी तत्व एक जैसा सोचें, अनुभव करें और कार्य करें।

Shri Rama spoke:

On this earth an ideal State can be formed only by

homogenous elements, where all the constituents think, feel and act alike.

एका गोष्ठी धर्म एकश्चाचारेऽप्येकता भवेत्।
सदा सर्वोत्तमे राष्ट्रे भवेयुः सुधियां मतम्।।4।।

एक आदर्श राज्य में केवल एक धर्म और एक जाति होगी। सभी लोगों के लिए एक जैसा कानून और रीति–रिवाज होंगे। वस्तुतः यह विद्वान् व्यक्तियों का विचार है।

In a perfect state there shall be one religion and one community and a single set of laws and customs for everybody. This verily is the opinion of the sages.

वंशानुक्रमिका जातिस्तथा वर्णाश्च शाश्वताः।
न भेदं जनयिष्यन्ति व्यवहारे भोजने च वा।।5।।

लोग स्थायी और वंशानुगत जातियों में विभाजित नहीं होंगे। विवाह और भोजन जैसे मामलों में जाति और वर्ग की बाध्यताएँ नहीं होंगी।

The people shall not be divided into any permanent and hereditary castes. There shall be no caste and class restrictions in matters of marriage and diet.

राष्ट्रजातिभाषैकत्वमुल्लंघ्यं न भवेत् क्वचित्।
प्रान्तीयाकर्षणं भाषागतमेव न किंचन।।6।।

एक राज्य, एक जाति और एक भाषा के अतिरिक्त कोई क्षेत्रीय और भाषा संबधी संबध नहीं होगें।

There shall be no provincial and linguistic affinities apart from one state, one community and one language.

भिन्नधर्माश्रिताः ये तु विद्यन्ते यदि राष्ट्रके।
दासीभूतास्त एव स्युरन्यथा तान् विलोपयेत्।।7।।

यदि देश के किसी भाग में ऐसी जातियाँ होंगी जो किसी अलग धर्म में विश्वास रखती हैं तो उन्हें अधीन कर लिया जाएगा या पूर्ण रूप से विलीन कर दिया जाएगा।

If in any part of the country, there lives a community professing a different faith, it shall be either enslaved or exterminated.

राष्ट्र एकैव भाषा स्यात् कांक्षन्ति ये च मानवाः।
भाषाविभेदमाश्रित्य राष्ट्रस्य हि विभाजनम्।
राष्ट्रविद्रोहिणस्ते तु मृत्युदंडमवाप्नुयुः।।8।।

एक राज्य में केवल एक भाषा होगी। ऐसे व्यक्ति जो भाषा के आधार पर राज्य के विभाजन के लिए आवाज उठाएँगे उन्हें देश द्रोही माना जाएगा और ऐसे व्यक्तियों को मौत की सजा दी जाएगी।

A state shall recognize only one language. The persons who clamour for division of the state on the Linguistic basis shall be treated as guilty of high treason and sentenced to death.

आंचलिकाः विभागाः स्युः राष्ट्रस्य शासने पुनः।
पाश्चात्योत्तरश्च प्राग् दक्षिणश्च चतुष्टयम्।। 9।।
आंचलिके विभागे तु द्रष्टव्यमतियत्नतः।
भाषासंस्कृतिसाहित्येतिहासादेः पुनः पुनः।
आकर्षणो यथा न स्यादाकर्षणे महद्भयम्।। 10।।

देश को चार प्रशासकीय मंड़लों में विभाजित किया जाएगा। ये मंडल होंगे– पूर्वी मंडल, पश्चिम मंडल, उत्तरी मंडल और दक्षिणी मंडल। इस बात की बड़ी सावधानी से जांच की जाएगी कि किसी भी मंडल की पहचान किसी एक संबध जैसे भाषा संबंधी संबध, सांस्कृतिक संबध आदि से न हो क्योंकि ऐसे संबध गंभीर खतरे से ओत–प्रोत होते हैं।

The country shall be divided into four administrative zones, named as the Eastern zone ,Western zone , Northern zone and Southern Zone. Very carefully it shall be examined that any of the zones is not identified with any particular affinity, such as linguistic, cultural etc. as such a course is fraught with grave danger.

नीतिरेषा गृहीतव्या प्रयोक्तव्याऽतियत्नतः।
राष्ट्रस्याभ्यन्तरे राष्ट्रं जायेत नूनमन्यथा।। 11।।

इस सिद्धांत का निरीक्षण सख्ती से किया जाएगा और इस सिद्धांत को सख्ती से ही लागू किया जाएगा, नहीं तो हम एक राज्य के अंदर ही कई राज्यों को उत्पन्न कर लेंगे।

This principle is to be observed and applied rigourously, otherwise we will be creating states within a state.

केन्द्रीयशासनादन्यत् न स्यात् किंचन शासनम्।
क्वचिदप्यंचले नूनं न पृथक् शासनं भवेत्।। 12।।

केन्द्रीय सरकार के अतिरिक्त कोई और सरकार नहीं होगी। किसी भी मंडल का कोई अलग प्रशासन नहीं होगा। प्रत्येक मंडल के प्रशासन को केन्द्रीय सरकार चलाएगी।

There shall be no government except the one at the centre. No zone shall have any administration except the one that draws its authority from the centre.

युज्येत शासको राजा सुमन्तस्योपदेशतः।
प्रदेशे पुनरेकस्मिन् मंडले मंडलेश्वरः।। 13।।

राजा सुमन्त की सलाह से हर मंडल का एक राज्यपाल नियुक्त करेगा।

The king shall in consultation with the Sumanta appoint a Governor in each zone.

मंडलेशस्य दायित्वं शासने नियतं भवेत्।। 14।।
यद्यपि दुष्कृतं किंचित् कृतं तेन स्वशासने।
पदच्युतिर्भवेत्तस्य शास्तिश्चान्यविधाऽथवा।। 15।।

राज्यपाल की शक्ति इस सीमा तक सीमित होगी कि यदि वह कुछ गलत करता है तो उसे उसके पद से हटा दिया जाएगा या उसे दंडित किया जाएगा।

The authority of the Governor shall be limited to the extent that if he does any wrong, he may be removed from the office or may be penalized.

मंडलस्य विभागाः स्युउपमंडलानां तथा।
ग्रामाणां समष्टिरेव मन्तव्या चोपमंडलम्।। 16।।

प्रत्येक मंडल जिलों और उपजिलों में विभाजित होगा और प्रत्येक उपजिले में कई गाँव होंगे।

Each zone shall be divided into districts and sub-districts and each sub-district shall consist of several village units.

राष्ट्रशासनधारा खल्वेकैव तु भविष्यति।
केन्द्रीभूताश्चैकदेशे ह्यपरे कर्मचारिणः।
आशासकग्रामण्यश्च शासनविषये च ते।। 17।।

पूरे देश में केवल एक ही सरकार होगी जोकि केन्द्र में स्थापित होगी और राज्यपाल से लेकर ग्रामीण स्तर तक के अधिकारी भी उस सरकार के प्रतिनिधि होंगे, जोकि इस सरकार के प्रशासन को चलाएँगे।

The Government throughout the country shall be one, located at the centre and all the officers from the Governor to the petty village officials shall be its agents to carry on the administration.

गठिता स्यात् भिन्ना संस्था या न्यायरूपिणी।
नृपाधीना भवेदेषा स्वतंत्रा चापरात् खलु।। 18।।

न्यायिक प्रशासन के लिए एक अलग संगठन होगा, जो राजा के अधीन होगा और सभी प्रभावों से मुक्त होगा।

The administration of Justice shall be a separate organisation. It shall be under the King, though tree from all other influences.

प्रधानः प्राड्विवाकः स्यात् नियुक्तो भूभृता स्वयम्।
स्वमते सुप्रतिष्ठितः सः सर्वशास्त्रे विचक्षणः।। 19।।

न्यायनिष्ठः सदाचारी तेजस्वी चैव कीर्तिवान्।
कुशलश्चातिनिर्भीकः नीतिशासनकर्मषु।
धर्मशास्त्रं विधाता च पूतेन्दुराष्ट्रके च सः।। 20।।

राजा किसी ऐसे व्यक्ति को आर्यों (हिन्दुओं) के पवित्र साम्राज्य का मुख्य न्यायधीश नियुक्त करेगा जोकि सुप्रतिष्ठित, सभी शास्त्रों का ज्ञाता, अपनी निष्पक्षता के लिए प्रसिद्ध, सदाचारी और तेजस्वी हो। ऐसा व्यक्ति जो राजनैतिक, प्रशासनिक और नैतिक कानूनों जैसे गुणों में बेमिसाल होना चाहिए।

The king shall appoint a learned man, well-versed in the scriptures, well-known for his impartiality, good manners and courage and unparalleled in his mastery over the political, administrative and moral laws as Chief Justice of the Holy Empire of the Hindu.

स्वतंत्रा स्यादियं संस्था मन्त्रिवर्गप्रभावतः।
हस्तक्षेपो न तेषां स्यात् प्राड्विवाकः सुकर्मणि।। 21।।

मुख्य न्यायाधीश मन्त्रि–परिषद् से स्वतंत्र होगा। मुख्य न्यायाधीश पर मन्त्रि–परिषद् का कोई नियंत्रण नहीं होगा।

The chief Justice shall be independent of the Council of Ministers who shall have no powers over him.

प्राड्विवाक् हि नियोजयेत् धर्मवत्तृन् वहून, पुनः।
धर्माधिकरणेष्वेव विभिन्नमंडले तथा।। 22।।

मुख्य न्यायाधीश विद्वान् व्यक्तियों को जिलों और उपजिलों का संचालक नियुक्त करेगा।

The chief Justice shall appoint learned men as presiding officers of the District and Sub-Districts.

पुनर्विचारव्यवस्थाऽधिकरणे प्रादेशिके।
ततः पुनर्विचारश्चेन् मुख्याधिकरणे सदा।। 23।।
कुर्यात् विचारं सम्यैस्तु प्राड्विवक्वरः स्वयम्।
भूभृता विनियुक्तैस्तु धर्माधिकरणे तदा।। 24।।

इन न्यायालयों से की गई प्रार्थना मंडल न्यायालयों के दायरे में होगी और मंडलो न्यायलयों से सर्वोच्च न्यायलय में सुनी जाएगी। यहाँ मुख्य न्यायाधीश और राजा के द्वारा नियुक्त न्यायधीशों के द्वारा न्याय किया जाएगा।

Appeal from these Courts shall lie with the zonal courts and from the zonal courts with the supreme court where justice will be administered by the chief Justice and Judges appointed by the King.

वशिष्ठ उवाच –

शास्ति–प्रदान व्यवस्था युक्तियुक्ता कथं नृप।
उच्यतां कृपया देव! संशयच्छेद तत्पर।। 25।।

मुनि वशिष्ठ ने कहा–

हे भगवन्! किसी व्यक्ति को राज्य के द्वारा दंडित किए जाने का क्या औचित्य है?

Sage vasishta said :

O Lord ! what is the justification for punishing a man by the State ?

श्रीराम उवाच –

शास्तिरेवापराद्धानां समाजविधिलंघनात्।
अक्षिणी नाशयेत्तस्य योऽक्षिणी नाशयेत्तव।
दन्तघ्नो दन्तनाशश्च विधिरेष सनातनः।। 26।।

श्री राम ने कहा–

सामाजिक कानूनों का तोड़ा जाना आधारभूत कानूनों के अधीन ही दण्डनीय है, जैसे आँख के बदले आँख, दांत के बदले दांत।

Shri Rama spoke :

Breach of the social Laws is punishable under the fundamental law, "Eye for eye, tooth for tooth."

समाजमंगलार्थ हि नरो जातो धरातले।
यदा समाजविद्रोही तत्क्षणं स्यात् स शास्तिभाक्।। 27।।

किसी व्यक्ति का जन्म जाति के कल्याण के लिए होता है। यदि वह व्यक्ति कुछ ऐसा करता है जोकि जाति के हित में न हो वह सजा का अधिकारी होता है।

A man born to promote the welfare of the community and the moment he acts prejudicial to the interest of the community, he renders himself liable to punishment.

समाजस्य कृता हानिर्यादृशी चापराधिना।
तादृश्येव भवेत् शास्तिः तस्यार्थे विहिता खलु।। 28।।

अपराधी को उस अनुपात में सजा दी जाती है जिस अनुपात में उसने जाति के हितों को नुकसान पहुँचाया हो।

Punishment is meted out to the offender in proportion to how much he injures the interests of the community.

शास्ति चारित्र संशुद्धयै नैतद्युक्तं पुनर्वचः।
मृत्युदण्डं हि प्राप्तस्य शोधनावसरः कुतः।। 29।।

यह मानना गलत है कि दंड सुधार के लिए सिद्धांतो पर आधारित होता है। उस व्यक्ति का क्या सुधार किया जा सकता है जिसे मौत की सजा दी गई हो?

It is wrong to assume that punishment is based upon the principle of reformation. what reformation can there be in the case of one who is sentenced to death ?

दंडभीतेर्जनः पापात् विरमेदिति जनमतम्।
तुल्यरूपं मृषैतत् कथितं हि विचारकैः।। 30।।
परेषां शिक्षणायापि न शास्तिर्भवति क्वचित्।। 31।।

यह मानना गलत होगा कि अपराधी को इसलिए दंडित किया जाता है ताकि दूसरे व्यक्ति अपराध करने से डरे। किसी भी व्यक्ति को केवल साधन मात्र नहीं माना जाना चाहिए जिससे कि दूसरे व्यक्ति सबक लें।

It is equally wrong to say that a criminal is punished so that the others may deter from crime. No man shall be treated as a mere instrument so that the others may draw lesson.

आध्यात्मिकी हिंसा नीतौ शास्तिर्नूनं प्रतिष्ठिता।
समाजः प्रति हिंस्यात्तं योऽस्य स्याद्धानिकारकः।। 32।।

सजा आध्यात्मिक प्रतिशोध के सिद्धांत पर आधारित होती है। समाज उस व्यक्ति से प्रतिशोध लेता है जो इसके हितों के विरुद्ध कार्य करता है।

Punishment is based upon the principle of spiritual revenge. Society takes revenge on him who acts against its interests.

वशिष्ठ उवाच–

प्रतिकारेण लोके तु भयमेवागमिष्यति।
अतोऽत्र विषये राजन् ! संशयं च्छेत्तुमर्हसि।। 33।।

मुनि वशिष्ठ ने कहा–

प्रतिशोध का विचार हमें इस विचार की ओर ले जाता है कि राज्य की स्थापना भय के सिद्धांत पर आधारित होती है। कृपया इस विषय पर हमारा मार्गदर्शन करें।

Sage Vasishta said :

The idea of revenge leads us to the view that a state is founded upon the principle of terror. Pray, enlighten us.

श्रीराम उवाच –

राष्ट्रशासनव्यापारे भयमेव हि कारणम्।
मृषैव धारणैषा ते रघुकुलपुरोहित्।। 34।।

श्री राम ने कहा–

ओ रघुकुल के पुरोहित! यह मानना गलत है कि राज्य अपने कार्य को अपने नागरिकों को भयभीत करके करता है।

Sri Rama said :

O Priest of the Raghu dynesty ! It is wrong to assume that the state performs its functions by terrifying the citizens.

समाजमंगलार्थं हि राष्ट्रस्य परिकल्पना।
संभवेदुन्नतिर्व्यक्तेः यथैव राष्ट्रकर्मणा।। 35।।

किसी राज्य का निर्माण सामाजिक कल्याण की वृद्धि के लिए होता है। इसका निर्माण प्रत्येक व्यक्ति के अधिकतम हित के लिए किया जाता है।

A state is performed for the promotion of social welfare. It is meant for achieving the highest good of every individual.

दया सहानुभूतिश्च द्वे नीती परिकल्पिते।
राष्ट्रसंधारणार्थं वै स्वयमेव स्वयं भुवा।। 36।।
नागरिकसेवा नूनमस्य लक्ष्यं भविष्यति।। 37।।

राज्य रूपी संस्था के लिए ईश्वर ने दयालुता और सहानुभूति जैसी भावनाओं का निर्माण किया। वस्तुतः नागरिकों की सेवा ही राज्य का मुख्य ध्येय है।

It is for the institution of State, God hath created the sentiments of kindness and sympathy. Verily service of the citizens is its men characteristic.

आयुक्ता मंत्रिणश्चैव राष्ट्राधीनाः खलु स्मृताः।
तेषां हि वाक्यसारं नु नागरिकाणां हितं हि वै।। 38।।

नागरिकों का कल्याण करना ही मंत्रियों और राज्य के अधिकारियों का उद्देश्य होगा।

To do good to the nationals shall be the motto of the ministers and officials of the state.

पालनाय जनस्वार्थ ह्यशक्तो मन्यते यदा।
पदत्यागस्तदा कार्यं आयुक्ते न विवेकिना।। 39।।

जैसे ही वे ऐसा आभास करें कि वे लोगों के हित करने के अयोग्य हैं तो उन्हें अपना पद त्याग देना चाहिए।

The moment they come to realise that they are incapable of doing good to the people, they must resign.

सहानुभूतिः कीदृशी दया वापि परान् प्रति।
मंत्रिणां कर्मिणाञ्चैव ह्येतदेव परीक्षणम्।। 40।।

मंत्रियों और अधिकारियों की केवल एक ही कसौटी है कि वे दूसरों के प्रति कितनी दया व सहानुभूति रखते हैं।

There is only one test of the capability of a minister or of an official and it is how kind and sympathetic he is to other individuals.

श्रूयतामिन्दुवृद्धाः भो ! राष्ट्रमेव प्रतीष्ठनम्।
दयासहानुभूत्योर्वै न पण्यं विषयं ध्रुवम्।। 41।।
यदि च पणिबुद्धा हि चालितो भूपतिर्भवेत्।
स पापकृत्तमो लोके प्रकृतिर्पुञ्जशोषकः।। 42।।

अतः हे आर्यों (हिन्दुओं) के मुखिया! राज्य एक दया और सहानुभूति की संस्था है। यह कोई व्यापारिक संस्था नहीं है, क्योंकि व्यापारिक संस्था का सबसे बड़ा दोष यह होता है कि यह नागरिकों को दाँव पर लगा कर लाभ कमाती है।

Thus O Elder of the Hindus ! state is an institution of kindness and sympathy. It is not a business institution. Its worst guilt is profiteering at the cost of its nationals.

इन्दुभूतिकामः स्याद्धि राष्ट्रोऽस्माकं न चान्यथा।
अन्तर्बहिश्च यत्र स्यादिन्दुः पाल्यः प्रयत्नतः।। 43।।

हमारा राज्य आर्यों (हिन्दुओं) के कल्याण के लिए है। एक आर्य (हिन्दु) कहीं भी हो, चाहे वह राज्य की सीमाओं में हो या इनसे बाहर, हमारी सरकार का मूलभूत उद्देश्य होगा कि उसे सुरक्षित रखे।

Our state is to work for the good of the Hindus. Werever a Hindu may be, whether within the bounds or outside, it shall be the primary function of our Government to protect him.

इन्दुः कश्चिद्धतः स्याच्चेदथवा पीडितो भृशम्।
अन्यत्र वैदेशीयैश्च युक्ता रणविघोषणा।। 44।।

यदि हमारे देश के बाहर किसी आर्य (हिन्दु) की हत्या की जाती है या उसके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है तो उन हत्यारे विदेशियों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करना उपयुक्त होगा।

If a Hindu, outside our country is murdered or illtreated, it shall be appropriate to declare war on those murderous foreigners.

एकस्मै हीन्दवे सर्वानरीन् विघातयेद्ध्रुवम्।। 45।।

निश्चित रूप से एक आर्य (हिन्दु) के लिए सभी शत्रुओं का विनाश कर देना चाहिए।

Verily, all the foes should be destroyed for the sake of one Hindu.

विज्ञातं सकलस्यैतत् पिता पूज्यतमो मम।
तारकां राक्षसीं हिंसां जघान् हि सबान्धवान्।। 46।।
विश्वामित्रो यदा नूनं राक्षसैः पीडितोऽभवत्।
तदा तेषां तु कर्तव्यो वध एव महामुने!।। 47।।

हम सब यह जानते हैं कि पिता ने ताड़का नामक राक्षसी का उसके कुल के साथ विनाश किया। यह एक उचित कार्य था क्योंकि राक्षसों ने हमारे वैदिक दूत विश्वामित्र को पीड़ित किया था।

It is known to everybody that our father destroyed Rakshasas Queen Tarka with all her race. It was an appropriate action as the Rakshasas teased our Vedic missionary, Vishwamitra.

आपतेद्रोष ईशस्यास्मद्राष्ट्रस्यैव चोपरि।
यदैव चेन्दुरक्षार्थं शैथिल्यं च क्वचिद् भवेत्।। 48।।

हमारे राज्य पर ईश्वर क्रोधित होंगे यदि यह आर्यों (हिन्दुओं) को सुरक्षित रखने में असफल रहता है।

Wrath of God shall fall on our state if it will fail to protect the Hindu.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे

न्याय–विन्याय नामः षोडशोऽध्यायः।

इस प्रकार श्री वाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद का सोलहवां अध्याय 'न्याय और दण्ड' समाप्त हुआ।

Thus ends the sixteenth Chapter "Justice and Punishment" of Sri Rama's Discourse' written by Valmiki.

*****

सप्तदशोऽध्यायः
सतरहवां अध्याय
CHAPTER 17

अराजन्यराष्ट्रो नामः
राजारहित राज्य
KINGLESS STATE

सुमन्त उवाच –

शासनं च विचारश्च मूलं च वर्णितं तयोः।
नृपतिर्यत्र नास्त्येव तत्र को राष्ट्रचालकः।
यथा मालविकानां हि तथा च बहुभूमिषु।।1।।

सुमन्त ने कहा–

हे भगवन्! आपने राजा को प्रशासन और न्याय का साधन और केन्द्र बताया है, परंतु मालविका जैसे राजारहित राज्य में राजा का प्रतिनिधि कौन होगा?

The Sumanta said : You have, O Lord ! described the King as the source and centre of administration and Justice, but what substitute is there for the King in a kingless state such as that of the Malvikas ?

श्रीराम उवाच –

आधारो राष्ट्रशक्तिर्हि समाजः कल्पितो बुधैः।
सा शक्तिरर्पिता यस्मिन् स एव नृपतिर्भवेत्।।2।।

श्रीराम ने कहा–

विद्वानों का विचार है कि वास्तविक प्रभुसत्ता समाज में निहित होती है और समाज अपनी शक्तियों को राजा को सौंपता है।

Shri Rama said :

The scholars lay down that the real sovereignty lies in the community which delegates its powers to the King.

समाजस्यात्मनो रूपात् समाजात्मा ततो नृपः।
समाजे यत्तु कर्तृत्वं तद्धारयति भूपतिः।।3।।

राजा राज्य की आत्मा होता है क्योंकि समाज अपनी आत्मा को राजा में परिवर्तित करता है और राजा सत्ता का निर्माण करता है जो कि अन्तिम रूप से समाज में ही निहित होती है।

The king is the soul of the state, because community transposes its soul on him and he wields the authority which ultimately rests in the community.

राजवंशो विनष्टः स्यात् यद्यपि धरणीपतिः।
समाजहितसंरोधि कर्मणि स्यात् सुतत्परः।।4।।

यदि राजा सामाजिक कल्याण के विरुद्ध कार्य करता है तो राजवंश ही समाप्त हो जाता है।

The royal dynasty is destroyed if the King acts against the welfare of the community.

कर्तृत्वं पुनरायाति समाजे स्वत एव हि।
पुनर्ददाति सा चैनं संघाय वा जनाय वा।।5।।

ऐसी स्थिति में सत्ता फिर से समाज के पास आ जाती है। समाज अपनी सत्ता को या तो किसी दूसरे राजा को या फिर किसी जनसमुदाय को सौंप देता है।

Authority, in that case, relapses to the community and it vests its authority either in another King or in a group of persons.

धर्मवृत्तिविद्यासंस्था प्रतिभूतिः पुनःखलु।
संघः स्यात् कल्पितो ह्येष राष्ट्रस्य परिचालके।।6।।

व्यक्तियों के ऐसे समूह में विभिन्न व्यापारिक, शैक्षणिक और धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि होंगे।

Such a group of persons shall consist of representatives of various occupations and institutions of learning and religion.

आस्थापितस्य संघस्य एतद्वै तूपयुज्यते।
राष्ट्रकर्तृत्वचालनं समाजप्रतिमो हि सः।।7।।

यदि ये प्रतिनिधि पूर्ण रूप से सम्पूर्ण समाज की इच्छा का प्रतिनिधित्व करते हैं तो सत्ता की स्थापना के लिए उन पर विश्वास करना उचित होगा।

As these representatives, as a whole, shall reflect the will of the community they can rightly be trusted to wield the sovereignty vested in them

राष्ट्रंचाराजकं यत्र तत्र ह्यांचालिका नराः।
ते प्रतिनिधयो भूत्वा चालयेयुश्च राष्ट्रकम्।8।।

कुछ राजारहित राज्यों में सरकार के प्रतिनिधि प्रादेशिक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

In certain Kingless states, the delegates constituting the Government represent certain territorial areas.

गतिर्हानिकरी चैषा मता सुधियां खलु।।9।।

यह एक खतरनाक प्रणाली है, इसलिए विद्वान् व्यक्ति इस प्रणाली का खंडन करते हैं।

It is a harmful system, and the sages repudiate it .

देशभक्ताश्च प्रायेण प्रदेशमतयः खलु।
प्रदेशाधिवासिनी हि विद्रुह्यन्ति क्वचित् क्वचित्।
राष्ट्रः विरोधिनो भूत्वा भृशं स्वातन्त्र्यकामिनः।।10।।

ये प्रादेशिक प्रतिनिधि अपने भौगोलिक क्षेत्रों के प्रति वफादार होने के कारण राजा के विरुद्ध विद्रोह कर सकते हैं और अपने क्षेत्र के लिए अलग से स्वतंत्रता की मांग कर सकते हैं।

These Desh-Bhaktas (Territorialists) assigning their loyalty to particular geographical areas, are liable to rebel against the state add strive for independence of their local territories.

अतो न राष्ट्रियः कश्चित् समाजो गठितो भवेत्।
वासहेतोर्हि कुत्रापि प्रदेशविशेषे खलु।।11।।

किसी राजनैतिक समुदाय की स्थापना इस आधार पर नहीं की जा सकती कि उस समुदाय के लोग किसी खास क्षेत्र में निवास करते हैं।

A political community is constituted by the people by virtue of their residence in a particular territory.

राजनैतिकगोष्ठी तु धर्मभावैः विसृज्यते।
मन्त्र एव भवेदस्या राष्ट्रधर्माविभिन्नता।।12।।

राजनैतिक समुदाय की स्थापना धार्मिक सम्बन्धों के आधार पर होती है। इस समुदाय का उद्देश्य होता है एक धर्म, एक समाज और एक राज्य।

A political community is constituted by religious ties. Its motto is one religion, one community and one state.

न धर्मो व्यक्तगः कोऽपि स्यान्नेष पुनरेव हि।
विभुना सह सम्बन्धः प्रत्येकस्य जनस्य तु।।13।।

धर्म किसी व्यक्ति का निजी मामला नहीं है और न ही धर्म किसी व्यक्ति के ईश्वर के साथ निजी सम्बन्धों की संस्था है।

Religion is not a private affair of an individual, nor is it an institution of private relations of an individual with God.

ऐक्यभावो हि जातित्ये धर्मबुद्धया प्रजायते।
गोष्ठीगठनमेतेन गोष्ठ्या राष्ट्रस्य चोद्भवः।।14।।

धर्म का उद्देश्य व्यक्तियों के एक समूह में समरूपता की भावना उत्पन्न करना होता है ताकि एक समाज का निर्माण हो और अन्तिम रूप से एक राज्य का निर्माण हो।

The function of religion is to generate the sentiment of homogenity in a group of people whereby they constitute a society which is ultimately converted into a state.

अराजन्ये पुनः राष्ट्रे धर्मोऽधिकतरो गुरुः।
जनानां बन्धुदाढ्र्यार्थं तस्य प्रयोजनं ध्रुवम्।।15।।

गणतन्त्रीय राज्य में यह अधिक आवश्यक है कि समाज धार्मिक सम्बन्धों में शक्तिशाली रूप से एक हो।

In a republican state It is more essential that a community should be united strongly in the ties of religion.

गणतांत्रिकराष्ट्रेषु नायकाः भिन्नबुद्धयः।
राष्ट्रकर्तृत्वग्रहणे हि यत्नस्तेषां महान् भवेत्।।16।।

वास्तव में गणतन्त्र संघर्षशील नेताओं के मस्तिष्क की एक उपज है जो कि राज्य की सत्ता को अपने पक्ष में करने के लिए षड्यन्त्र करते रहते हैं।

Republic is veritably a scene of conflicting leaders who often conspire to appropriate the authority of the state to themselves.

एतादृशे हि संघर्षे भावैक्मयस्य प्रयोजनम्।
अधिकतरमेवास्ति स्पष्टमेतन्महामते!।।17।।

संघर्ष के ऐसे दृश्यों के बीच यह आवश्यक है कि एकत्रित करने वाले तत्त्व अलग करने वाले तत्त्वों की तुलना में अधिक शक्तिशाली हों।

Amidst such scenes of conflict, it is essential that the uniting elements of society should be stronger than the diversities.

प्रबले भवसंघर्षे स्वार्थाऽन्धो नायकः क्वचित्।
जनसंघं च विभ्राम्य सृजेद्वा राष्ट्रविप्लवम्।।18।।

यदि अलग करने वाले तत्त्व अधिक होंगे तो यह संभव है कि कुछ स्वार्थी

नेता समाज के किसी वर्ग को राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए गुमराह कर सकें।

If sepratist will increase in numbers, it is possible that some selfish leaders may mislead a section of people to rebel against the state.

राजयुक्ते तु राष्ट्रे वै विभिन्ना च दशा भवेत्।
दारुणेन हि दंडेन शिष्यात् विद्रोहिणां नृप!।। 19।।

राजा से मुक्त राज्य की स्थिति अलग होती क्योंकि एक राजा निरंकुश रूप से आज्ञा न मानने वाले तत्त्वों को सख्ती से सजा दे सकता है।

Under a monarch, the position is different. A king can act autocratically and punish the recalcitrant elements with iron rod.

गणतंत्रे तु दंडस्य प्रयोगः कठिनो भवेत्।
अतितीक्ष्णश्च दंडो हि क्वचिद्वा संभवो भवेत्।। 20।।

जबकि गणतन्त्र में सख्ती करना यदि असम्भव नहीं, तो कठिन तो अवश्य है।

Whereas, in a republic, the use of iron is often too difficult, if not impossible.

अतः पाखण्डिनः सर्वे बहिष्कार्या हि राष्ट्रतः।।
गणतांत्रिकता राष्ट्रे यदा स्यात् सुप्रतिष्ठिता।। 21।।

अतः ऐसी सलाह दी जाती है कि गणतन्त्रीय राज्य में जो लोग राज्य धर्म को स्वीकार नहीं करते, उन्हें नष्ट कर देना चाहिए।

It is therefore, advisable that in a republican state persons who do not profess State religion should be exterminated.

निष्ठिता परधर्मेषु ये स्युः राष्ट्रनिवासिनः।
नाधिकारसमस्तेषां राष्ट्रधर्माश्रितैः सह।। 22।।

ऐसे लोग जो अलग धर्म को स्वीकार करते हैं उन्हें वे अधिकार प्राप्त नहीं होने चाहिए जो कि उन लोगों को प्राप्त हैं जो कि राज्य धर्म के समर्थक हैं।

The persons professing different religions shall not be permitted to enjoy the same rights as the votaries of the state religion.

धर्म राष्ट्रस्य ह्येकः स्यात् न कदाप्यधिको भवेत्। 23।।

राज्य धर्म केवल एक हो सकता है न कि एक से अधिक।

The state religion can only be one and not more than one.

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे
अराजन्यराष्ट्रो नामः सप्तदशोऽध्यायः।

इस प्रकार वाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद का सत्रहवां अध्याय 'राजारहित राज्य' समाप्त हुआ।

Thus ends the seventeenth chapter entitled "Kingless State" of Sri Rama's discourse, written by Valmiki.

*****

अष्टादशोऽध्यायः
अठाहरवां अध्याय
CHAPTER -18

षट्पथः
छः रास्ते
THE SIXFOLD PATH

वशिष्ठ उवाच –

गोष्ठीमंगलसंसिद्धिर्मूलं लक्ष्यं हि कर्मणाम्।
कथितं भवता देव ! विस्तरेण कृपापर!।।1।।

मुनि वशिष्ठ ने कहा–

आपने बताया है कि समाज–कल्याण ही हमारे सभी कार्यों का उद्देश्य है।

Sage Vasishta said: O Lord ! you have pointed out that promotion of the communal welfare is the supreme end of all our actions.

कर्मणः साधुता नो वा विचार्य्यां गोष्ठिबुद्धितः।
यादृशी शुभकरी गोष्ठी साधुता तादृशी भवेत्।।2।।

यह कार्य अच्छा है या नहीं? इसका आकलन इस आधार पर किया जाता है कि वह कार्य समाज के कल्याण के लिए कितना उपयोगी है?

Whether an action is good or otherwise, can be judged by how far it approximates to the attainment of the communal welfare.

स्माजाद्बहिरासीरन् ये जनास्तान् कथं चरेत्।।3।।

परन्तु क्या हम किसी मानव या मानव समुदाय को कोई ऐसा उत्तरदायित्व देते हैं जो समाज से बाहर हो?

But do we owe any obligation to person or group of persons, outside our community?

श्रीराम उवाच –

समाजे जन्म वै नृणां नास्ति त्वं हि ततो बहिः।
जीवने यानि प्राप्तानि तानि समाजतो ध्रुवम्।।4।।

भोजनं शिक्षणं सर्वं समाजे लभ्यते नरैः।।5।।

श्रीराम ने कहा–

मनुष्य का जन्म समाज के सदस्य के रूप में हुआ है। इसका समाज के बाहर कोई अस्तित्व नहीं है। किसी मनुष्य के पास जो कुछ भी है, जिसमें उसका भोजन और शिक्षा भी शामिल है, समाज का ही है।

Shri Rama spoke :

Man is born as a member of the community. He has no existence apart from community. Whatever a man possesses in life, including his feeding and education, owes to his community.

अतो नरस्य कर्तव्यं समाजं प्रति वर्तते।
समाजमंगलं कार्यं सदैव तत्स्थितैर्नरैः।।6।।

अतः मनुष्य का समाज के प्रति दायित्व है और इस दायित्व को निभाने के लिए उसे समाजकल्याण में वृद्धि करनी चाहिए।

Thus a man owes an obligation to community and in the discharge of this obligation, he is required to promote the welfare of the community.

नूनं प्रश्नस्ततः कश्चित् विज्ञास्येत हि मानवैः।
कर्तव्यमस्ति नो वाऽस्ति समाजान्तरमानवे।।7।।

इसलिए उसका ऐसे तत्त्वों के प्रति कोई कर्तव्य नहीं है जो कि उसके समाज की सीमाओं के बाहर हों।

He, therefore, owe no obligation to such elements that are outside the bounds of his community.

कर्तव्यस्य तदा प्रश्नः संभवेत् यत्र संघकः।
यत्र हि विद्यते संघस्तत्र कर्तव्यता ध्रुवम्।।8।।

इसके अतिरिक्त कर्त्तव्य का प्रश्न तो संगठन की स्थिति में उठता है। जहाँ संगठन हो वहाँ कर्त्तव्य होता है।

Moreover, the question of duties arises only in the case of an organization. Wherever there is an organization, there is an obligation.

अन्तः सामाजिकी संस्था नास्त्येव धरणीतले।
स्वविरोधिवचश्चैतदन्तः सामाजिकं हि यत्।।9।।

संसार में कोई आंतरिक सामाजिक संस्था नहीं है। आन्तरिक सामाजिक विचार ही स्वविरोधी है।

There is no inter- communal community in the world. The very idea of inter- communal community is contradictory.

अन्तः सामाजिको धर्मस्ततो नास्ति नरे क्वचित्।
केवलं धर्म एवैको गोष्ठ्या परिसमाप्यते।।10।।

अतः कोई आन्तरिक सामाजिक नैतिकता नहीं है। नैतिकता केवल समाज में पाई जाती है और समाज के बाहर इसका प्रश्न ही नहीं उठता।

Thus, there is no inter-communal morality. Morality exists only in a community and there is no question of it beyond its pale.

समाजहितसिद्धौ च तथा गौरववर्धने।
संग्रामः सर्वदा नूनं कर्तव्यो गोष्ठीमानवैः।।11।।

अतः एक समाज को अपने गौरव और विस्तार के लिए किसी दूसरे समाज के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करनी उचित है।

A community is, therefore, justified in declaring war on any other community for its glory and expansion.

परगोष्ठीविनाशाय सैनिकः समरं व्रजेत्।
आहर्तुं गौरवं स्वस्य कर्तव्यपालनाय च।।12।।

एक सिपाही दूसरे समाज को नष्ट करने के लिए युद्ध करता है ताकि वह अपने समाज के प्रति अपने दायित्व को पूरा कर सके।

A soldier goes to war to exterminate other communities so that he may discharge the obligation that he owes to his community.

वशिष्ठ उवाच –

स्वरूपं ब्रूहि धर्मस्य धर्माः कतिविधाश्च ते।।13।।

मुनि वशिष्ठ ने कहा–

हे भगवन्! कृपया हमें बताएँ कि गुण क्या है और ये गुण कौन–कौन से हैं?

Sage Vasishta said :

Pray, tell us O Lord ! what virtue is and how many cardinal virtues are?

श्रीराम उवाच –

कर्मतत्परता धर्म इति धर्मस्य लक्षणम्।
निष्ठाशासा हंस चैव दया विनय एव च।
सेवा चैव भवन्त्येते धर्माश्च मौलिकाः स्मृताः।।14।।

श्रीराम ने उत्तर दिया–

क्रियाशीलता गुण है और यह गुण की मुख्य विशेषता है। ये गुण हैं– निष्ठा, आशा, साहस, दया, विनय, विनम्रता और सेवा।

Virtue is activity; and this is the attribute of virtue. Cardinal virtues are faith, hope, courage, Benovolence, Politeness and Service.

अव्यभिचारिणी भक्तिरीशे वेदे तथैव च।
आत्मनि च समाजे च विज्ञेयो धर्म उत्तमः।।15।।

ईश्वर और वेदों में अटल विश्वास रखना सर्वोत्तम गुण है, इसी प्रकार अपने ऊपर और समाज के ऊपर विश्वास रखना सर्वोत्तम गुण है।

To have an unflinching faith in God, in the Vedas and the community is a virtue of the highest degree.

ध्यायन् विश्वहितं नित्यं मांगल्याम्बुद्धिमुत्तमम्।
मंगलमयमीशानं येनैतद्रचितं जगत्।।16।।

जैसा कि यह उत्तम भगवान् का उत्तम संसार है। संसार के हित की निरन्तर कामना करना उत्तम गुण है जिस प्रकार से मंगल चाहने वाले ईश्वर ने इस संसार को बनाया।

Next is hope for the good, as it is a good world of good God.

विपदि साहसिको यस्तु धारयन् मानवं गुणम्।
स धीरो हि क्षमश्चास्ति कष्टानां नाशनाय वै।
आर्तानां दुःखनाशायोद्धराय च मज्जताम्।।17।।

विपत्ति के समय साहस मानव का गुण है। वह एक साहसी व्यक्ति होता है जो कि डूबते हुए, मनुष्य, भयभीत मनुष्य और क्रूरता के शिकार मनुष्य को बचा लेता है।

Courage in face of danger is a manly virtue . it is a man of courage who can save the drowning man, the bullied man and the victim of cruelty.

सर्वस्वं संत्यजेद्वीरः रक्षार्थं प्रतिवेशिनाम्।।18।।
युध्येत् संयुगे वीरस्त्यजेत् प्राणान् स्वकान् खलु।
रक्षार्थं समधर्माणं स्वभाव एष तस्य हि।।19।।

एक साहसी व्यक्ति अपने पड़ोसी को हानि से बचाने के लिए अपना सब कुछ दाँव पर लगा देता है।

A man of courage will risk his all to protect his neighbor from

harm. He will prefer to fight and be killed rather that allow his coreligionists to be harmed.

दयालुः स्यात् सदा व्यग्र उद्धर्तुमार्तबान्धवम्।
यद्यप्यस्यां प्रचेष्टायां क्लेशो बहुविधो भवेत्।। 20।।

एक दयालु व्यक्ति विपत्ति के समय अपने पड़ोसी की सुरक्षा के लिए आता है। चाहे इस दौरान वह स्वयं मुसीबतों और समस्याओं से क्यों न घिर जाए।

A benevolent person shall come to rescue of the suffering neighbour, though in the process he may have himself to face troubles and tribulations.

शिष्टयाः स्युरिन्दवः सर्वे सर्वदैव परस्परम्।
रूढता पापमेव स्यात् पुण्यं च शिष्टता भृशम्।। 21।।

यह प्रत्येक आर्य (हिन्दु) का कर्त्तव्य है कि वे एक–दूसरे के प्रति शिष्ट हों। रूढ़िवादिता एक बुराई है जबकि शिष्टता एक गुण है।

It is the duty of every Hindu to be polite to each other. Rudeness is a vice while politeness is a virtue.

लक्ष्यमेव भवेत्तस्य चेन्दूनां सेवनं सदा।
अवसरो हि यदा प्राप्तस्तेषां सेवापरो भवेत्।। 22।।

अपने जीवन में यह लक्ष्य होना चाहिए कि आप आर्यों (हिन्दुओं) की सेवा करने के प्रत्येक अवसर का लाभ उठायेंगे।

Let it be a motto of your life to avail of every opportunity to serve the Hindus.

शौर्यमाशां भजेनिष्ठां शिष्टः दानपरो भवेत्।
सामाजिके सेवापर एतद्वेदानुशासनम्।। 23।।

अतः वेद घोषणा करते हैं– "निष्ठा, आशा और साहस रखें, दयालु और विनम्र बनें तथा अपने समाज की सेवा करें"।

Thus the Vedas declare: "Have faith, hope and courage, be benevolent and polite and render service to your community."

अनुसरेद् यः पन्थानं षड्विधं च जनो भुवि।
ईश्वरस्य कृपापात्रं ह्यामुत्र च भवेद्धि सः।। 24।।

यह छः रास्ते हैं जिनका अनुसरण करने से आपको ईश्वर की कृपा मिलेगी, इस लोक में भी और परलोक में भी।

This is the six fold path, the pursuit of which will gain you the blessings of God, both in the present world and the next.

षड्विधस्य च पन्थानो ये सदैवानुसारिणः।
पुण्यात्मानो हिते सन्ति चात्रू वै धरणीतले।। 25।।

वह व्यक्ति गुणवान होता है जो हमेशा इन छः रास्तों का अनुसरण करता है।

Virtuous is he who is always in the pursuit of the sixfold path.

लिखेद्वा न लिखेत् चित्रं चित्रकारो भवेत् सदा।
पुण्यात्मा नास्ति पुण्यात्मा यदा स नास्ति पुण्यकृत्।। 26।।

एक चित्रकार हमेशा चित्रकार ही रहता है चाहे वह चित्रकारी करे या न करे। किन्तु गुणवान व्यक्ति के साथ ऐसा नहीं होता। गुणवान व्यक्ति को अपना कर्त्तव्य निरन्तर करते रहना पड़ता है।

A painter will be a painter whether he paints or not. So is not the case with the virtuous. He ought to be acting continuously.

विद्यते साधुता यस्मिन् निष्ठा यस्यास्ति वृतिषु।
षड्धा मार्गानुसारी तु सत्यरूपेण ह्यस्ति सः।। 27।।

'षट्पथ' का अनुसरण करने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि आप अपने व्यवसाय को ईमानदारी और सच्चाई से करते जाएँ।

The best way to perform the sixfold path is to perform the duties of your profession honestly and sincerely.

यस्य या जीवने वृत्तिर्मन्त्रिणः श्रमिकस्य च।
सेनाधिनायकस्यापि तां कुर्यात् स त्वतन्द्रितः।। 28।।

आपके जीवन में जो भी व्यवसाय हो, चाहे वह एक मन्त्री का हो या सेनाधिकारी का अथवा श्रमिक का ही क्यों न हो? उसे आप खुले दिल से करना सीखें।

Whatever be your station in life, whether a simple labourer, a military general or a minister, perform your duties ungrudgingly.

दैनन्दिनं सदा कर्म कुर्यात् साधु विचारयन्।
इतोऽन्यत् परिचिन्तां तु न स्थापयेत् क्वचित्।। 29।।

गुणवान व्यक्ति अपने कर्तव्य को हमेशा ईमानदारी से करेगा और अन्य किसी भी विचार को अपने मन में नहीं आने देगा।

The virtuous shall do their work honestly and shall not allow any other consideration to interfere in it.

वृत्तिसम्पादने द्वैधं विरक्तिश्च न वै भवेत्।
एषा पापमयी बुद्धिः परित्याज्या सदा बुधैः।। 30।।

कार्य के दौरान किसी भी प्रकार का संकोच या शिकायत करना एक बुराई है और गुणवान व्यक्ति को इसे त्याग देना चाहिए।

Any hesitation of murmuring in the performance of work is a vice and the virtuous should avoid it

इति वाल्मीकिविरचिते श्रीरामसंवादे
षट्पथो नामाष्टादशोऽध्यायः।

इस प्रकार वाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद में 'षट्पथ' नामक अठाहरवाँ अध्याय समाप्त हुआ।

Thus ends the eighteenth chapter entitled "Sixfold Path" of Shri Rama's Discourse, written by Valmiki.

*****

एकोनविंशोऽध्यायः
उन्नीसवां अध्याय
CHAPTER 19

भविष्यवाणी
PROPHECY

सुमन्त उवाच –

त्वया नः कथितं सर्वमिक्ष्वाकु कुलवर्धन!।
वेदानुशासनं देव! सर्वलोकसुपूतिजम्।।1।।

सुमन्त ने कहा–

हे इक्ष्वाकु कुल के संवर्धक! आपने हमें सभी लोकों में पूजे जाने वाले वेदों के नियम को समझा दिया है।

The Sumanta said :

O Inheritor of the throne of Ikshvaku ! you have taught us the law of the venerable Vedas.

धन्याः स्युरिन्दुपुत्रास्ते येषां त्वमसि शिक्षकः।।2।।

आर्यों (हिन्दुओं) की जाति धन्य है कि आप उनके शिक्षक हैं।

Blessed is the race of the Hindus that your sacred Majesty is their teacher.

स्वकक्षे भास्करो यावत् दीप्यन्ते तारकास्तथा।
उपदेशास्तवेन्दूनां भवेत् पथ–प्रदर्शकः।।3।।

जब तक सूर्य अपने कक्ष में चमकता है तथा तारे आकाश में चमकते हैं, तब तक आपकी शिक्षा आर्यों (हिन्दुओं) का पथप्रदर्शन करती रहेगी।

So long as the sun shines in its orbit and the stars twinkle in the sky, your sacred teachings shall be the guide of the Hindus.

तेषां तु संभवत्येतत् जीवनस्य महाव्रतम्।
सर्वतो जगतो देव ! प्रचाराय भवत्कथा।।4।।
विश्वव्याप्तं हि साम्राज्यमेषां सर्वजनानधि।
न किंचित् स्थानमेव स्यात् तेषां यत्र न स्वामिता।।5।।

हे भगवन्! आर्य (हिन्दु) आपके उपदेशों का प्रचार करना अपने जीवन का

लक्ष्य बनायेंगे और आपके उपदेशों का शासन पूर्ण मनुष्यत्व पर स्थापित करेंगे। संसार का कोई ऐसा भाग नहीं होगा जहाँ आपके उपदेशों का साम्राज्य नहीं होगा।

O Lord ! the Hindus shall make it a mission of their life to propagate your teachings, and to establish their Imperial rule over the entire humanity. There shall not be a piece of land that shall not be ruled by them.

श्रीराम उवाच–

नैतत् सुकरमेवं स्यात् यथा त्वयानुमीयते।
अनिश्चितं भविष्यद्धि ज्ञातव्यं सूरिभिः सदा।।6।।

श्रीराम ने कहा–

यह विषय उतना आसान नहीं है जितना कि आप सोंचते हैं। बुद्धिमान लोग जानते हैं कि भविष्य तो सम्भावनाओं का विषय है।

Sri Rama spoke :

Matter is not so easy as you suppose. Sages know that future is a matter of possibilities.

दुर्लिंगं हि प्रपश्यामि वृद्धा भो यद्भविष्यति।
क्रमशो वर्धते द्वन्द्वं क्षात्रब्राह्मणयोर्भृशम्।।7।।

हे ज्येष्ठ पुरुषों! मुझे अशुभ संकेत नजर आ रहे हैं क्योंकि क्षत्रिय और ब्राह्मणों के बीच संघर्ष बढ़ रहा है।

O Elders ! I am seeing bad signs. There is growing conflict between the Kshatriyas and the Brahmanas.

ब्राह्मणैरेव चामात्यैर्बहवीषु राजधानीषु।
पुत्तलीसदृशाः भूपा भवन्ति चालिता भुवि।।8।।

क्षत्रिय शासकों को ब्राह्मण मंत्रियों के द्वारा बहुत सी राजधानियों में केवल कठपुतलियाँ बना दिया गया है।

The Kshatriya rulers have in so many capitals been made mere puppets by their Brahman Ministers.

यदि मंत्रिण एव स्युः स्वाधीनाः राष्ट्रचालकाः।
न किंचिद्धि नृपः कुर्यात्ततो हानिर्न च क्वचित्।।9।।

केवल मंत्रियों के पास ही राष्ट्र संचालन की शक्ति होती है और कोई राजा न होता तो कोई हानि नहीं होती।

Had it been a simple position of ministers, wielding power in

place of Kings, there would have been no harm.

संघर्षो ब्रह्मक्षत्रयोर्न पुना राजमन्त्रिणोः।
पुरुषानुक्रमादेतत्ततो जटिलता भृशम्।।10।।

यह संघर्ष केवल राजा और मंत्रियों के बीच नहीं है। यह प्रश्न तो ब्राह्मणों और क्षत्रियों का है। एक आनुवंशिक जाति दूसरी आनुवंशिक जाति से लड़ रही है।

It is not a conflict between a King and his Ministers. It is a question of Brahmanas and Kshatriyas, a hereditary caste fighting against another hereditary caste.

ब्राह्मणक्षत्रयोर्द्वन्द्वं भवेद्धानिकरं ध्रुवम्।
अनिष्टाय समाजस्य प्रत्येकमानवस्य च।।11।।

ब्रह्मणों और क्षत्रियों का यह संघर्ष हमारे समाज के लिए अवश्य ही दुष्परिणाम उत्पन्न करेगा।

This conflict between Brahmanas and Kshatriyas is bound to produce bad results for our community.

द्वन्द्वमेतत् समाश्रित्य ध्रुव्णा धर्मप्रचारणा।
रचितो नवधर्मो हि वेदमार्गविरोधि यः।।12।।
अतस्तं सुदुराचारं दण्डयं दंडितवानहम्।।13।।

यह इस संघर्ष का परिणाम था कि धुर्वाण ने एक नये धर्म का प्रचार किया जो वेद मार्ग का विरोधी था। यह बिल्कुल सत्य है कि हमने धुर्वाण को घोर दण्ड दिया क्योंकि यह उसका अधिकारी था।

It was the outcome of this conflict that Dhurvana preached a new religion opposed to the Vedas. Rightly enough , we gave Dhurvana the dire punishment that he deserved.

किन्त्वेतेन हि दंडेन चान्योन्यद्वेषनाशनम्।
हिंसायाश्चावसानं च न भवेत् द्विजक्षत्रयोः।।14।।

परंतु इस दण्ड ने ब्राह्मणों और क्षत्रियों के बीच संघर्ष के वास्तविक कारणों को समाप्त नहीं किया है।

But this punishment has not destroyed the real causes of the conflict between Brahmanas and Kshtriyas.

यदि चास्यामवस्थायां चिरं तिष्ठेत् विषांकुरः।
ध्रुव्णा भवेत् समुत्पत्तिः शतशोऽथ सहस्रशः।।15।।

इसलिए मुझे डर है कि हजारों धुर्वाण और पैदा हो जाएंगे यदि इस संघर्ष

को तुरंत समाप्त न किया गया तो।

Therefore, I fear, there may be hundreds of dhurvanas, if the matters are not checked at once.

व्यर्थमनोरथा ह्येते भीरवो दुर्बलेन्द्रियाः।
प्रचरन्ति नृपाः धर्मं दौर्बल्यक्लैब्यमिश्रितम्।। 16।।

ये दिशाविहीन क्षत्रिय शासक जो कि भयभीत और दुर्बल होंगे, वे दुर्बलता और नपुंसकता मिश्रित धर्म का उपदेश देंगे।

These disappointed Kshatriyas rulers, imbecile and coward, are bound to preach a religion of imbecility and cowardice.

विभिन्नेषु च धर्मेषु सत्यमेकं प्रकाशितम्।
इत्थं तेषां प्रचारः स्यात् स्वच्छन्दा स्यात् यथा गतिः।। 17।।

आपने विषय को सरलता से सुलझाने के लिए, वे उपदेश देंगे कि सभी धर्म समान सिद्धान्त सिखाते हैं।

In order to cut the way smoothly, they shall preach that all religions teach the same doctrines.

न समाजे न वा राष्ट्रे धर्मप्रयोजनं क्वचित्।
व्यक्तेः सम्बन्ध ईशेन चेति धर्मस्य लक्षणम्।। 18।।

वे उपदेश देंगे कि धर्म का एक व्यक्ति के सामाजिक और राजनैतिक सम्बन्धों से कोई लेना–देना नहीं है और यह तो केवल एक व्यक्ति का अपने ईश्वर के साथ निजी संबंध है।

They will preach that religion has nothing to do with the social and political affairs of man; and that religion is a mere private affair of an individual with God.

मायामयमिदं विश्वमिति तेषां विघोषणा।
साधुता वास्तवी वै न नृणां काल्पनिकी खलु न हि।। 19 ।।

वे घोषणा करेंगे कि यह संसार मिथ्या है और नैतिकता मानव की कल्पना का एक भाग है।

They will declare that the Universe is an illusion and morality a figment of human imagination.

नीतिधर्मसदाचारं परित्यज्य समाजके।
कार्ये निष्कामता व्यक्तेरादर्शं कल्पयिष्यति।। 20।।

वे नैतिकता और मानवीय मूल्यों के सभी आदर्शों को त्यागकर उनके स्थान पर "कामना रहित व्यक्तिगत कर्म" के सिद्धांत को स्थापित करेंगे।

They will reject all social standards of morality and human behaviour and will set up, in their place, the false doctrine of "desireless individual action."

युक्तिर्व्यक्तेः परो धर्मः गोष्ठीधर्मो न किंचन।
गोष्ठीधर्मं विहाय स्युरात्मकेन्द्रपरः सदा।। 21।।

वे सामाजिक नैतिकता का तिरस्कार करेंगे और इसके स्थान पर इस सिद्धांत को स्थापित करेंगे कि सभी प्रयत्न आत्मकेन्द्रित ही होते हैं।

They will condemn communal morality and substitute it with the doctrine that all efforts are to be directed towards one's own salvation.

गोष्ठीप्रीतिर्निषिद्धा स्यात् केवलं स्वार्थनिष्ठता।
उत्तमाध्यात्मिकी बुद्धिरिति तैश्च प्रशास्यते।। 22।।

सामाजिक प्रेम का निषेध किया जायेगा और स्वार्थीपन को उत्तम आध्यात्मिक भावना के रूप में प्रस्तुत किया जायेगा।

Love of community will be tabooed while selfishness will be called a spiritual sentiment.

प्रचार ईदृशोऽवन्यां सृजेत् खलु विपर्ययम्।
घोरं समाजमध्ये च गोष्ठीप्रीतिविनाशकम्।
भविष्यद्धि समाजस्य भवेत् संशयसंकुलम्।। 23।।

ऐसे आदेश हमारी सामाजिक भावनाओं पर बहुत खतरनाक प्रभाव डालेंगे और हमारे समाज का भविष्य सन्देहास्पद हो जायेगा।

Such teachings are bound to produce very adverse effects on our communal feelings and the future of our community will be rendered doubtful.

जातिविरोधोऽस्माकं सृजेत प्रत्ययमीदृशम।
कश्चिन्नृपो दृढो धर्मं घोषयेद्वेदरोधिनम्।। 24।।

हमारा वर्तमान 'जाति–द्वन्द्व' मुझे यह समझने के लिए मजबूर करता है कि एक शक्तिशाली मस्तिष्क वाले राजकुमार का लक्ष्य होगा कि वेदों के विरुद्ध एक नये धर्म का उपदेश दिया जाये।

Our present caste conflicts lend me to believe that there will emerge a strong minded prince who will preach a new religion against the Vedas.

विरुद्धं वेदधर्मस्य तत्वं स प्रचरेन्नृपः।
कुलधर्मसदाचारविरोधि तन्न संशयः।। 25।।

वस्तुतः यह राजकुमार एक ऐसे सिद्धांत का उपदेश देगा जो कि हमारे वैदिक धर्म का शत्रु होगा और हमारे रीति–रिवाजों और जीवन–शैली के विरुद्ध होगा।

Verily, this prince will preach a doctrine, hostile to our Vedic religion and opposed to our customs and manner of living.

जीविते नृपतौ तस्मिन् सिद्धिः प्रायेण नो भवेत्।
मृते तु भूपतौ तस्मिन् शक्तिमान् भूमिपोऽपरः।।26।।
तद्धर्मे दीक्षितो भूत्वा नाशयिष्यति च ध्रुवम्।
राष्ट्रधर्मनीतिसौधमस्माभिः रचितं हि यत्।।27।।

वह राजकुमार, हो सकता है कि अपने जीवन में अधिक सफलता प्राप्त न करे परन्तु उसके मौत के बाद कोई शक्तिशाली राजा उसके मत में परिवर्तित हो सकता है और हमारे सम्पूर्ण राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक स्वरूप को नष्ट कर सकता है।

That Prince may not have much success in his life, but after his death, some powerful King may be converted to his faith and may destroy our entire political, social and religious fabric.

नवो धर्मोऽयमस्माकं विशेदन्तः शरीरकम्।
भवेदात्यिन्तिकं चैतन्न शक्यमपनोदने।।28।।

नया धर्म हमारे रक्त की गहराई तक चला जायेगा और इसे नष्ट करना बहुत कठिन हो जायेगा।

The new religion will go deep down into our blood and it will become too difficult to destroy it.

पंडिताः ऋत्विजश्चैव वैश्याश्च क्षत्रियास्तथा।
भवेयुर्दीक्षिताः तस्मिन् धर्मे क्लैब्यमये खलु।।29।।

हमारे सभी विद्वानों, पूजारियों, योद्धाओं और व्यापारियों को नये धर्म में परिवर्तित किया जायेगा।

All our scholars, priests, warriors and traders will be converted to the new faith.

यदास्मिंस्तु भवेद्धर्मे सर्वेषामेव सम्मतिः।
वैदिकधर्मसंस्थानं न सुखं स्थातुमर्हति।।30।।

यदि एक बार बड़े स्तर पर धर्म परिवर्तित होता है तो वेदों के धर्म को वापस लाना बहुत कठिन होगा।

Once the wholesale conversion takes place, it will be too

difficult to revive the religion of the Vedas.

पाखन्डिनां मतं नव्यं वेदनिष्ठितपंडिता।
परोक्षं स्वीकरिष्यन्ति ततोऽनर्थं महद्भवेत्।।31।।

सबसे बड़ी समस्या यह होगी कि वे विद्वान् जो कि वैदिक धर्म के प्रति निष्ठावान थे अनजाने में वे नये धर्म का समर्थन करेंगे।

The biggest difficulty will be that even the scholars loyal to the Vedic religion, will be supporting unknowingly the new heresy.

प्रत्यक्षं वद ग्राह्याश्चप्यन्तः पाखन्डिसंमताः।
इन्दुनाम्ना चरिष्यन्ति वेदबाह्यास्तु भूतले।।32।।

संसार ऐसे लोगो से भर जाएगा जो कि बाहर से तो वैदिक धर्म का दिखावा करेंगे किन्तु अन्दर से वैदिक धर्म की शिक्षाओं का विरोध करेंगे।

The world will be infested with the persons who will profess outwardly to Vedic religion, but will be in reality opposed to the Vedic teachings.

दूरतो जनचित्ताद्धि धर्मबोधो भविष्यति।
निन्दारताः भवेयुस्ते गोष्ठीभावेषु निश्चितम्।।33।।

धर्म लोगों के मस्तिष्कों से मिटा दिया जाएगा और सामाजिक प्रेम का तिरस्कार किया जाएगा।

Religion will be effected from the minds of the people and Communalism will be condemned.

गोष्ठीभावो यदा नष्टो विध्वंसिन्यश्च शक्तयः।
जातिसंप्रदायाश्चापि भाषांचालीकता तथा।
प्रबलास्ते भविष्यन्ति सत्यमेव न संशयः।।34।।

एक बार सामाजिक प्रेम के समाप्त होने पर जाति, मत, भाषा और क्षेत्रवाद जैसी अलगाववादी शक्तियां जोर पकड़ लेंगी।

Once communalism will be destroyed the disruptive forces of caste creed, language and provincialism will gain ground.

आत्मानं कथयेदिन्दु न कोऽपि धरणीतले।
जातिधर्मभाषादेशाभिधाने गौरवं महत्।।35।।

कोई भी अपने आप को आर्य (हिन्दु) कहना पसंद नहीं करेगा, अपितु किसी एक खास जाति, धर्म और क्षेत्र के साथ जुड़ने में संकोच नहीं करेगा।

No body will like to call himself a Hindu, but would not mind belonging to a particular caste, creed and province.

प्रादेशिकभाषायां च ध्यासक्तिर्महती भवेत्।
प्रदेशबुद्धिगौरवं भवेत्तेषां न संशयः।। 36।।

लोग अपना सम्बन्ध क्षेत्रीय भाषा के साथ व्यक्त करने में प्रसन्नता का अनुभव करेंगे और अपने क्षेत्र पर गर्व करेंगे।

People will take pleasure in expressing their affinity with their provincial language and will take pride in their provinces.

पृथक् पृथक् प्रदेशेषु दृष्टेन्दूनां च दुर्दशाम्।
प्रसन्नास्ते भविष्यन्ति संकीर्णत्वमुपागताः।। 37।।

वे दूसरे क्षेत्रों के आर्यों (हिन्दुओं) के दुःखों और दुर्भाग्यों पर हँसेंगे।

They will laugh at the miseries and misfortunes of the Hindus of other provinces.

भविष्यन्ति न तु द्वैधं त्वामन्त्रणे विदेशिनः।
स्वजातेः पीडनार्थं तु प्रदेशान्तरकं स्थितेः।। 38।।

वे दूसरे क्षेत्रों के आर्यों (हिन्दुओं) का विनाश करने के लिए विदेशियों को आंमत्रित करने और उनके साथ जुड़ने में संकोच नहीं करेंगे।

They will not mind going to the length of inviting foreigners of allying with the outsiders to crush the Hindus of the other provinces.

अस्माकं पूतसाम्राज्यं ध्वंसं यास्यत्यसंशयम्।
पाखण्डिमतप्राबल्या गोष्ठीभावविवर्जनात्।। 39।।

वे धर्म के प्रभाव में और उसके परिणामस्वरूप सामाजिक भावना खोने से हमारा पवित्र साम्राज्य नष्ट हो जाएगा।

Under the spell of the new hearsay and as a result of loosening the communal sentiment, our holy Empire will be destroyed.

भूपाः शूद्राश्च सामन्ताः योधयन्तः परस्परम्।
पृथिव्यां वै चरिष्यन्ति राज्ये नष्टे च विप्लुते।। 40।।

छोटे–छोट मुखिया जन्म लेंगे और वे आपस में लड़ते रहेंगे।

Petty chiefs and chieftains will rise up and they will be fighting among themselves.

एकीकरणहेतोर्हि न किंचित् बन्धनं भवेत्।
शत्रुवद्व्यवहारं च विधास्यन्ति परस्परम्।। 41।।

इनको जोड़ने की कोई कड़ी नहीं होगी और वे एक–दूसरे के विरुद्ध इस

प्रकार होंगे जैसे कि वे एक–दूसरे के शत्रु हों।

There will be no tie to unite them, they will be pitched against each other as if they are enemies.

विभिन्नाः राजवंशास्तु विभिन्नाः जातयो यथा।
पक्षभुक्ता जनास्तेषां भविष्यन्ति पृथक् पृथक्।। 42।।

प्रत्येक राजवंश एक अलग जाति बन जायेगा और प्रत्येक राजवंश के अलग–अलग पक्षधर लोग होंगे।

Each dynasty will become a separate caste and each dynasty will have its own caste partisans.

बन्धनमेकमेव हि शिथिलं खल्ववास्तवम्।
ऐकदेशे निवासो हि न त्वेतद्वन्धनं दृढम्।। 43।।

केवल एक ही शिथिल और अव्यावहारिक सम्बन्ध होगा और वह यह होगा कि वे एक ही देश में रहते हैं।

There will be only one loose and abstract tie and it will be that they live in the same country.

बन्धनं भूमिनिष्ठं यत् कार्यकृन्न कदाचन।
स्वार्थं प्रीतिकमेवैतत् ततश्च गृहकेन्द्रकाः।। 44।।

देश वास्तव में कोई सम्बन्ध नहीं होता। यह स्वार्थता का प्रतीक है। देश की पूजा करने वाले आमतौर पर अपने घरों को ही अपने जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य मानते हैं।

Land is actually no tie. It is a symbol of selfishness. worshippers of land generally end in looking upon their own house as the highest goal of their life.

जायन्ते चेन्दवः प्रायो द्वेषधियः परस्परम्।
संदिग्धाः स्युः स्वजातीये तथा चेर्ष्यापरायणाः।। 45।।

परिणामस्वरूप हर आर्य (हिन्दु) एक–दूसरे से ईर्ष्यालु होगा। वे अपने रक्तसम्बन्धियों को भी ईर्ष्या और सन्देह से देखेंगे।

Consequently every Hindu will be jealous of each other. They will look down with suspicion and jealousy even their own kinsman.

न च द्वैधं भवेत्तेषां विजातीयेभ्य एव हि।
तत्रात्मानस्तु नम्रत्वं स्वधर्मे भिन्नता तथा।। 46।।

उनमें दूसरे धर्मों का विरोध करने का साहस नही होगा। वे दूसरे धर्म के आगे आत्मसमर्पण कर देंगे, परन्तु अपने धर्म के लोगों का तिरस्कार करेंगे।

They will not have the courage to oppose the votaries of other religions. They will surrender to the later, but will condemn their co-religionists.

स्वधर्माणां विनाशायाश्रयेयुर्भिन्नधर्मकान्।
ऐतिह्ये विकृतां व्याख्यां दास्यन्ति मूढबुद्धयः।।47।।

वे अपने धर्म के लोगों का विनाश करने के लिए दूसरे धर्म के समर्थकों का समर्थन प्राप्त करेंगे। वे मूर्खतापूर्ण तरीके से अपनी जाति के सारे इतिहास की गलत व्याख्या करेंगे।

They will seek the support of the votaries of other religions to crush their co-religionist. They will foolishly misinterpret the entire history of their race.

इतिहासं विधास्यन्ति चारव्यायिकां पुराणजाम्।।48।।

इतिहास एक प्रकार की कल्पना बना दी जाएगी।

History will be made a sort of fiction.

पारिवारिकबुद्धिश्च तेषु हि प्रबलो भवेत्।।49।।

परिवार उनके निर्णय का सबसे बड़ा मापदण्ड होगा।

Family will be the highest standard of their judgment.

साम्राज्यस्य प्रतिष्ठाता न रामो विश्वजित्त्वहम्।
सुशीलः केवलं पुत्रो भ्राता स्वामी महांस्तथा।।50।।

राम जो कि संसार का विजेता है, पवित्र साम्राज्य का निर्माता है, को एक अच्छे पुत्र, एक अच्छे भाई और एक अच्छे पति के रूप में देखा जाएगा!

Instead of Rama, the conqueror of the world , the builder of the Holy Empire, he will be made to look as a good son, a good brother and a good husband.

इत्थं ममेतिवृत्तं तैर्मन्येत पारिवारिकम्।
मौढ्यस्य चरमा काष्ठा भवेदीदृग्विचारणे।।51।।

इस प्रकार मेरे जीवन की कहानी की व्याख्या केवल एक अच्छे पारिवारिक व्यक्ति की कहानी के रूप में की जायेगी, यह कितनी मुर्खतापूर्ण बात है?

In this manner the story of my life will be interpreted as the story of the good family man. What a sheer non- sense!

एवं चासुरप्रह्लादविषयेऽपि भविष्यति।।52।।

ऐसी ही कल्पनाएँ असुरपुत्र प्रह्लाद की कहानी में भी जोड़ दी जाएँगी।

Such similar fictions shall be added to the story of Prahlad, the son of Rakshasa.

असुरश्च पिता तस्य सम्भूत् प्रबलो नृपः।
उल्लंध्य पितुरिच्छा सः वेदधर्मं समाश्रयत्।।53।।

उसके असुर पिता जो कि एक बड़े राजा थे, की इच्छाओं के विरुद्ध प्रह्लाद वेदों के धर्म का एक समर्थक बन गया।

Against the wishes of his rakshasa father a powerful monarch, Prahlad, became a votary of the religion of the Vedas.

भातखनिति विदष्यन्ति स्वार्थभावं समाश्रिताः।
दृष्टिर्वस्तुत एवैषां निबद्धः स्वजनेषु हि।।54।।

अपनी स्वार्थता को छिपाने के लिए, आर्य (हिन्दु) मनुष्यत्व की बात करेंगे और उसे अपना भाई मानेंगे जबकि वास्तव में वे केवल अपने परिवार के लिए जी रहे होंगे।

In order to hide their selfishness, the Hindu will talk humanity as their brethren, whereas actually they will be living for their own family.

बाह्यतो मानवाकाराश्चान्तरे नीचवृत्तयः।
न द्विधा वित्तलुंटने भविष्यन्ति स्वधर्माणाम्।।55।।

वे इतने हतोत्साहित होंगे कि गिरे हुए मनुष्यों की तरह काम करेंगे। वे किसी आर्य (हिन्दु) को गिरे हुए और घृणित तरीके से लूटने में भी संकोच नहीं करेंगे।

They will be so demoralized as to act as human leeches, they will not mind robbing any Hindu in a very mean and sneakish way.

प्रभावो नवधर्मस्य चरित्रहानिकारकः।
दया सहानुभूतिर्वा न तिष्ठेदिन्दुवंशजे।।56।।

नया धर्म हम (हिन्दुओं) पर इतना हतोत्साहित करने वाला प्रभाव डालेगा कि उनमें सहानुभूति और दया की भावना नहीं बचेगी।

The new heresy will produce such a demoralizing influence on the Hindus that they will have no sense of sympathy and feeling of kindness left in them.

परस्परं घृणा घोरा चैतादृशी भविष्यति।
जातिः जात्यन्तरं काचिदस्पृश्या गणयिष्यति।।57।।

आर्य (हिन्दु) एक–दूसरे से घृणा करेंगे और कुछ वर्ग इस सीमा तक चले जाएंगे कि दूसरे वर्गों को अछूत घोषित कर देंगे।

The Hindus will hate each other and some sections will go to the extent of declaring other sections as untouchables.

वर्जित इंदुशब्दः स्याद् ग्रन्थेषु लेखनेषु च।
सुधी विद्वान् समादधादासीदिन्दुर्न वा पुनः।। 58।।

आर्य (हिन्दु) शब्द उनकी सभी पुस्तकों और लेखों में से मिटा दिया जाएगा और अनुसंधानकर्ताओं को यह जानने का कार्य रह जाएगा कि आर्य (हिन्दु) कब जीए और मरे।

The word "Hindu" shall be omitted from all their books and writings and it will be left for research scholars to find out when Hindus lived and died.

उनसंख्या भवेयुश्च भ्रष्टराज्यास्तथापि ते।
इन्दवः स्युश्चिरजीवास्तेषां नाशो कदापि न।। 59।।

वे अपने प्रदेश और संख्या खो देंगे परन्तु फिर भी यह कहने का साहस करेंगे कि आर्य (हिन्दु) हमेशा जीवित रहेंगे।

They will loose their territories and numbers and will still have the audacity to say that the Hindus shall always live.

असाधुः स्वार्थप्रवणा क्रूरा शठा च निर्दया।
भीरुतमा जातिरिति ख्याता स्याद्धणीतले।। 60।।

वह जाति बेईमान, स्वार्थी, चतुर, निर्दयी और ड़रपोक जाति कहलायेगी।

They will become the most dishonest, selfish, cunning, cruel and cowardly race.

न चरित्रं न वै विद्या न दाक्ष्यं राष्ट्रचालने।
एतेषां नु भविष्यन्ति परमाधोगतिर्भ्वेत्।। 61।।

उनका कोई चरित्र नहीं होगा, उनकी कोई प्रशासकीय योग्यता नहीं होगी और न ही कोई बुद्धि होगी। अन्ततः वे मारे जाएंगे।

They will have no character, they will have no administrative capacity and will have no intellect . they will ultimately die.

सुमन्त उवाच –

भयालां शोचनीयां च मन्यामहे कथां तव।
किमस्माकं विलुप्तिः स्यादित्थं धरातले नृप।। 62।।

सुमन्त ने कहा–

हे महामहिम! यह बहुत दुःख देने वाला और उदास करने वाला होगा। क्या हमारी धरती पर मृत्यु इस प्रकार होगी?

The Sumanta said:

Your Majesty, it is too tragic and sad. Are we going to die out from the earth in this manner ?

भूपस्त्वमसि चेन्दूनां त्रिकालज्ञश्च निश्चतमः।
ध्वंसात्कथं च नो देव ! जातेः रक्षा भविष्यति।। 63।।

आप भूतकाल, वर्तमान और भविष्य को जानते हैं। क्या आप इस बात को प्रकट करेंगे कि हमारी जाति को विनाश से बचाने का तरीका क्या है?

You know the past, present and future. Your sacred Majesty may reveal to us if there is a method to save our race from disaster.

श्रीराम उवाच–

जातिरक्षार्थमस्माकं पन्था एकः स्मृतः पुनः।
गोष्ठीभावं दृढं तस्यां जनयेदतियत्नतः।। 64।।

श्रीराम ने कहा--

हमारी जाति को बचाने का केवल एक ही तरीका है और वह है– "हमें अपने लोगों में सामाजिक प्रेम की मजबूत भावना भरनी होगी।"

Sri Rama spoke:

There is only one way of saving our race. We must inculcate the strong semtiment of communalism in our people.

न ब्रह्मक्षत्रबिटशूद्रा इन्दवः केवलाश्च ते।
इति बोधप्रेरिता स्युः न चास्येन कदाचन।
न जातौ संप्रदाये वानुगत्यं न प्रदेशके।। 65।।

अपनी जाति धर्म और प्रदेशों को अलग करने की प्रवृत्ति मिटाकर केवल एक भावना होनी चाहिए कि हम सब आर्य (हिन्दु) हैं न कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

Root out your allegiance to separate castes, creeds and provinces. There should be only one sentiment and it is that all of you are Hindus and not Brahmanas, Kashatriyas,Vaishyas and Shudras.

जाति–भेदो न ग्राह्यः स्यान्न तथा नियमभिन्नता।
विवाहे भोजने भेदः स्वीकृतो न कदापि हि।
एकजातिवदातिष्ठेन्मंत्रः स्यात् मैत्रीयोजने।। 66।।

जाति प्रथा की कोई पहचान न होने दो और न ही विवाह व भोजन के

अलग–अलग रीति–रिवाजों को मानो। एकता में जीवन व्यतीत करो। समानता और भाईचारा आपके मुख्य शब्द होने चाहिए।

Give no recognition to caste system and to the separate rules and regulations for marriage and diet. Live as one people. Equality and fraternity must be your watchwords.

न शोकः स्यान्महामात्य ! भविष्यकथनान् मम।
वेदधर्मे स्थिरबुद्धिरिन्दूनां वै भवेद्यदि।। 67।।

हे महान मंत्री! यदि आर्य (हिन्दु) वैदिक धर्म को मानते हैं तो जो कुछ भी मैंने पहले से ही बता दिया है, उससे विचलित होने की आवश्यकता नहीं है।

O great Minister ! there is nothing to feel perturbed at what I have foretold, if the Hindus will adhere to the religion of the Vedas.

यथोक्तः मम संवादे तथैवाभ्युदयो भवेत्।
गर्ते यद्यपि घोरे ते भवेयुः पतिताः भृशम्।। 68।।

यदि आर्य (हिन्दु) वैदिक धर्म का पालन करते हैं। जैसा कि मेरे द्वारा इन संवादो में वर्णित किया गया है तो वे चाहे कितनी ही गम्भीर गहराईयों तक गिर चुके हों फिर से उठ जाएंगे।

If the Hindus will follow the Vedic religion, as enunciated by me in these discourse, they shall rise up again to whatever abysmal depths they might have fallen.

संवादो यत्र चास्माकं पठितो स्यात् श्रुतोऽपि वा।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्भिगवदाशिषः सदा।। 69।।

जहाँ भी इन संवादो को पढ़ा या सुना जाएगा वहाँ विजय, खुशहाली, और ईश्वर की कृपा होगी।

Wherever these discourses are read or listened, there shall be prosperity, wisdom and God's blessings.

इस प्रकार वाल्मीकिरचित श्रीरामसंवाद का उन्नीसवां अध्याय 'भविष्यवाणी' समाप्त हुआ।

Thus ends the nineteenth chapter of Shri Rama's. Discourse written by Valmiki.

।। इत्योम् शम् ।।

*****